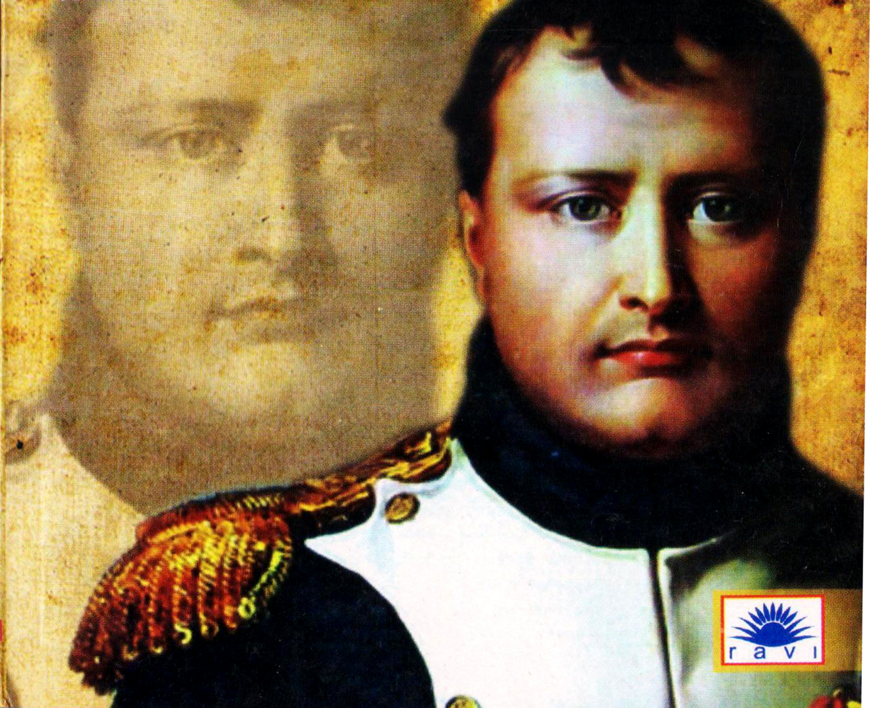
विश्व इतिहास का एक महान योद्धा

नेपोलियन बोनापार्ट

अपनी विलक्षण प्रतिभा के लिए जगप्रसिद्ध नेपोलियन बोनापार्ट वह पहली शख्सियत थी, जिसने यहूदीवाद को एक राजनीतिक ताकत के रूप में पहचाना और सत्ता में उसे स्थापित करने का प्रयास भी किया।



ravi

नेपोलियन बोनापार्ट



एक साधारण-गरीब परिवार में जन्म लेने वाले नेपोलियन ने, अपने जीवन के शब्दकोश से 'असम्भव' शब्द हटा डाला था। वह फ्रांस का सम्राट बना और अपनी सैनिक क्षमता के बल पर पूरे यूरोप को रौंदकर एकछत्र हुकूमत कायम की।

प्रकाशक

ravi

रवि पॉकेट बुक्स

33, हरी नगर, मेरठ शहर—250 002

- पुस्तक　　नेपोलियन बोनापार्ट
- प्रस्तुति　　मुहम्मद कासिम
- प्रकाशक　　रवि पॉकेट बुक्स
  33, हरी नगर, मेरठ–250002 (उ०प्र०)
  फोन : (0121) 2531011; (0121) 2521067
- लेजर टाइप सैटिंग : हिना कम्प्यूटर्स, मेरठ।
- मुद्रक : बाला जी ऑफसैट प्रिन्टर्स, मेरठ।
- मूल्य : ₹ 20 (बीस रुपये केवल)

दो शब्द

नेपोलियन बोनापार्ट इतिहास प्रसिद्ध एक ऐसा नाम है, जिसे अट्ठारहवीं शताब्दी का महानायक कहा जाता है। उसमें एक महान् सैनिक, सेनापति और राजा के गुण एक साथ विद्यमान थे। स्वभाव से वह एकदम विनम्र और हृदय से पूरी तरह भावुक और प्रेमी था। वह 30 वर्षों से अधिक समय तक फ्रांस और यूरोप की सत्ता और राजनीति में ध्रुव तारे की तरह चमकता रहा। फ्रांस की सत्ता पर उसका उदय हुआ तो यूरोप में कोई दूसरी हस्ती न रह गयी जिसका नाम उससे ऊपर उठ पाता। आस्ट्रिया, सार्डिनिया, टोलेन्टण्ड मिस्र पूर्वी एशिया, ब्रिटिश उपनिवेशों, माल्टा, पिरामिड, सिकन्दरिया, नील नदी तक, बस उसके नाम का ध्वज फहराता रहा। एक के बाद एक विजय उसके हाथ आती रही और वह इतिहास के पृष्ठों में महान् कहलाने की राह पर बढ़ता रहा।

नेपोलियन के चरित्र और व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि विजय अभियानों पर बढ़ते समय वह सैनिकों का मुंह न देखता था बल्कि खुद आगे बढ़कर मार्ग की विपत्ति को झेलता था, विजय मार्ग बनाता था, पीछे से सेना आकर उसके द्वारा विजित मार्ग पर आकर अधिकार जमाती थी।

तानाशाहों का इतिहास बताता है कि सत्ता पर रहते हुए तानाशाह अपने देश या राष्ट्र के लिए कितना ही पूज्य क्यों न हो पर सत्ता से हटते ही या हार का स्वाद चखते ही उसकी छवि इतनी धूमिल हो जाती थी कि कल तक जिस राष्ट्र के लोग उसकी जय-जयकार करते थकते न थे, वही उसका नाम घृणा के साथ लेने लगते हैं। उस पर थूकते हैं ईंट-पत्थरों से मारते हैं, उसे गोलियों से छलनी करने को तैयार खड़े रहते हैं। यद्यपि हिटलर के मामले में ऐसा न हुआ—उस पर थूका न गया, ईंट-पत्थर न बरसाए गये, गोलियों से छलनी न किया गया—क्योंकि रूसी सेना से हार का समाचार पाने के बाद उसने खुद को एक सैनिक बंकर में कैद कर लिया था। पर रूसी सेना का बर्लिन में प्रवेश का समाचार पाने के बाद उसने आत्म-हत्या का रास्ता चुना। बंकर में आग लगाकर उसने अपनी प्रेमिका-पत्नी सहित अपने शरीर को भस्म कर डाला। अंतिम रूप से जब लोगों को विश्वास हो गया कि हिटलर नहीं रहा तो जर्मनी की जो जनता उसे नायक कहती थी, वह उसे खलनायक कहने लगी।

हिटलर के उदय के बाद कुछ वर्षों तक नेपोलियन का नाम हाशिये पर चला गया था; पर बिल्कुल ओझल नहीं हुआ था, लेकिन हिटलर के आत्महत्या के बाद नेपोलियन के नाम और उसके व्यक्तित्व का जादू दुनिया के सिर पर एक बार फिर छा गया। दुनिया में एकमात्र नेपोलियन ही एक ऐसा ऐतिहासिक

नायक है जिसे युद्ध में हारने के बाद, दो बार विजेताओं द्वारा फ्रांस से सम्मान निर्वासित किया गया। वह दोनों बार लौटकर फ्रांस की धरती पर वापस आ गया और दोनों ही बार उसके फ्रांस आगमन का समाचार पाकर सत्ता सम्भालने वाले, सिंहासन छोड़कर भाग खड़े हुए।

वाटरलू का युद्ध नेपोलियन के लिए निर्णायक युद्ध साबित हुआ था। इसमें भी उसे हार का सामना करना पड़ा था। वाटरलू के युद्ध में हार के बाद भी उसका सिर धड़ से अलग ना किया गया; बल्कि वार्षिक पेंशन, सुरक्षा हेतु आवश्यक सैनिक और नौकर-चाकरों सहित उसे निर्वासित जीवन जीने हेतु सैंट हेलेना द्वीप भेजा गया। इस बार नेपोलियन को फ्रांस वापस लौटने का अवसर न मिल सका क्योंकि इस बार मित्र-राष्ट्र की सेना का नेतृत्व करने वाले काफी सजगता बरत रहे थे। सन् 1815 ई० में सैंट हेलेना द्वीप, निर्वासित जीवन जीने के लिए भेजे जाने वाले नेपोलियन का निधन सन् 1821 ई० में हो गया। उसकी मृत्यु को लेकर कहा गया कि उसे विष देकर मारा गया। सम्भवतः इसलिए कि मित्र-राष्ट्र उसकी चौकसी करते-करते थक गये थे। उन्हें दिन-रात भय सताता रहता था कि नेपोलियन बोनापार्ट न जाने कब सैण्ट हेलेना से निकलकर फ्रांस पहुंच जाए और पलक झपकते उनकी सत्ता पलट जाए।

नेपोलियन के प्रति उसके देश की जनता का अगाध प्रेम ही इसका कारण था, कि विजेता नेपोलियन का न कत्ल कर पाते थे, ना ही गोली या तोप से उड़ाने का फरमान जारी कर पाते थे; ऐसा करने पर इस बात का अंदेशा था कि फ्रांस के वीर नायक के मरने का समाचार पाकर देश का बच्चा-बच्चा सड़कों पर उतरकर युद्ध में शामिल हो जाएगा।

ऐसे प्रसिद्धि प्राप्त, नेपोलियन का सम्पूर्ण जीवन परिचय इस पुस्तक में समेटा गया है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पुस्तक नेपोलियन की प्रसिद्धि के कारणों, उसके सैनिक अभियानों, विजेता रूप, शासक और तानाशाही छवि पर पूरा प्रकाश डालने में सक्षम होगी।

शुभकामनाओं सहित!

प्रकाशक—



नेपोलियन बोनापार्ट की विजयों और फ्रांस के हीरो बनने का सम्पूर्ण विवरण।

अनुक्रमणिका



नेपोलियन बोनापार्ट

विश्व इतिहास में अपना एक अलग ही स्थान बनाने वाला नेपोलियन बोनापार्ट, शूरवीर, साहसी एवं पराक्रमी फ्रांस का तानाशाह था। वह दृढ़ संकल्प का स्वामी था। एक बार जो बात ठान लेता था उसके परिणामों पर विचार किये बिना ही उसे पूरा करके दम लेता था।

आश्चर्य की बात तो यह है कि नेपोलियन का सम्बन्ध या जन्म किसी राजवंश या राज्यअधिकारी से नहीं हुआ था; फिर भी उसमें एक प्रबल शासक की महत्वाकांक्षा कूट-कूट कर भरी हुई थी।

उसमें एक कुशल राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ तथा योग्य सेनानायक होने के सभी गुण विद्यमान थे।...और इन सब में महत्वपूर्ण थी उसकी महत्वाकांक्षा। जिसे पूरा करने के लिए उसने फ्रांस के शासनाधिकारियों को भी धता बता दिया था।

उसका लक्ष्य था...सम्पूर्ण यूरोप पर एकीकृत राज्य, उसके बाद विश्व सम्राट बनने का संकल्प पूरा करना। अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये उसने तत्कालीन यूरोपीय महाशक्ति ब्रिटेन से टकरा जाने में भी संकोच नहीं किया।

अपनी महत्वकांक्षा को पूरी करने के लिये उसने न केवल अन्य देशों पर विजय प्राप्त की बल्कि फ्रांस का तख्ता पलटकर खुद वहां का तानाशाह बन बैठा। उसका तानाशाह बनना ही यूरोप को खल गया और उसकी तमाम शक्तियाँ एक जुट होकर उस पर टूट पड़ी।

जीवन परिचय—विश्व के प्रसिद्ध तानाशाह एवं महान् योद्धा नेपोलियन बोनापार्ट का जन्म अट्ठारहवी शताब्दी के मध्य में, 15 अगस्त सन् 1769 ई० को हुआ था। उसकी जन्मस्थली का नाम कार्सिका था।

कार्सिका एक ऐसी जगह है, जहाँ परिवार के झगड़े कई सालों तक खत्म नहीं होते, जहाँ बदला लेने के लिये लोग खून बहाने तक से भी पीछे नहीं हटते।

इस महान् योद्धा की मां का नाम लितीजिया रेमोलिनी और पिता का नाम कार्लो बोनापार्ट था।

लितीजिया का वह पहला पुत्र था। मात्र पन्द्रह वर्ष की आयु में ही वह मां बन गयी थी। वहाँ का हर पुरुष अपने वंश को बने रहने के लिये एक वारिस का होना जरूरी मानता था।

नेपोलियन बोनापार्ट के जन्म से पूर्व उसकी जन्मस्थली कार्सिका, जिनेवा

नामक देश का हिस्सा थी। किन्तु उसके जन्म के कुछ दिन पूर्व ही फ्रांस ने उसे अपने अधीन कर लिया था। इस प्रकार नेपोलियन बोनापार्ट का जन्म फ्रांस स्थित कार्सिका में हुआ था और वह फ्रांस का नागरिक कहलाया।

उन दिनों फ्रांस में युद्ध की तैयारियाँ निरन्तर गति पकड़ती जा रही थीं। हर आदमी शत्रु को परास्त करने के लिये तैयार था। द्वीप की औरतें और बच्चे भी इस बात के लिये तैयार थे कि उन्हें शत्रुओं का दमन करने के लिये हथियार उठाने होंगे। वे भी युद्ध के लिये पूरी तरह से तैयार थे। वे पूरे जोश के साथ आगे बढ़ने और युद्ध के लिये लालायित थे। वे अपनी मातृभूमि के लिये, युद्ध करने के लिये ऊँची पहाड़ी की चोटी पर जाने को तैयार थे।


नेपोलियन लितिजिया की मा

नेपोलियन बोनापार्ट की माँ लितिजिया रेमोलिनी प्राचीन जाति के पुरुषों से कहीं अधिक स्फूर्ति तथा साहस वाली स्त्री थी। वह अत्यधिक सुन्दर एवं धर्मपरायण थी। युद्धभूमि में जब भयंकर युद्ध चल रहा था और चारों ओर फैले हुए घने जंगलों तथा पहाड़ों की कठोर नुकीली चोटियों पर जब सभी स्त्री-पुरुष वीरता एवं बहादुरी से युद्ध में शामिल थे, तब साहसी लितिजिया भी पूरे आत्म-विश्वास के साथ अपने एक साल के पुत्र के साथ युद्ध में हथियारों सहित जा शामिल हुई थी।

लितिजिया के मन में अपनी मातृभूमि के प्रति देशप्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। जिन दिनों फ्रांस ने कार्सिका को हथियाने का षड्यन्त्र रचा और उसे जिनेवा से काटकर अपनी राज्य सीमा में मिलाना चाहा, उन दिनों लितीजिया रेमोलिनी ने भी मातृभूमि के लिये समर्पित अपने पति का अनुसरण किया और अपने उच्च कुल का परिचय दिया।


नेपोलियन का पिता : कार्लो बोनापार्ट

लेकिन फिर भी मई के महीने में कार्सिका की हार हुई और लितिजिया स्वयं को बचाती हुई सुरक्षित समुन्द्र के किनारे पहुँच गयी। वहाँ उसके पति कार्लो बोनापार्ट को पाउली की पराजय के बाद इटली के लिये रवाना होना पड़ा।

लितिजिया का पति नेपोलियन का पिता कार्लो बोनापार्ट संकल्पशील पुरुष था। पाउली की सेना का प्रशासक भी था। उसने सेना अधिकारियों की सहायता से दुश्मन को पराजित किया। उसे देश की समृद्धि तथा स्वतन्त्रता की अत्यधिक चिंता थी। उस विजेता और पाउली बहादुर सेनानायक के सामने दुश्मन को आत्मसमर्पण करना पड़ा। इस प्रकार अपने साहस तथा वीरता की बदौलत टलवा द्वीप के दुश्मनों पर विजय पाने में वह सफल हो गया था।

कार्लो जब पीसा में अध्ययन करता था तो उसके मित्र उसे काउन्ट बोनापार्ट के नाम से पुकारते थे। वह काफी शालीन व्यक्तित्व का स्वामी था। किन्तु अपने निजी कारणों और युद्ध की विभीषिका के कारण वह अपनी शिक्षा को पूर्ण नहीं कर सका। उसे अपने देश कार्सिका की समृद्धि की योजनाओं को बनाने का अधिक ध्यान था। आगे अनेक वर्षों तक वह अपनी मातृभूमि से सम्बन्धित कानूनी उलझनों को सुलझाने में ही ज्यादा ध्यान देता रहा।

कार्लो जब अपनी दूसरी संतान का पिता बना तो उसने अध्ययन करना बंद कर दिया। उसके बाद भी लितीजिया के कई बच्चे हुए। उसके बच्चों की संख्या आठ थी जिनमें से पाँच पुत्र तथा तीन पुत्रियाँ थीं।


नेपोलियन : अपनी माँ और भाई बहनों के साथ बचपन में

उसके आठ बच्चों में से एक पुत्री तथा दो पुत्रों को नोबल स्कूल में मुफ्त शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। इसके अलावा कार्लो अपनी व्यवहार कुशलता की वजह से मार्शल को खुश करके उसकी सिफारिश पाने में सफल हो गया, जिसकी वजह से उसे इटली के कुलीन वर्ग को दर्शाने वाली उपाधि 'बोनापार्ट' से सम्मानित किया गया।

मानव जीवन के प्रति कार्लो का विचार था—"विपदा मनुष्य को दुनिया के वास्तविक रूप का दर्शन कराती है तथा वह विजेता के ढंग से विचार करता है।"

नेपोलियन के पूर्वज इटली के निवासी थे। वे समुद्र पार करके कार्सिका नामक द्वीप पर आकर बस गये थे, जो कि जिनेवा देश का हिस्सा था।

कार्लो को अपने द्वीप से बड़ा प्यार था। यही कारण था कि जब फ्रांस की इस द्वीप पर कुदृष्टि पड़ी तो वह क्रुद्ध हो उठा। उसने फ्रांसीसियों को अपने देश से भगाने के लिये कमर कस ली।

यह उन दिनों की बात है जब लितीजिया गर्भ से थी और युद्ध की विभीषिका जोर पकड़ती जा रही थी, तब लितीजिया ने स्त्रियों का नेतृत्व स्वयं

किया था। वह युद्धभूमि में जाने के लिये तैयार होने लगी। कार्लो ने अपनी पत्नी की गर्भावस्था को देखते हुए उसे युद्ध में जाने से रोकना चाहा तो लितीजिया ने पति की बात मानने से इंकार कर दिया।

लितीजिया ने अपने पति से कहा—"युद्ध के समाचारों की जानकारी लेने के लिये मैं इस पहाड़ी के शिखर से युद्धभूमि की ओर अवश्य ज़ाऊँगी...गोलियों की आवाज सुनूंगी और यह सब मैं अपनी मातृभूमि के लिये करूंगी। अपनी मातृभूमि की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का परमकर्तव्य है और इस देश का नागरिक होने के कारण मेरा भी कर्तव्य बनता है कि मैं अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये इस युद्ध में भाग लूँ। मेरे इस कार्य का प्रभाव मेरे गर्भ में पल रहे बच्चे पर अवश्य ही पड़ेगा। वह भी हमारी ही तरह महान् योद्धा बने ऐसी मेरी हार्दिक इच्छा है...। हमारा बलिदान व्यर्थ नहीं जायेगा। हमारी मातृभूमि वर्षों बाद हमारी वीरगाथा आने वाली पीढ़ी को अवश्य ही सुनायेगी।"

इस प्रकार लितीजिया ने अपने पति और कार्सिका वासियों के साथ, खच्चर पर सवार होकर युद्धभूमि की ओर प्रस्थान किया।

अगस्त मास की पन्द्रह तारीख को कार्लो की इस बहादुर पत्नी ने एक प्रचण्ड तेजस्वी फ्रांस के भावी शासक शिशु को जन्म दिया जिसका नाम नेपोलियन रखा गया।

नेपोलियन का बचपन

नेपालियन बचपन से ही एकान्तप्रिय बालक था। वह ब्राउनी स्कूल में पढ़ता था। उसके चेहरे पर हमेशा एक तेज दमकता रहता था। उस तेज को देखकर लगता था जैसे उसके अन्दर कोई ज्वाला धधक रही हो। कद में छोटे इस बालक को अपनी स्वतन्त्रता में किसी प्रकार का कोई हस्तक्षेप पसंद नहीं था। वह एक क्रोधी स्वभाव का बालक था।



नेपोलियन अपनी माँ और बहन के साथ बचपन में

उस बालक के मन में फ्रांस के प्रति घृणा के भाव थे जो कि प्रतिदिन बढ़ते ही चले जा रहे थे। उसके सहपाठी अमीर बालक हमेशा ही उसकी गरीबी का मजाक उड़ाते थे, फिर भी वह कुलीन होने का दावा करता था। फ्रेंच भाषा सीखने में नेपोलियन को कोई दिलचस्पी नहीं थी।

गम्भीर संकोची तथा विरोधी स्वभाव का होने के कारण नेपोलियन के साथ पढ़ने वाले साथियों के लिये वह एक ऐसा विदेशी था, जो आधे शैतान की तरह था। जिसे वे पूरी तरह से नहीं जानते


नेपोलियन फ्रांस के सम्राट के रूप में

थे। कार्सिका और फ्रांस के अमीर लड़कों द्वारा उसके उपहास के प्रति उसके विचार थे कि—"कार्सिका के निवासी लगातार हमारी सेना से हार रहे हैं। हमारी विजयी सेना के हाथों कार्सिका के बहादुर नागरिक भला कैसे मारे जा सकते हैं।"

वह उन्हें चेतावनी देकर कहता था—"मेरे युवा होने का इंतजार करो। हमारा हर सिपाही इतना बहादुर है कि अकेले दस फ्रांसीसी सैनिकों का मुकबला कर सकता है। युवा होते ही मैं देश से फ्रांसीसियों को निकाल भगाऊँगा।"

बाल्यावस्था में नेपोलियन अपनी माँ की तरह ही गौरवपूर्ण था। उसका गोल-मटोल चेहरा छोटी आयु होने पर भी गम्भीरता के भाव से लिप्त रहता था। बचपन से ही नेपोलियन हठीले स्वभाव का था। जब वह मात्र तीन वर्ष का था तब एक दिन उसने कुछ सैनिको को अपने घर के आगे से जाते देखा, तो वह हठी के भाव से लालायित होता हुआ बोला—"माँ, मैं भी सैनिक बनूँगा। तुम मुझे भी ऐसी ही सैनिकों वाली वर्दी बनवा दो और ऐसी ही बंदूक दिलवा दो।"

वह हमेशा अपनी मातृभूमि के बारे में सोचता और उसे आजाद कराने की सोचता। वह पांच साल फ्रांस में रहा। वहाँ घटी प्रत्येक घटना से उसे बेहद नफरत थी। उसने निश्चय कर लिया था कि वह फ्रांस सरकार से अपनी मातृभूमि को आजाद करवा कर ही रहेगा।

मां उसके हटीले स्वभाव को जानती थी; इसीलिये जब वह सैनिकों वाली वर्दी के लिये ज़िद करता तो उसका सीना गर्व से फूल जाता था। वह बड़े प्यार से अपने छोटे से बेटे के माथे पर ममतामयी चुम्बन अंकित करती और उसकी हठ देखकर कहती—

"बेटे नकली सैनिक बनने के लिए बाजार में सैनिकों वाली वर्दी और बंदूक भी मिल जायेगी। मगर मैं तुम्हें असली सैनिक बनते देखना चाहती हूँ; इसलिये तू थोड़ा और बड़ा हो जा, तब मैं तेरा दाखिला असली सैनिकों वाले स्कूल में करा दूंगी। तू वहाँ खूब मन लगाकर पढ़ना, तब तुझे एक दिन सैनिक वर्दी और उसकी बंदूक भी मिल जायेगी।"

माँ की बात सुनकर नेपोलियन अत्यधिक प्रसन्न हुआ और वह उछलता-कूदता हुआ सैनिकों की ओर दौड़ पड़ा।

सैनिकों ने जब एक गोल-मटोल मासूम से बच्चे को अपनी ओर दौड़कर आते देखा तो उनमें से एक सैनिक का स्नेह उस बालक के प्रति उमड़ पड़ा। उसने उस बालक को तुरन्त अपने हाथ बढ़ाकर अपनी गोद में उठा लिया और प्यार से उसका गाल थपथपाते हुए बोला—

"कितना प्यारा बच्चा है? किसका है तू?"

लितीजिया इस बीच स्वयं भी दौड़कर उस सैनिक के पास पहुँच चुकी थी। उसने तुरन्त उत्तर दिया—

"यह मेरा बेटा है।"

सैनिक ने एक नज़र बच्चे की माँ को देखा और फिर बच्चे की ओर आकर्षित होकर उससे पूछा—"बेटे! नाम क्या है तुम्हारा?"

"नेपोलियन बोनापार्ट।" बालक ने तोतली जुबान में उत्तर दिया।

"तुम्हारे पिता का क्या नाम है?"

"कार्लो बोनापार्ट।"

"ओह! तो तुम कार्लो के बेटे हो।" सैनिक ने नेपालियन को उसकी माँ की गोद में देते हुए कहा—"यह एक नेक और बहादुर इंसान का बेटा है। इसकी अच्छी तरह से परवरिश करना ताकि यह भी अपने बाप की तरह शेर दिल सैनिक बने।"

इतना कहकर वह सैनिक अपने साथ वाले सैनिकों के साथ आगे की ओर बढ़ गया।

स्वभाव से ही जिज्ञासु होने के कारण नेपोलियन के अंदर ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा, उसके साथ के हम उम्र बालकों से कहीं अधिक थी। पन्द्रह साल की आयु में उसका ज्ञान कहीं अधिक बढ़ चुका था।

नेपोलियन इतना तेज था कि उसे, उसके बराबर उम्र के तथा उससे बड़ी उम्र के बालक सहन ही नहीं कर पाते थे। वह जरा-जरा सी बात पर उन्हें पीट दिया करता था। उसके सामने कोई बच्चा नहीं टिक पाता था। बड़े बच्चे अक्सर एकजुट होकर नेपोलियन पर धावा बोल देते थे मगर उन्हें मुंह की खानी पड़ती थी। अपने फुर्तीलेपन और चंचल काया के कारण वह अन्य बच्चों पर हावी हो जाता था।

कई बार ऐसा भी हो जाता था कि कुछ बड़े बच्चे नेपोलियन को पीट दिया करते थे। लेकिन अपनी पिटाई होने पर वह रोते हुए कभी घर नहीं गया और ना ही किसी से उन लड़कों की शिकायत की। बल्कि तुरन्त ही स्वयं उनसे हिसाब चुकता कर लिया करता था।

नेपोलियन की माँ ने उसका दाखिला ब्राउनी स्कूल में करा दिया। यह एक

सैनिक स्कूल था। सैनिकों जैसी वर्दी पहनकर वह बहुत खुश था। वह मन लगाकर पढ़ता और सैनिकों की भाँति अनुशासित जीवन व्यतीत करता। उसका एक भाई पादरी था। उसने इस नवयुवक के बारे में लिखा है—

"नेपोलियन एक सुन्दर दिखने वाला कुशाग्र बुद्धि वाला युवक है और सेना में भर्ती होने के लिये गुणों की कोई जरूरत नहीं है। युद्धक्षेत्र में तो साहस और वीरता जैसे गुणों का होना जरूरी है। वह अपनी बुद्धि के मुताबिक एक अच्छा अभियन्ता बन सकता है परन्तु युद्धक्षेत्र में आने वाली कठिन परिस्थितियों का सामना नहीं कर सकता। अब वह इस उम्र में बदलाव नहीं ला सकता। वह सेना के किसी क्षेत्र में शामिल होगा, क्योंकि जलसेना में जाने के लिये उसका स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिये। उसे गणित का भी अच्छा ज्ञान होना चाहिये। अगर वह थल सेना में शामिल होगा तो उसे उसका ज्ञान बिल्कुल नहीं है। सेना अधिकारी बनने के लिये उसके पास आवश्यक गुण नहीं हैं।"



नेपोलियन के किशोरावस्था में फ्रांस का शासक पाउली

नेपोलियन की माँ वीरता से लड़ने वाली तथा एक महान् नायिका की भूमिका अदा करने वाली औरत थी। उसके पिता भी एक विजयी पुरुष का विचार रखने वाले महत्वाकांक्षी पुरुष थे। इसलिये उनका पुत्र होने के कारण नेपोलियन में ये गुण स्वयं ही आ गये थे।

फ्रांस पर उन दिनों पाउली नामक शासक शासन करता था। कम उम्र का बालक होने पर भी नेपोलियन उसकी पद प्रतिष्टा से परिचित था। उसे मालूम था कि पाउली ही वह शख्स है जिसने उसकी मातृभूमि कार्सिका को अपने अधीन कर रखा है और कार्सिका वासियों को दासता का जीवन जीने के लिये विवश कर रखा है।

कम उम्र होने पर भी नेपोलियन अत्यधिक महत्वाकांक्षी था। वह हमेशा अपने देश को फ्रांस से मुक्त कराने के सपने देखा करता था।

जब कभी फ्रांस के बच्चे उसे या कार्सिका वालों को बुरा-भला कहते तो नेपोलियन को क्रोध आ जाता था वह उन्हें फटकारते हुए कहता—

"कार्सिकावासी भी वीर एवं बहादुर हैं वो कायर नहीं हैं। वो दिन अब दूर नहीं है जब कार्सिका फ्रांस के अधीनता से मुक्त होकर स्वतन्त्र होगा और यह



सोलह वर्षीय नेपोलियन : फ्रांसीसी सेना का उपसेनापति तलवार और झंडे के साथ

फ्रांस मेरे अधीन होगा।"

किशोरावस्था में ही अपने पिता की मृत्यु के बाद अपने परिवार की धन से काफी सहायता करने लगा। उनसे स्नेह भी रखता था। उसके उच्चाधिकारियों का उसके बारे में कहना था–

"यह बच्चा वज्र का बना हुआ है तथा इसके भीतर कोई ज्वालामुखी धधक रहा है। वह एक आत्मसम्मानी तथा महत्वाकांक्षी युवक है। यह कम बोलने वाला है मगर इसके जवाब निर्णायक एवं सटीक होते हैं। उसके विचार की शक्ति बेजोड़ है, वह स्वभाव से भावुक, सहनशील अत्यधिक स्वाभिमानी तथा एकान्तप्रिय है।"

बालक नेपोलियन पढ़ने में बहुत तेज था। वह हर कक्षा में प्रथम आता था। मात्र चौदह वर्ष की आयु में ही उसने अपनी मातृभूमि से सम्बन्धित पुस्तकें पढ़ ली थीं। सोलह साल में ही वह उपसेनापति बन गया। जब उसने पहली बार तलवार उठायी थी तो उसने कहा था–

"इस तलवार का लोहा भले ही फ्रांस का है मगर इसकी धार मेरी अपनी है।"

वह सबसे कम उम्र का आफिसर था।

जब उसने पहली बार वर्दी पहनी तो उसने मन ही मन यह दृढ़ निश्चय किया कि वह एक दिन अवश्य ही अपनी मातृभूमि को आजाद करायेगा और कार्सिका का सम्राट बनेगा। वह हमेशा स्वयं को गरीबी में जकड़ा हुआ महसूस करता था। अपनी रेजीमेण्ट तक पहुँचने के लिये उसे आधा रास्ता पैदल ही तय करना पड़ता था।

वह हमेशा गरीबी और अपने मित्रों के विरुद्ध होने वाले शोषण को समाप्त करने के लिये विचार किया करता था। साधन और साहस दोनों को वह एक सिक्के के दो पहलू मानता था।

❑



पठन-पाठन और लेखन कार्य

नेपोलियन एक चिंतनशील युवक था। वह अन्य युवकों की भाँति कैन्टीन में जाता जरूर था लेकिन उनकी तरह उसे बिलियर्ड खेलना पसंद नहीं था। उसकी विशेष रुचि पुस्तकों में थी। वह पुस्तकों के माध्यम से विदेशी दार्शनिकों तक पहुंच जाता था। उसके लिये अध्ययन करना उतना ही सहज था जितना जीवित रहने के लिये सांस लेना।

वह अपने हमउम्र नवयुवकों से भिन्न स्वभाव एवं विचार वाला था। वह विलियर्ड वाले कमरे से अलग हटकर अलग कमरे में एकान्त में जाकर बैठ जाता और स्वयं के बारे में विचार करता कि क्या उसका इस प्रकार का भावुक स्वभाव का होना उचित है?



नेपोलियन : चिंतनशील युवा

क्या उसको भी अपने साथ के अन्य युवकों की भाँति समाज एवं अन्य गतिविधियों का हिस्सा नहीं होना चाहिये?

अपने कार्य क्षेत्र से घर लौटने के बाद, अपने खाली समय को व्यर्थ की गप्पे मारने या अपने मित्रों के साथ सैर-सपाटा करने के स्थान पर उसे पुस्तकों का गहनता से अध्ययन करने में मज़ा आता था। उसकी रुचि के विषय निम्न प्रकार के थे–

भू-विज्ञान तथा मौसम विज्ञान, नक्षत्र विज्ञान, वार्निया का संविधान, तोपों का सिद्धान्त व इतिहास, हमला करने की कला, प्लेटो का गणतन्त्र, स्पार्टा राज्य, मिस्र का इतिहास, फ्रेडरिक महान् के अभियान, तातार एवं तुर्क के तरीके व रीति-रिवाज तथा उनके देश की भौगोलिक स्थिति, कार्वेस का इतिहास, जनसंख्या वृद्धि की विधियाँ, भारत का विवरण, नैतिकता की संख्यिकी, अमीर तन्त्र का इतिहास तथा अमीरों के कुकृत्यों की गाथा, मिराबीद, बफन तथा मैकियावली, वर्तमान फ्रांस में अंग्रेजों की स्थिति, एथेंरा के वासी एवं इंग्लैंड का इतिहास आदि।

वह इन सभी विषयों की पुस्तकों को पूरे मनोयोग से पढ़ा करता था। उसने

इन पुस्तकों के केवल पृष्ठ ही नहीं पलटे बल्कि उनका बड़ी गहनता से अध्ययन भी किया।

नेपोलियन ने इन पुस्तकों का अध्ययन करने के बाद जल्द ही अपने विचारों को कागज पर उतारना आरम्भ कर दिया। उसने जितने भी लेख, निबन्ध लिखे उसमें सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण लेख वह रहा जिसमें अपने कार्सिका के बारे में समस्त विवरण उपलब्ध कराया। उस समय रूसों नाम का लेखक सबसे अधिक प्रसिद्ध था। रूसों ने जब उसके लेखों को पढ़ा तो वह भी उसके यथार्थ विवरणों का कायल हो गया। जबकि नेपोलियन ने अपने लेखों में उसके विचारों के साथ कुछ असहमति भी प्रकट की थी। उसके अनुसार–



नेपोलियन : एक अध्ययन शील युवा

"मैं रूसों के एक शब्द पर भी विश्वास नहीं कर सकता।"

अपनी इस टिप्पणी को सही साबित करने के लिये और उसको समर्थन देने के लिये उसने इसके सम्बन्ध में कुछ तर्क भी दिये थे, उसका कहना था–

"जैसे-जैसे संसार में जनसंख्या बढ़ती है, वैसे ही मन में अलगाव के विचार भी उत्पन्न होते हैं और इन विचारों को लोग भी ज्यादा बढ़ा देते हैं। लोगों की आज़ादी पर अंकुश लगाने वाले दुष्ट लोग स्वयं महिलाओं पर अत्याचार करते हैं।"

उच्चकोटि के शीर्ष विद्वानों ने नेपोलियन को सदैव प्रोत्साहित किया था। उनसे प्रेरित होकर नेपोलियन ने कार्सिका पर कई लघु उपन्यास तथा लघु कथायें लिखीं। उसने अपने लेखन में सदैव समाज में कपटी लोगों के प्रति घृणा एवं विरोध प्रकट किया। उसके लेखों को पढ़ने के बाद ऐसा लगता था जैसे कि उसने समाज की मान्यताओं के खिलाफ चलने वालों के प्रति अपने आक्रोश को व्यक्त करने के लिये लेखन को अपना हथियार बना लिया हो।



नेपोलियन का देश प्रेम

नेपोलियन को अपनी मातृभूमि से अत्यधिक प्रेम था। मातृभूमि से प्रेम रखने वाला युवक फ्रांसीसी समुदाय में रहकर भी उससे जुड़ नहीं सका। उसकी नज़र हमेशा कार्सिका पर ही रही। उसने लिखा है–

"कार्सिका के लोगों के प्रति मेरा मत है कि वे वीर नागरिक हैं और अपने अधिकारों के प्रति जानकारी रखते हैं। यह कहना बिल्कुल गलत है कि अपहरणकारी के शासन को तोड़ना दैवी नियम के विरुद्ध है। कार्सिका वासियों ने पहले भी कार्सिका को जेनेवा से आजाद कराया था और उसी तरह उसके साहस तथा मातृभूमि प्रेम को दर्शाते हुए फ्रांसीसी प्रशासन से भी कार्सिका को आजाद करवा लेंगे। यदि अपहरणकारी के शासन को तोड़ना दैवी नियमों के विरुद्ध होता तो वध करके सिंहासन को हथियाने वाले तथा खाली सिंहासन पर कब्जा करने वाले प्रत्येक आतताई से ईश्वर पराजित होने वाले की रक्षा करता, जबकि वास्तविकता यह है कि प्रत्येक हारने वाले को मौत के मुंह में धकेल दिया जाता है।"

कर्सिका के लोगों ने विशेषकर बुद्धिजीवियों ने नेपोलियन की इस लेखन कला को बहुत सराहा। उन्होंने उसे कार्सिका के बारे में उपन्यास तथा कथाओं द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करने के लिये प्रेरणा दी।

अपनी देश प्रेम की कविताओं और लघु कथाओं के कारण वह पूरे कार्सिका में छाया हुआ था। यह नेपोलियन का देश प्रेम ही था जो उसने सैनिक अधिकारी बनकर प्रशिक्षण संस्थान से बाहर आने पर संकल्प दोहराया कि–"मैं अपनी मातृभूमि को फ्रांस की दासता से मुक्त करवाऊँगा।"

अपने इसी संकल्प को पूरा करने के लिये वह नक्शे तैयार करता और उनके आधार पर सैनिक कार्यवाही की योजना बनाता रहता। जिन दिनों वह कार्सिका को स्वतन्त्र कराने की योजना बना रहा था उन्हीं दिनों उसे अपनी माँ का एक पत्र मिला जिसमें उसने उसके पिता के देहावसान की सूचना दी।

परिवार के मुखिया के स्वर्ग सिधारने के बाद नेपोलियन के परिवार की स्थिति बेहद सोचनीय हो चली। नेपोलियन के भाई बेरोजगार थे अतः माँ ने पत्र द्वारा अपने बेटे से आर्थिक सहायता मांगी थी।

माँ का पत्र पाते ही वह अपने परिवार की मदद के लिये घर पहुँच गया। जाने से पहले उसने अपनी डायरी में लिखा था--

"लोगों की भीड़ में घिरा रहने के बावजूद मैं हमेशा एकांकी विचार वाला हूँ फिर भी मैं घर लौट रहा हूँ क्योंकि मैं इस बात को अच्छी तरह से जानता हूँ कि मेरी माँ को इस समय मेरी आवश्यकता है और मैं अकेला ही अपनी माता के दुःखों को दूर कर सकता हूँ। किन्तु क्या यह समय मेरे गम्भीर विचारों का अन्तिम चरण है? यहीं मेरे विचारों की मृत्यु हो जानी चाहिये? विगत छः वर्षों से मैं अपने देश से, अपने परिवार से बहुत दूर रहा हूँ, और अब मैं अपने जीवन की दहलीज पर खड़ा हूँ और लम्बी आयु जीने की इच्छा रखता हूँ। यह कितने हर्ष की बात है कि मैं एक बार फिर अपने लोगों में जा रहा हूँ ऐसे में मेरा भागना बहुत बुरा है। इसलिये मैं सोचता हूँ कि ऐसे जीवन से क्या लाभ जिसमें सब कुछ दुःखमय है, मैं अपने देशवासियों को गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ देखता हूँ फिर भी अपनी मातृभूमि पर अटल विश्वास और श्रद्धा रखते हुए अपने जीवन को देश के लिये समर्पित क्यों न कर दूँ? अपने अस्त्र-शस्त्रों को ही पत्नी मानकर तथा उसके गले में बाहें डालकर अपनी रातों को रंगीन क्यों न बनाऊँ? स्वतन्त्रता के बिना खुशियों का समय सपनों की भाँति निरर्थक है। मुझे अपनी मातृभूमि से बहुत प्यार है, किन्तु अभी मुझमें वह शक्ति नहीं है जिसके बल पर मैं अपने देश को दासता की जंजीरों से मुक्त करा सकूँ? हमें अपनी स्वतन्त्रता के मध्य खड़ी निजी दीवारों को तोड़ना होगा।"



नेपोलियन : मातृभूमि से प्यार करने वाला युवा सेनानी

नेपोलियन जब घर पहुँचा तो उसे घर की हालत देखकर बहुत कष्ट हुआ। बेरोजगारी और भाइयों की बेकारी ने तथा पिता की मृत्यु ने घर की आर्थिक स्थिति को बुरी तरह से प्रभावित किया था।

वह एक साल तक अपने देश में रहकर अपने परिवार की देखभाल करता रहा। मगर उसके तन मन और आत्मा में अपनी मातृभूमि को फ्रांस के चुंगल से मुक्त कराने की इच्छा छटपटा रही थी और हर गुजरते क्षण के साथ बलवान होती जा रही थी।

जब नेपोलियन ने अपने मन की छटपटाहट और बेचैनी का अपनी मां से जिक्र किया तो वह उसे सावधान करते हुए बोली—

"मैं जानती हूँ पुत्र की तुम बहुत भावुक हो और उत्साही भी हो। लेकिन जोश में होश खो देना अकलमंदी नहीं कहलाती है। तुम्हें याद रखना चाहिये कि फ्रांस एक शक्तिशाली देश है, उसका शासक पाउली एक शक्तिशाली सम्राट है, उसे तुच्छ समझने की भूल मत करना। उसके इशारे पर पूरे फ्रांस की सेना चलती है; जबकि उसके मुकाबले में अभी तुम्हारी स्थिति बहुत कमजोर है। मगर इसका मतलब यह कदापि नहीं है कि तुम अपने भीतर की धधकती ज्वाला को बुझा दो। उसे ज्वलंत रखो, किन्तु इस प्रकार कि कहीं वही आग तुम्हें जलाकर भस्म न कर दे। यदि तुम्हारे हृदय की धधकती आग का तुम पर प्रभाव पड़ा तो तुम्हारा पतन निश्चित है। किन्तु यदि तुम उस आग से स्वयं को सुरक्षित रख सके तो निःसन्देह कार्सिका ही नहीं वरन् पूरा फ्रांस ही तुम्हारे अधिकार में होगा।"

नेपोलियन ने अपनी माँ के हर शब्द को ध्यानपूर्वक सुना। उसे लगा कि उसकी माँ ने जो कुछ भी उससे कहा है वह उचित ही कहा है। अपनी माँ की दी गयी शिक्षा को ग्रहण कर नेपोलियन वापस पेरिस चला आया।

उम्र बढ़ने के साथ उसके मस्तिष्क में बनने वाली योजनाओं में भी विस्तार आता जा रहा था। उसकी प्रतिभा के कारण उसके बड़े अधिकारी उससे हमेशा खुश रहा करते थे। उनका मानना था कि उन्नीस वर्ष का यह उपसेनापति अन्य सैनिकों से कहीं अधिक ज्ञानी एवं गम्भीर है। यही कारण था कि उन्होंने नेपोलियन को एक गम्भीर कार्य सौंप दिया; जो बड़ा कठिन था तथा जिसे पूरा करने के लिये वह पूरा दिन व्यस्त रहता था।

नेपोलियन को सौंपा गया कार्य उच्च अधिकारियों से सम्बन्धित था और वह उन्हें ही सौंपा जाता था, जबकि नेपोलियन मात्र दो सौ सैनिकों का अधिकारी था। जब उच्च अधिकारियों को इस सम्बन्ध में पता लगा तो वो नेपोलियन से ईर्ष्या करने लगे।

नेपोलियन भी इस बात को महसूस कर चुका था कि अब उसकी प्रगति सम्भव नहीं है। उच्चाधिकारियों की ईर्ष्या उसके रास्ते में बाधा बनती जा रही है। अब उसका कैप्टन पद पर जाना भी असम्भव सा कार्य लगने लगा था।

सन् 1785 ई० से लेकर सन् 1788 ई० तक नौजवान नेपोलियन ने कार्सिका

को स्वतन्त्र कराने की प्रबल इच्छा को जब्त किये रखा। इस बीच वह अपने सैनिक जीवन को लगातार आगे बढ़ाता रहा।

फ्रांस का शासक पाउली जनता का ध्यान नहीं रख पाता था जिससे जनता बहुत दुःखी थी। मजदूर वर्ग दासता का जीवन गुजार रहे था और धनवान लोगों ने उनकी नाक में नकेल डाल रखी थी। जिसके कारण मजदूर वर्ग निरन्तर गरीबी की ओर बढ़ रहा था और अमीर लोग और भी धनवान होते जा रहे थे।

नेपोलियन चाहता था कि कार्सिका के हजारों लोगों का गुस्सा उसके दुश्मन के प्रति युद्ध का रूप ले ले। उसने एक पत्र में पाउली को सम्बोधित करते हुए लिखा—

"हे...महाराज सेनापति! आपके विषय में मैंने अपनी माँ लितीजिया से सुना था। उसने मुझे आपके पुराने दिनों को जो कि आपने न्यायालय में गुजारे थे, को याद कराने के लिये कहा। तब कुछ लोगों द्वारा आप पर झूठे आरोप लगाये गये थे। जब मुझे इस सम्बन्ध में पता चला तो मेरे क्रोध का पारावार न रहा और मैंने मन ही मन यह दृढ़ संकल्प लिया कि मैं ऐसे धूर्त लोगों की फैलायी अफवाह को गलत सिद्ध करके ही दम लूँगा। मैं अपने दुश्मन के प्रति विद्रोह करना चाहता हूँ। लेकिन मेरे पास साधनों का अभाव है। यदि मैं राजधानी में होता तो शायद मैं अधिक साधन जुटा पाता। लेकिन मेरे हृदय में देश के प्रति प्रेम, साहस तथा स्वतन्त्रता की उत्कट भावना मेरी सहायता करेगी इसका मुझे पूरा विश्वास है। आपने मुझे जन्म के समय देखा था और आपका आत्म-विश्वास उस समय और बढ़ेगा जब आप से प्रेरणा लेकर उस बालक को नवयुवक के रूप में कार्य करते हुए देखेंगे।"

इस पत्र के द्वारा नेपोलियन ने बड़े ही शालीन शब्दों में अपने संरक्षण तथा रक्षा की मांग की है। यह पत्र उसकी बुद्धिमानी तथा शालीनता दोनों का परिचायक है।

जबकि इसके विपरीत पाउली ने इस पत्र को उसकी उदण्डता माना तथा उस पत्र के उत्तर में पाउली ने बहुत ही नाराजगी भरा उत्तर दिया।

नेपोलियन जनता के हितों का समर्थक था। सन् 1789 ई० में जब जनता के क्रोध का ज्वालामुखी फूट पड़ा तो उनको भीतर का लावा फ्रांस के सामर्थ्यवान धनवानों को भस्म करने लगा। फ्रांस में ऐसे समूह बन चुके थे जो कि परिवर्तन चाहते थे।

अट्ठारहवीं शताब्दी में पहली बार बैस्टील शहर में नवयुवक ने ऐसी हलचल मचायी कि फ्रांस की सरकार हिल गयी और वह उन नवयुवकों पर अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग करने पर उतर आयी।

युवा लेफ्टीनेंट नेपोलियन के शहर में भी जनसमूह ने जबरदस्त लूटपाट की, जिससे दंगा भड़क उठा और विवश होकर अमीर वर्ग को भी युद्ध के लिये मैदान में उतरना पड़ा।

नेपोलियन भी उन लोगों में शामिल हो गया और उसने भी लोगों पर खूब गोलियाँ बरसायीं। वह गलियों में खड़े होकर उन लोगों को गोली मारने में अपने साथियों की मदद करने लगा। नेपोलियन के जीवन का यह पहला अवसर था जब उसने इस प्रकार से लोगों पर खूब जी भर गोलियाँ बरसायी थीं।

वह जो भी कार्य कर रहा था अपने अधिकारियों के कहने पर कर रहा था। परन्तु वह उस जनसमूह के विरुद्ध था ज़िनसे वह घृणा करता था और फ्रांसीसियों का विद्रोह करने वाले हर मनुष्य का सम्मान करता था।

उसके मन में केवल एक ही विचार था कि—"अब कार्सिका के दिन बदलने वाले हैं।"

एक सैनिक अधिकारी होने के बावजूद भी नेपोलियन ने जो कुछ भी किया अपनी मातृभूमि के हित के लिये किया। उसकी मातृभूमि के लोगों निद्रा से जागते हुए नज़र आ रहे थे।

नेपोलियन कहता था—

"जिस प्रकार पेरिस अपने राज्य की आजादी के लिये एकजुट होकर युद्ध में उतरा, उसी तरह कार्सिका के नागरिकों को भी अब जाग जाना चाहिये। मातृभूमि के प्रत्येक नागरिक को अस्त्र-शस्त्र धारण कर मैदान में उतर जाना चाहिये। जिस तरह पेरिस के लोगों ने राष्ट्रीय दल बनाकर अपनी पूरी शक्ति को एकत्रित कर विरोधियों का सामना किया, ठीक उसी प्रकार अब कार्सिका वासियों को भी अपने विरोधियों को मुंहतोड़ जवाब देना चाहिये।"

नेपोलियन के इन शब्दों ने आग में पेट्रोल का काम किया। क्रान्ति की ज्वाला चारों ओर धधक उठी। जैसे-जैसे वह गलियों में घूमता जाता वैसे-वैसे क्रान्ति की लहर गलियों में दौड़ती जाती।

नेपोलियन को अब सब जानने लगे थे। यहाँ तक कि अजाकियों जैसे छोटे शहर में भी सब उसे जानते थे। अब वह कोई अपरिचित व्यक्ति नहीं रहा था। इसलिये सब लोग उसकी बातों को ध्यान लगाकर सुनते थे और उसकी बातों का उन लोगों पर प्रभाव भी पड़ रहा था।

नेपोलियन का समर्थन करने वाले और उसके पीछे आने वाले लोगों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही थी। उनमें से कुछ लोग उसका समर्थन इसलिये कर रहे थे क्योंकि वे स्वतन्त्र होना चाहते थे, जबकि उसका अनुसरण करने वालों में कुछ वे लोग भी शामिल थे जो कि परिवर्तन चाहते थे।

इन दोनों ही प्रकार के लोगों के लिये नेपोलियन एक आशा की किरण बनकर उभरा था। वे उसे अपना सच्चा प्रतिनिधि मानने लगे थे। लेकिन उसका विश्वास उस समय टूटा जब युद्ध के समय, फ्रांस की सेना तो पहुँची लेकिन पर्वतों से सेना नहीं पहुँच पायी।



नेपोलियन : एक परिवर्तनकारी युवा सैनिक आफिसर

सेना को देखते ही क्रान्तिकारी का साहस जवाब दे गया और वे भयभीत होकर भाग खड़े हुए। वे बिना लड़े ही मैदान छोड़ चुके थे।

क्या ऐसे लोगों से कोई आशा की जा सकती है? ऐसे हालातों में नेपोलियन भी अपंग होकर रह गया था। अब वह युद्ध का एक हारा हुआ खिलाड़ी था। क्या हारा हुआ सिपाही लोकप्रिय बन सकता था?

नेपोलियन को यही सोचकर स्वयं पर क्रोध आ रहा था।



पाउली से प्रेरणा

नेपोलियन पाउली से काफी प्रभावित हुआ था। उसने अपनी माँ लितीजिया से पाउली के विषय में बहुत कुछ सुन रखा था। वह स्वयं से सवाल करता—"क्या वह भी पाउली के समान महान् बन सकता है?"

बीस वर्ष पहले पाउली को देश निकाला दे दिया गया था और आज वह लौट आया था। वह उत्साहित था। पाउली को लोग देश नायक मानते थे, एक महान् योद्धा के रूप में तथा एक कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में उसका सम्मान करते थे। उसके बारे में सभी का यही विचार था कि वह राष्ट्रीय दल की अगुवाई करने वाला व्यक्ति है।

बोनापार्ट भी पाउली का सम्मान करता था।

पाउली का इस सैन्याधिकारी के पिता से जुड़ा होने की वजह से नेपोलियन को बचपन से ही पाउली के साथ रहने का मौका मिला था। पाउली एक अनुभवी ज्ञानी व्यक्ति था।

नेपोलियन को बचपन से ही ऐसे अनुभवी व्यक्ति के साथ घुड़सवारी का मौका मिला था। यह लड़का बचपन से ही पाउली से व्यूह रचना के बारे में सीखता रहा था। साथ ही साथ पाउली उसे फ्रांस के बारे में भी बताता था कि वो किस प्रकार से बलपूर्वक उसकी मातृभूमि पर अधिकार जमाये हुए है।

नेपोलियन को पाउली के अन्दर उसके संसार के एकछत्र राज करने वाले राजा की छवि दिखायी देती थी।

पाउली भी बोनापार्ट की योग्यताओं से परिचित था। उसे नेपोलियन के रूप में एक भावी नेता मिल गया था।

नेपोलियन ने भी पहली बार यह अनुभव किया कि जीवन में पहली बार उसके ठीक प्रकार से समझने वाला कोई व्यक्ति मिला है।

नेपोलियन सोचता कि मनुष्यों को खुश करने के लिये आखिर किन उद्देश्यों को पूरा करना जरूरी है?

फिर वह मुस्कुराता क्योंकि इस विषय पर लिखने के लिये उसके पास बहुत से संवाद थे और यह उसकी विशेष रुचि वाला विषय था।

इस विषय पर नेपोलियन ने जो एक निबन्ध लिखा था उसे लायंस एकेडमी में पुरस्कृत किया गया। उसका विषय था—

"धन भोग विलास का नहीं अपितु मानव के अवदर्यों को पूरा करने का साधन है।"

उसे इस निबन्ध पर पुरस्कार स्वरूप बारह सौ फ्रेंक मिले थे। इस धन से कार्सिका के आधे लोगों के लिये हथियार खरीदे जा सकते थे।

अचानक नेपोलियन के मन में भोग विलास में डूबे हुए राजाओं के प्रति विद्रोह उत्पन्न हुआ। उसे लगा कि वे राजा अपनी सम्पत्ति और अधिकारों का भोग विलास पर खुलकर प्रयोग कर रहे थे। यही कारण था कि बोनापार्ट का विद्रोह उनके विरुद्ध उठने लगा।



नेपोलियन : विद्रोही विचारों का युवा सैनिक आफिसर

स्पार्टा को नेपोलियन अपना आदर्श मानता था। इसका एकमात्र कारण यही था कि स्पार्टा का प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में दृढ़ता तथा विश्वास की शक्ति लेकर जीवन व्यतीत कर रहा था। स्पार्टा के लोगों में साहस और शक्ति जैसे असाधारण गुण थे। वहां हर आदमी खुश था।

बैस्टील की जीत के दो साल हो जाने के उपलक्ष में लैफ्टिनेन्ट ने उसकी वर्ष गांठ मनाते हुए देश भक्तों को एक दावत पर बुलाया।

अब लोग तानाशाही के विरोध में उठने लगे थे। वे अत्याचार सहने की अपेक्षा विरोध करने लगे थे। पेरिस से उठी विरोध की लहर अब समुन्द्र के बीच दूर द्वीपों, प्रायद्वीपों तक पहुँचने लगी थी।

कार्सिका भी इस लहर से अछूता नहीं रहा और वहाँ भी अन्दर ही अन्दर झगड़े होने लगे।

नेपोलियन के लिये अपने उद्देश्यों को पूरा करने का यह दूसरा अवसर था। अतः उसे लौटना पड़ा।

❑



नेपोलियन का विद्रोह

नेपोलियन को इस अवसर का लाभ उठाना था। उस जोर पकड़ रहे आन्दोलन को सही राह दिखानी थी। जो कुछ भी नेपोलियन करना चाहता था उसके लिये यह बहुत ही सुविधाजनक अवसर था।

उसके लिये यह निर्णय लेने का समय था। उसके परिवार की आर्थिक स्थिति भी पहले की अपेक्षा बेहतर थी। अब वह परिवार की ओर से निश्चित था। जोसेफ उसका भाई एक अच्छी क्षमता वाला व्यक्ति था। प्रायद्वीप में होने वाली अव्यवस्था में सुधार उस जैसी क्षमता वाला व्यक्ति ही कर सकता था।

राष्ट्रीय नेता का चुनाव करने का समय निकट आ चुका था। नेपोलियन के बहुत से रिश्तेदार और मित्र थे जिनके लिये उसकी माँ के घर के दरवाजे हमेशा खुले रहते थे।

यही रिश्तेदार और दोस्तों के वोटों को बटोरने का उनके पास एक मात्र तरीका था। बोनापार्ट कार्सिका के चुनाव के लिये अपने आपको सुदृढ़ कर चुका था। इसके बाद उसके पद में उन्नति हो गयी और वह लैफ्टीनेन्ट कर्नल के पद पर पहुँच गया था।

वह फ्रांस को अपना एक पत्र भेजना चाहता था लेकिन इटली में रहने वाले नागरिक के लिये फ्रांस में प्रार्थना पत्र भेजना सम्भव नहीं था। क्योंकि उसे ऐसा करने के लिये फ्रांस की सेवा त्याग देनी चाहिये थी।

परिस्थितियाँ इस समय उसके लिये कठिन थीं। उसके लिये हर स्थिति में तैयार रहने में ही उसकी बुद्धिमानी थी। महान् सेनानायकों ने भी अपने अनुभव के आधार पर उसे सावधान रहने की सलाह दी।

उसने तुरन्त फ्रांस सरकार को एक पत्र लिख भेजा—

"कार्सिका के प्रमुख नागरिकों का सम्मान उसके अपने देश में है। इसी कारण मुझे अपने देश फ्रांस से वापस लौटने की प्रेरणा दे रहा है। सरकारी सेवा की उपेक्षा करने वाला मैं अकेला व्यक्ति नहीं हूँ। मैंने अन्य लोगों के साथ ही सरकारी सेवा का त्याग करने का मन बना लिया है। मेरी मातृभूमि मुझे पुकार रही है। मैं फ्रांस सरकार से निवेदन करता हूँ कि मेरी सेवायें समाप्त कर दी जायें। मैं फ्रांस का नहीं वरन् कार्सिका का नागरिक हूँ, जो फ्रांस की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है।"

फ्रांस सरकार के पास जब नेपोलियन का यह पत्र पहुँचा तो उसे गहरा झटका लगा। इस प्रार्थना-पत्र के उत्तर में फ्रांस के सैन्य अधिकारी पद से उसे निष्कासित कर दिया गया।

जब नेपोलियन के निष्कासन का पता कार्सिका के वरिष्ठ नागरिक तथा पाउली के शत्रु सालिसिटी को चला तो उसने नेपोलियन को अपने पास बुला लिया और कार्सिका के सैन्य अधिकारी के रूप में उसकी नियुक्ति कर उसकी नौकरी को बहाल कर दिया।


कार्सिका के सैन्य अधिकारी के रूप में नेपोलियन की बहाली

सन् 1772 ई० में नेपोलियन अपनी बटालियन का प्रधान अधिकारी था। वह चाहता था कि दुश्मन की सेना को हराकर उसे खदेड़ दिया जाये तथा उसके अधिकारी को पकड़ लिया जाये।

वह एक झटके में ही अपनी मातृभूमि को शत्रु के जाल से मुक्ति दिला देना चाहता था। यदि ऐसा हो गया तो उसका महत्व कार्सिका में पाउली से भी अधिक हो जायेगा। वह कार्सिका का एक महान् तथा लोकप्रिय नेता और आजादी दिलाने वाला जननायक बन जायेगा।

नेपोलियन ने बड़ी हिम्मत के साथ किले पर कब्जा करने का प्रयास किया लेकिन किले में जो सेना थी नेपोलियन ने उसे डराने की कोशिश की लेकिन वह गलत था।

उसके ऐसा करते ही उसकी बटालियन के लोगों को बंदूक की नोक पर पकड़ लिया गया और उन्हें हार माननी पड़ी। उस पर विद्रोह करने का आरोप लगा दिया गया।

पाउली पर भी इस बात का प्रभाव पड़ा। उनके इस कृत्य का शिकार उसे भी बनना पड़ा। पाउली ने तुरन्त ही नेपोलियन को उसके पद से निष्कासित कर दिया। उसने नेपोलियन को दल से निकाल दिया था।

पाउली द्वारा लिया गया यह निर्णय कार्सिका के कम और फ्रांस के हक में अधिक था। उसका यह फैसला फ्रांस के प्रति उसकी वफादारी को दर्शाता है।

विद्रोह में विफलता

नेपोलियन बहुत सोच-विचार के बाद अगला कदम उठाना चाहता था। वह

नहीं चाहता था कि वह जल्दबाजी में कोई भी फैसला ले। पेरिस के बारे में भी हर फैसला वह सोच समझकर ही लेना चाहता था।

पाउली ने जब उसके विरोध में कार्य किया तो नेपोलियन ने भी उसके विरुद्ध होने का विचार किया। अब उसके पास स्वयं पर निर्भर होने के लिये कोई मजबूत आधार नहीं था। न तो उसके पास कोई धन ही था और न ही कोई पद था।

इसके अतिरिक्त भी उसे गम्भीर आरोपों का सामना करना पड़ रहा था। अब जैकोबिन ही उसकी अन्तिम आशा थी। वंश की रक्षा करना एक मात्र रास्ता बचा था। उसके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था।

पेरिस एक महंगा शहर था! यहाँ धनी लोगों की आबादी थी। महँगाई का प्रभाव नेपोलियन पर भी पड़ा। धन के अभाव में उसे अपनी घड़ी गिरवी रखनी पड़ी। फिर उस घड़ी को बेचकर उसने अपना ऋण चुका दिया। उसके बाद उसने अपने एक मित्र ब्राउरिनी के साथ मिलकर विचार किया कि उन्हें गुजारा करने के लिये घरों में काम करना चाहिये।

नेपोलियन बोनापार्ट एक शान्तिप्रिय, एकान्तप्रिय और स्थिर स्वभाव का था। क्या ऐसा व्यक्ति अपने स्वभाव के विपरीत किसी जोखिम भरे कार्य को अपने हाथ में लेगा? क्या वह अपने भाग्य को अपनी अभिलाषाओं के अनुसार बदलने का साहस रखता था?

नेपोलियन जो कि इटली का था, इसलिये फ्रांस के लिये विदेशी है, क्या वह विदेशी फ्रांस का भाग्य विधाता बन सकता है?

ये वो प्रश्न थे जो बोनापार्ट के सामने पहाड़ बनकर खड़े थे। उसे अपनी अभिलाषा की प्राप्ति के लिये उन पहाड़ों को फलांगना था।

फ्रांस के शहर ट्विलरीज में अचानक (भयंकर) सैलाब आया। नेपोलियन चुपचाप देखता रहा। उसका मुख्य उद्देश्य आजादी प्राप्त करना था। उसने दुश्मन को हरा ट्विलरीज जीत लिया था। यहाँ की बगावत के दूसरे दिन नेपोलियन ने अपने चाचा को एक पत्र लिखा जिसमें उसने लिखा था कि—"उन्हें अपने भतीजों की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। वह अपनी रक्षा स्वयं करना जानते हैं।"

उस समय एक नई सरकार बन चुकी थी जिसने नेपोलियन को एक महत्वपूर्ण कार्य सौंपा। वह दोबारा नये पद पर आसीन हो गया। वह सेना का कप्तान था। फिर भी उसे रेजीमेन्ट में जाने की जल्दी नहीं थी। वह तो कार्सिका का निवासी था और वापस अपनी मातृ-भूमि में लौटने की इच्छा रखता था।

इस बीच प्रायद्वीप के लोगों के मन में भ्रष्टाचार व तानाशाही सरकार के प्रति रोष प्रकट होने लगा था। अब वहाँ के नागरिकों के मन में राज्य के तानाशाही

शासकों के प्रति दुर्भावना उत्पन्न हो चुकी थी, जो उनके खिलाफ संघर्ष का रूप ले चुकी थी।

सालिसिटी कार्सिका का ही एक नागरिक था और उस समय पेरिस में आयोजित सम्मेलन के शिष्टमण्डल का सदस्य था। वह पाउली का विरोधी था।

पाउली की दुश्मनी के कारण ही सालिसिटी नेपोलियन का मित्र बन गया था। अब वे दोनों साथ-साथ थे और दोनों ही पाउली के एक समान विरोधी थे।

ताकत और सत्ता कभी किसी एक की नहीं होती। वह कभी किसी के हाथ में होती है तो कभी किसी के हाथ में। शक्ति ऐसी चीज़ है जो सबके हाथ में होती है या फिर किसी के हाथ में नहीं होती।

पेरिस के लोग अधिकारियों का विरोध कर रहे थे। राजा ने इस विद्रोह को दबाने का आदेश दिया। इस विद्रोह में पहाड़ी लोग ही हिस्सा नहीं ले रहे थे बल्कि समस्त कार्सिका के नागरिक मिलकर भाग ले रहे थे।

राजा का आदेश लागू होने से पहले भी खण्डित हो चुका था। नेपोलियन के लिये अच्छा मौका था। वह तीसरी बार युद्ध की तैयारी कर रहा था। उसके साथ उसका भाई जोसेफ लूसियस तथा चाचा फ्रेश भी था।

जबकि सेना इकट्ठी करने का काम अकेला नेपोलियन कर रहा था। वह बड़े ही सुनियोजित ढंग से षड्यन्त्र रच रहा था। पाउली पर भावी युद्ध का आरोप लगाना, फ्रांस के विरुद्ध संघर्ष छेड़ना यह सब उसी षड़यन्त्र के भाग थे।

कार्सिका में एक के बाद एक संघर्ष हो रहा था और जन-जीवन एकदम बदल चुका था। कार्सिका में जहाँ पर बड़े कार्य में पाउली की सलाह ली जाती थी, अब कोई उसे पूछता भी नहीं था।

फ्रांस में नेपोलियन कैप्टन के पद पर तैनात था लेकिन कार्सिका पहुँचते ही उसने सैन्य अधिकारी का पद फिर से सम्भाल लिया। अब वह सेना के प्रशासन को अपनी इच्छानुसार चलाता था।

भाग्य भी नेपोलियन का साथ दे रहा था।

अचानक पेरिस से पाउली को गिरफ्तार करने का आदेश पारित हो गया। पाउली वृद्ध था इसलिये लोगों ने उसके आदेश की अवहेलना करनी आरम्भ कर दी।

नेपोलियन को इस बात से कोई लाभ नहीं पहुँचा था। वह हमेशा प्रतिक्रियाओं के प्रति सतर्क रहता था। समय की मांग को देखते हुए उसने पाउली के साथ होने की घोषणा कर दी। क्योंकि उसे लोगों के साथ ही चलना था।

परन्तु सम्मेलन के लोग नेपोलियन के खिलाफ हो गये। पाउली ने भी अपनी प्रतिक्रिया इस प्रकार व्यक्त की—

"कार्सिका राष्ट्र का बोनापार्ट व उसके भाइयों पर विश्वास करना ठीक नहीं

है। वे अफवाहों को फैलाने वाले लोग हैं। उनका व्यवहार कपटी लोगों से कम नहीं है। वे जनता में गलत भ्रान्तियाँ फैलाते हैं। जनता की भावनाओं को ध्यान में रखकर उन्हें त्याग देना चाहिये।"

इन बातों का लोगों पर तत्काल प्रभाव पड़ा और दुश्मनों ने बोनापार्ट के घर पर हमला कर लूटपाट शुरू कर दी। आयोग के आदेश का पालन करने के कारण बोनापार्ट के मित्रों का घर बच गया। वे आदेश की उपेक्षा नहीं कर सके, इसलिये उनके मित्रों के निवास स्थानों को छोड़ दिया गया।

इन घटनाओं की वजह से फ्रांस सरकार उस पर विश्वास करने लगी थी तथा सेना में फिर से उसे कैप्टन का पद प्राप्त हो चुका था।



फ्रांस सेना में पुन : कैप्टन का पद प्राप्त नेपोलियन

एक वर्ष बाद वह फ्रांस के विरुद्ध कार्सिका के स्वयंसेवकों के साथ मिलकर कार्य करने लगा। वह पूरी तरह से कार्सिका का समर्थक था।

इस बार नेपोलियन को जो पद दिया गैया उसमें उसे काफी शक्तियाँ प्राप्त थीं। समुद्र तट के करीब प्रायद्वीप की रक्षा करने का भार उस पर था और उससे सम्बन्धित आदेश जारी करने की शक्ति उसे प्राप्त थी। इसलिये अब उसके लिये पाउली से निर्णायक युद्ध करना जरूरी हो गया था।

पाउली पर आक्रमण करने का खमियाजा नेपोलियन और उसके परिवार को भुगतना पड़ा। क्योंकि वह युद्ध में विफल हो गया था।

उसकी माँ लितीजिया को कई वर्ष बीत चुके थे, जब फ्रांस से युद्ध के बाद उसने एक जंगल में शरण ली थी और अब उसे उस घर को छोड़ना पड़ा था। दुश्मनों ने उसकी पूरी सम्पत्ति पर कब्जा कर लिया था और अब उसके पास तन के कपड़ों के सिवा कुछ भी नहीं था।

उस समय नेपोलियन की आयु तेईस वर्ष की हो चुकी थी जब वह सैन्य अधिकारी जलयान के डैक पर खड़ा अपने देश से जुड़े उस समुद्र तट को गौर से देख रहा था। वह दुःखी था। क्योंकि उसने कार्सिका को आजाद कराने के लिये अपना सब कुछ त्याग दिया था। वह धीरे-धीरे पश्चिम की ओर बढ़ रहा था।

एक शरणार्थी के रूप में नेपोलियन और उसका परिवार फ्रांस में रहने लगे। उनकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। जब वह अपनी बहनों को फटे पुराने कपड़ों को पहने देखता तो उसका मन दुःख से भर जाता था।

इस समय उसके भाई जोसेफ ने नेपोलियन की काफी आर्थिक सहायता की।

वह रेशम का व्यापार करता था। परिवार का एक सदस्य होने के नाते वह अपने पिता के नक्शे कदम पर चल रहा था।

फ्रांस अब चारों ओर से दुश्मनों से घिर चुका था। दुश्मन सेनाओं ने उसकी सीमाओं पर कब्जा जमा लिया था। पूरा फ्रांस छावनी प्रतीत हो रहा था। स्पेन के सैनिक पहाड़ी क्षेत्रों की ओर बढ़े आ रहे थे।

टाउलिन शहर अंग्रेजों से लड़ने की नई नीतियां तैयार कर रहा था। वह अंग्रेजों को अपने शहर से भगाने की सोच रहा था। इस कार्य को सफलतापूर्वक निभाने के लिये वहाँ एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में एक ऐसे चित्रकार को सेनानायक घोषित किया गया जिसे युद्ध के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं थी। परन्तु क्रान्तिकारी भावनायें उसमें कूट-कूट कर भरी हुई थीं।

चित्रकार को सेनानायक बनाने के बाद नेपोलियन को बारूद देकर भेजने का निर्देश दिया गया। उसे यह भी आदेश दिया गया कि वह अपने देश सालिसिटी जाकर युवा सेनानायक तथा चित्रकार सेना अधिकारी का आपस में मेल कराये।

अपनी अद्‌भुत कार्य क्षमता के आधार पर नेपोलियन अपने काम को आश्चर्यजनक रूप से पूरा करने लगा। वह जल्दी ही समुन्द्र की सीमा से लगने वाले सभी स्थानों पर तोपें ले गया। उसने छः सप्ताहों में सौ से भी अधिक तोपों को अपने पास इकट्ठा कर लिया और फिर सोचा—

"रस्सी का एक सिरा मेरे हाथ में है, अर्थात् कुछ हद तक बाजी मेरे हाथ में है। मुझे इस सिरे को अपने हाथ में मजबूती से थामे रखना है। इसे छोड़ना नहीं है।"

नेपोलियन के पास यह एक अच्छा मौका था जब वह अपने युद्ध से सम्बन्धित ज्ञान का प्रयोग कर सकता था। एक कुशल सेनानायक के समान वह योजना बनाने लगा। उसका पहला लक्ष्य दुश्मनों को समुद्र तक पहुंचने से रोकना था।

यही कारण था कि उसने यह योजना बनाई कि वह दो बंदरगाहों पर खाड़ी के तटों पर तोपों को लगायेगा। इस प्रकार दुश्मन समुन्द्र तक नहीं पहुँच सकेगा।

उसकी इस प्रकार की योजना पर धनी-वर्ग की राय कुछ ज्यादा अच्छी नहीं थी। वे उसकी हँसी उड़ाते थे।

पेरिस का एक प्रसिद्ध युवा, नेपोलियन का दोस्त था, जिसका नाम रोबेस्पीरी मैक्समिलन था। वह एक बुद्धिमान तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति था। साथ ही साथ उसके जोसेफ से भी मित्रता पूर्ण सम्बन्ध थे। जोसेफ को अपने भाई नेपोलियन पर पूरा गर्व तथा भरोसा था वह रोबेस्पीरी मैक्समिलन से कहता था—

"मेरा भाई नेपोलियन एक वीर साहसी, युद्ध क्षेत्र में निपुण युवक है। जब कभी तुम्हें किसी अनोखे साहस वाले व्यक्ति की आवश्यकता हो तो तुम उसे याद कर लेना।"

नेपोलियन के सामने कार्सिका में आतंकवादियों का सेनानायक बनने का प्रस्ताव रखा गया जिसे उसने अस्वीकार कर दिया।

पेरिस से भेजी उसकी योजना को स्वीकार कर लिया गया। जिस चित्रकार को सेनानायक बनाया गया था उसे वापस बुला लिया गया नेपोलियन को इस निर्णय पर बहुत प्रसन्नता हुई। उसका विचार था कि अब उस चित्रकार के स्थान पर उसे वहाँ का सेनानायक बनाया जायेगा।

लेकिन यह क्या?

उस पद पर एक डॉक्टर को नियुक्त कर दिया गया था।

बोनापार्ट को जब यह समाचार मिला तो उसे बहुत क्रोध आया। इधर शत्रु ने धीरे-धीरे राज्य के महत्वपूर्ण भागों पर अपना अधिकार जमा लिया था।

अब अधिकारी चिंता में पड़ गये और इस पर विचार करने लगे। इस दौरान बोनापार्ट उन सब अधिकारियों को तोपखानों की सुरक्षा की ओर ले गया और उन्हें ध्यान दिलाया कि वे कितने असुरक्षित हैं?

उसने उन अधिकारियों के सामने कहा—

"आजकल बिना सुरक्षा के भी काम हो सकता है, यदि हममें देश भक्ति की भावना हो?"

उस समय सेना का प्रधान अधिकारी एक वीर योद्धा था और वह नेपोलियन के गुणों को पहचानता था। उसने नेपोलियन की योजनानुसार टाउलिन पर आक्रमण किया और विजय प्राप्त की। इस प्रकार नेपोलियन की ख्याति में चार चांद लग गये।

इस विजय के बाद नेपोलियन चढ़ते हुए सूरज की भान्ति चारों ओर प्रसिद्ध हो गया था। पेरिस में टाउलिन की स्वतन्त्रता का जश्न मनाने के लिये एक समारोह का आयोजन किया गया जिसमें उसके मुखिया ने बोनापार्ट की प्रशंसा में कहा था—

"चाहे इस सम्मेलन में उसे एक साधारण सम्मान से सम्मानित किया गया है फिर भी वह सीमा पर बेजोड़ तथा सफल व्यूह रचना करता है।"

नेपोलियन की गिरफ्तारी

जिस समय नेपोलियन नाडस में था, उस समय रोबेस्पीरी की हत्या कर दी गयी। चारों ओर एक आन्दोलन सा छिड़ गया था। हर आदमी तानाशाही के खिलाफ खड़ा हो गया था। हर आदमी स्वयं को निर्दोष साबित करने में लगा था और लोग अपना दोष दूसरों पर लगाने के लिये तैयार थे।

यह स्पष्ट था कि उन सब लोगों में वे लोग भी निशाना बन रहे थे जो पेरिस में युद्ध के समक्ष मौजूद नहीं थे।

जो भी रोबेस्पीरी के साथ विद्रोह में शामिल था, उन सभी को गिरफ्तार किया जा रहा था। इस गिरफ्तारी से बचने के लिये कुछ लोग पेरिस भाग जाना चाहते थे।

नेपोलियन रोबेस्पीरी के विश्वास को जीतने के लिये गुप्त अभियान पर था। वह फ्रांस की दक्षिणी सेना को खत्म करने की योजना बना रहा था। इस अपराध के लिये उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उस पर मुकदमा चला। मुकदमे के लिये उसे पेरिस जाने का आदेश दिया गया।

गिरफ्तारी के बाद नेपोलियन को नाडस के पास कोर्ट कैरी में रखा गया। जिस कार्सिका को वह अपनी जान से भी ज्यादा चाहता था; उसी कार्सिका ने उसे पद से निष्कासित करके परिवार सहित देश से निकाल दिया था।

हर समय योजना बद्ध तरीके से काम करने के बाद भी आज वह फ्रांस में सलाखों के पीछे एक कैदी था। हो सकता था कि उसे मौत की सजा सुना दी जाती, या फिर उसे गोलियों से छलनी कर दिया जाता।

तब वहाँ के लोगों ने नेपोलियन को जेल से फरार होने की सलाह दी। लेकिन उसने ऐसा करने से इंकार कर दिया। उसका मित्र जुनोट जानता था कि रोबोस्पीरी के साथ उसके द्वारा रचित षड्यन्त्र में शामिल होने का कोई सबूत उन लोगों के पास नहीं है। इसलिये वे साबित नहीं कर सकते कि वह रोबोस्पीरी के साथ किसी षड्यन्त्र में शामिल था।

यही कारण था कि नेपोलियन कोई समझौता नहीं करना चाहता था और न ही वह भागना चाहता था। क्योंकि यदि वह जेल से भाग जाता तो सभी आरोप उस पर सिद्ध हो जाते। जेल से उसने एक पत्र सम्मेलन को स्पष्ट रूप से लिखा था जो इस प्रकार था—

"मुझे मृत्यु से कोई डर नहीं है। मैं केवल अपना सम्मान पाना चाहता हूँ। अगर मैं निर्दोष हूँ तो मैं इतना चाहता हूँ कि मेरी बेड़ियाँ खोल दी जायें और मेरी सुनवायी की जाये, मेरा देश भक्त होने का सम्मान मुझे लौटाया जाये चाहे उसके कुछ समय बाद मुझे मौत के घाट उतार दिया जाये।"

एक सप्ताह के बाद उसे आजाद कर दिया गया, कार्सिका के प्रतिनिधि ने घोषित किया—

"बोनापार्ट निर्दोष है।"

इतना ही नहीं अपनी बात को पूरा करते हुए उसने यह भी कहा कि सेना में बोनापार्ट जैसे युवकों की ही जरूरत है।

उसके बाद बोनापार्ट को अचानक पता चला कि पाउली अब अंग्रेजों की सहायता ले रहा है और कार्सिका को फ्रांस बनाने के लिये योजना बना ली गयी है। वह उत्सुकता के साथ अभियान आरम्भ होने के लिये आदेश के आने का इंतजार कर रहा है।

नेपोलियन को एक बार फिर निराशा का सामना करना पड़ा।

टाउलन के युद्ध में विजय प्राप्त करना, समुन्द्र तट की सफलतापूर्वक किले बंदी करना, यह सब उसने कार्सिका के विरुद्ध अभियान पर नज़र रखकर किया था। फिर भी उसे प्रभारी नहीं बनाया गया।

नेपोलियन पर इस बात का संदेह किया जाता रहा कि प्रतिक्रिया आरम्भ करने में उसी का हाथ है। उसे उसके साथियों से अलग करने के लिये उसकी नियुक्ति ऊँचे पद पर कर दी गयी। यह उसके लिये अपमान की बात थी कि उसे सेनापति का पद देकर उसका तबादला कर दिया गया था।

नेपोलियन के पास अब कोई दूसरा रास्ता नहीं बचा था। अतः वह नई-नई योजनाएं बनाने लगा। परन्तु उसके पास साधनों का अभाव था।

उसके पास तोपें नहीं थीं और बिना तोपों के शत्रुओं को हराना असम्भव था। सालिसेटी ने उस पर कई आरोप लगाये। सालिसेटी को उसकी गलती का एहसास कराते हुए उसने लिखा—

"तुम मेरे बारे में, मेरे सामर्थ्य के बारे में बहुत कुछ जानते हो; मैं दुश्मनों से अपना प्रतिशोध लेने में सक्षम हूँ। फिर भी मैंने ऐसा नहीं किया तो बेहतर रूप किसने अदा किया मैंने या तुमने? तुमने मेरे विरोध में बातें कहीं तुम्हें चाहिये कि तुम पश्चाताप करो। इसके लिये तुम्हें किसी अन्य स्थान पर जाकर अपने राज्य के लाभ के लिये एकमत होकर विचार करना चाहिये। तुम्हारे मेरे विपरीत व्यवहार करने के पश्चात भी मैं तुम्हारे खिलाफ गवाही नहीं दूँगा और तुम्हारे रहस्य को रहस्य ही रहने दूँगा।"

बोनापार्ट इतनी उदासी व निराशा में घिरा हुआ था कि वह अपने दोस्तों के साथ भी मजाक में भाग नहीं लेता था। वह हमेशा खामोशी में डूबा रहता था और शांत रहता था।

कई बार नेपोलियन इतना भावुक हो जाता था कि बह निराशा की ओर जाने लगता था। किसी भी इंसान के लिये यह जोखिम भरा हो सकता है, जो हर पल हर कदम पर खुद को दुःख से निकाल कर सुख प्राप्त करना चाहता हो और जीवन में ऊपर जाना चाहता हो। उसने एक वार यह शब्द कहे थे—

"जीवन एक मामूली तुच्छ स्वप्न है जो मिट जाता है।"

नेपोलियन आशा की ओर

समय बीतने लगा। एक नये युद्ध मन्त्री की नियुक्ति हो चुकी थी जो कि इटली की सीमा पर बहुत सारे परिवर्तन चाहता था। उस पर चर्चा होने लगी।

यह चर्चा तब तक हुई जब तक उनके मस्तिष्क में नेपोलियन बोनापार्ट का

नाम नहीं आया। अन्त में उन्होंने बोनापार्ट को युद्ध के कार्य काल में बुलाया। वह एक अनुभवी योद्धा था। कई वर्षों से वह इटली की सीमाओं और उसके समुन्द्री तटों से परिचित था।

अब वह उत्तरी इटली में रहते हुए आस्ट्रिया तथा सर्बिनिया के खिलाफ अभियान चलाने के लिये विस्तारपूर्वक योजना बना रहा था। उसके अनुभव को आधार बनाकर कई मुद्दों की पुष्टि कर दी गयी।

नेपोलियन की प्रभावशाली योजना को सुनकर सभी मन्त्री प्रभावित हुए थे। उसकी योजना थी कि फरवरी तथा जुलाई के महीनों के बीच में लम्बार्डी की विजय के बाद मन्तुआ को आस्ट्रिया से छीनना बहुत जरूरी था। इसके बाद इटली की सेना को उत्तर की ओर कूच करना होगा और टायरल में अपना सहयोग करने वाली सेना के साथ मिल कर जाना होगा तब वियना पर चढ़ाई करनी चाहिये। इस तरह वहाँ आतंक फैल जायेगा और वहाँ के राजा के पास सन्धि के अलावा दूसरा मार्ग नहीं बचेगा।

उसकी इस योजना से प्रभावित होकर मन्त्री ने उससे ये शब्द कहे थे—



क्रांतिकारी विचारधारा वाला नेपोलियन

"सेनानायक! तुम्हारी ये सोच बुद्धिमत्ता तथा साहस से भरी हुई है। फिर भी इस योजना का अच्छी तरह से परीक्षण करना जरूरी है। इसलिये तुमसे ये निवेदन है कि कमेटी के लिये एक रिपोर्ट तैयार करो।"

इस पर नेपोलियन ने उत्साहपूर्वक कहा—"मेरी योजना पूरी तरह से तैयार है आप कहें तो मैं अभी आधे घंटे में लिख कर दे सकता हूँ।"

उसकी लिखी रिपोर्ट को नागरिक सुरक्षा समिति को सौंपी गई। समिति ने उस रिपोर्ट को सराहा।

नेपोलियन उस समय अपने भविष्य की तरफ जाने वाले मार्ग पर खड़ा था। यह उसकी जवानी का दूसरा मोड़ था। उसे यह मौका अचानक हाथ लग गया था।

नेपोलियन महान् उद्देश्य वाला इंसान था। वह अपने काम के प्रति पूरी तरह से समर्पित था। जब उसने अपना काम आरम्भ किया तो उसने प्रत्येक सावधानी को ध्यान में रखते हुए उसे अंजाम दिया।

अचानक गणतन्त्र की सभी सेनाओं से सम्बोधित अति गुप्त जानकारी उसके हाथ लग गयी, जिससे कई रहस्यों से पर्दा हट गया।

नेपोलियन के लिये टर्की को जीतना महत्वपूर्ण कार्य था। वह लगातार इसी बात पर जोर दे रहा था। वह अपने युद्ध कौशल को एक बार फिर आजमाना चाहता था; ताकि वह इसके बाद इस तकनीक का प्रयोग आस्ट्रिया तथा रूस के विरुद्ध युद्ध में कर सके।

नेपोलियन के विरोधी चाहे शक्तिशाली थे परन्तु वे उससे भयभीत रहते थे। यही कारण था कि उसके स्थानान्तरण के लिये दिये आवेदन को नामंजूर कर दिया गया।

इस प्रकार नेपोलियन का आवेदन बेकार गया, क्योंकि युद्ध अधिकारी उसे सीमा पर नहीं भेजना चाहते थे। एक बार फिर उसे अपने सपने टूटते नज़र आने लगे। वह हर तरह की विपरीत स्थिति में भी तोपखानों को सम्भाल सकता था।

नेपोलियन ने फिर भी आशा का साथ नहीं छोड़ा। उसे उम्मीद थी कि कमेटी के सदस्य दोबारा उसकी क्षमता व कार्यों को आंकेंगे।

लेकिन जल्दी ही उसे पता लग गया कि उसके द्वारा किये गये कार्य और उसकी कामयाबी का सेहरा किसी और के सिर पर बंधेगा और उसे कोई नहीं रोक सकता था। उसका नाम बड़े अधिकारियों की श्रेणी से हटा दिया गया।

लेकिन फिर भी नेपोलियन ने हिम्मत नहीं हारी उसे पूरा भरोसा था कि अच्छे दिन फिर से लौट कर आयेंगे। उसे जो पद दिया गया था उसे कोई छीन नहीं सकता था। जब सरकार बदलेगी तब पद भी उसके हाथ में आ जायेगा।

पन्द्रह दिन बाद ही वह समय भी आ गया जब शासन तन्त्र के मन्त्री और

सरकार के बीच संघर्ष आरम्भ हो गया। ऐसे संघर्ष की स्थिति तीन साल पहले भी बन चुकी थी। सम्मेलन के अध्यक्ष ने राष्ट्रीय गार्ड के साथ धोखा किया था। उसके बाद अध्यक्ष को जेल भेज दिया गया और नेपोलियन पर भी धोखे बाजी का आरोप था।

शाम के समय नेपोलियन सम्मेलन में पहुँचा। सम्मेलन के अध्यक्ष को जेल में डाल दिया गया था। अब उन्हें नये अध्यक्ष की जरूरत थी। सम्मेलन में खड़े लोगों और नेपोलियन को बहुत गुस्सा आने लगा जब उन्हें इस बात का पता चला कि सम्मेलन के उत्तराधिकारी के रूप में उसके एक विरोधी का नाम प्रस्तावित किया गया है।

जबकि वह सोच रहा था कि उम्मीदवारों की सूची में उसका नाम भी लिखा हुआ है।

वह सोच रहा था कि जनता के खिलाफ सेना का नेतृत्व करने वाला क्या जनता की नज़रों में सम्मान पा सकेगा?

सूची में उसका का नाम न होने के बाद उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे?

भली भान्ति सोच-विचार करने के बाद उसने कमेटी के सदस्यों के सामने अपना नाम पेश किया। क्योंकि वह जानता था कि समय बहुत कम है और यह भी सम्भव था कि कुछ ही घंटों में युद्ध छिड़ जाये; इसलिये उन्हीं कुछ घंटों में ही सभी तरह की तैयारी भी करनी थी।

बोनापार्ट ने कमेटी के सदस्यों से कहा—

"यदि इस पद पर आप मेरी नियुक्ति करते हैं तो मैं अपने पद की गरिमा को जरूर निभाऊँगा और अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करूँगा, लेकिन मेरी शर्त यही है कि अपने काम को पूरा करने की मुझे आजादी चाहिये।"

इस प्रकार समय गुजरता रहा, परन्तु किसी को किसी तरह की चिंता नहीं थी। कुछ समय बीत जाने पर प्रधान अधिकारी ने सुरक्षा के लिये बोनापार्ट को सूची सौंप दी।

पारसी जनता ने विरोध तो किया लेकिन यह विरोध मौखिक ही था। इसके अलावा किसी तरह का आन्दोलन नहीं हुआ। संघर्ष के लिये तत्पर एक ही व्यक्ति दिखायी देता था और वह था नेपोलियन बोनापार्ट।

मुराट एक सेना की टुकड़ी का अधिकारी था, उसे प्रधान बना दिया गया था।

एक दिन सुबह ही सुबह नेपोलियन को तोपों की गड़गड़ाहट सुनायी दी। यह तोपें उसके मित्रों द्वारा लायी गयी थीं। नेपोलियन समझ गया कि मुराट व उसकी

सेना विजयी होकर आयी है, इसीलिये उसने बटालियन को दो घंटे में तैयार होने का आदेश दे दिया।

युद्ध के लिये लगातार सैनिकों को उत्साहित किया जा रहा था। उन्हें आगे बढ़ने के आदेश दिये जा रहे थे। स्थिति भयानक होती नज़र आने लगी थी युद्ध रुक नहीं रहा था। सेना यह ठान चुकी थी कि यही मौका है। शायद यह मौका फिर नहीं मिलेगा।

नेपोलियन एक तोप सहित सेना का अधिकारी था। पहली बार नेपोलियन ने तोप दागने का आदेश दिया परन्तु जल्द ही बरास ने आदेश वापिस ले लिया।

फिर भी दो घंटे तक भीषण युद्ध होता रहा। तोपें गरजती रहीं। सड़कों पर भीड़ इधर-उधर भागने लगी। पूरे दो घंटों में पूरी सड़कें खाली हो गयीं।

इस युद्ध में नेपोलियन की जीत हुई। बोनापार्ट का स्वागत जोर शोर से किया गया। उसका स्वागत उसी प्रकार से हुआ था जैसे किसी देशभक्त का स्वागत किया जाता है। लेकिन फिर भी उसे अपनी जीत महत्वपूर्ण नहीं लग रही थी।

नेपोलियन इस जीत को मामूली जीत ही मानता था, इसलिये उसने अपनी प्रशंसा की ओर ध्यान नहीं दिया। भीड़ के लोगों में उसकी छवि एक नायक की नहीं थी बल्कि वे उससे घृणा करने लगे थे। इस युद्ध में कई महिलाओं के साथ कुछ बच्चों को भी अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था।

नेपोलियन अब एक धनी व्यक्ति बन चुका था। अब उसके पास गाड़ियाँ व नौकर चाकर थे। फिर भी वह अपने लिये नहीं अपने रिश्तेदारों के लिये कुछ करना चाहता था। उसके भाइयों को उच्च्व पदों पर नियुक्त किया गया। उसकी माँ को भी अपने पुत्र पर गर्व हो रहा था। जोसेफ को सात पदों का प्रस्ताव दिया गया।

फिर नये जनरल इशियों की नियुक्ति हुई। नियुक्त होते ही उसने एक आदेश जारी किया कि किसी को भी शस्त्र रखने की अनुमति नहीं दी जायेगी। इसीलिये घर-घर की तलाशी ली जाने लगी।

तभी एक बारह साल का बच्चा कार्यालय पहुँच कर कहने लगा कि उसकी माँ की जबरन छीनी हुई तलवार उसे वापस दी जाये। वह उसके पिता की तलवार है।

नेपोलियन ने उस बालक की भावनाओं की कद्र करते हुए तुरन्त ही कार्यवाही का आदेश दिया। फलस्वरूप उस बालक की माँ की तलवार वापस लौटा दी गयी।

खुश होकर उस बच्चे की माँ धन्यवाद देने के लिये नेपोलियन के पास पहुँची। नेपोलियन उसकी सुन्दरता को देख कर दंग रह गया।

❑



नेपोलियन का विवाह

जीत से उत्साहित होकर नेपोलियन अपने परिवार से भेंट करने पहुँचा।

माँ लितीजिया ने आगे बढ़कर अपने बहादुर बेटे को सीने से लगा लिया और स्नेहित शब्दों में कहा—"मुझे अपने बहादुर बेटे पर गर्व है।"

इसी प्रकार से उसके सभी भाई बहन उसके गले मिले और उन्होंने नेपोलियन की खूब प्रशंसा की।

तत्पश्चात् नेपोलियन ने कहा—"अभी मेरा संकल्प पूरा नहीं हुआ है। मैंने अपनी मातृ-भूमि कार्सिका को फ्रांस की दासता से मुक्ति दिलाने का संकल्प किया हुआ है...मैंने प्रयास भी किया था, किन्तु मेरा प्रयास असफल रहा। लेकिन चिंता की बात नहीं है क्योंकि फ्रांस के हालात तेजी से बदल रहे हैं, जिस कारण हितैषी एवं द्विवेषी में अन्तर कर पाना कठिन हो गया है। जिस पद पर मेरी नियुक्ति हुई है उस पद की गरिमा को बनाये रखने के लिये मुझे केवल कार्सिका का ही नहीं बल्कि पूरे फ्रांस की रक्षा का दायित्व निभाना पड़ेगा। दुश्मनों की नज़र फ्रांस पर टिकी है। ऐसे में यदि मैं कार्सिका को स्वतन्त्रता दिलाने का प्रयास करता हूँ तो मुझे फ्रांस के साथ-साथ अन्य विदेशी ताकतों का भी मुकाबला करना होगा। जिसके लिये हमारे पास पर्याप्त साधन भी उपलब्ध नहीं हैं।"

"यह ठीक नहीं है बेटे।" मां ने कहा—"समय बड़ी तेजी से बदल रहा है, फ्रांस की क्रान्ति ने तुम्हें एक महान योद्धा के रूप में उभारा है...कार्सिका मुक्ति अभियान छोड़कर इतनी बड़ी उपलब्धि को मत गंवाओ। फ्रांस के दुश्मनों को युद्ध भूमि में परास्त कर अपनी महानता तथा बहादुरी का परिचय दो ताकि मैं तुम पर और गर्व कर सकूँ। यही मेरी हार्दिक इच्छा है।"

"माँ अब तक मैंने जो कुछ भी किया यह सब तुम्हारे संस्कार और आशीर्वाद का ही सुफल है। यदि यह सब मेरे साथ न होता तो मैं भी अन्य कार्सिका वासियों की भान्ति मजदूरी कर रहा होता।"

नेपोलियन ने यह कहते हुए अपनी माँ के चरण स्पर्श किये। फिर उसने अपने भाई जोसेफ से कहा—

"जोसेफ! तुम मेरा दाहिना हाथ हो, तुम्हारे सहयोग के बिना मैं आगे न बढ़ सकूँगा।"

"सहयोग नहीं...तुम हमें आदेश दो...।"

"भाई, मैं दुश्मनों से युद्ध करने जाऊँगा। तुम मेरे बाद माँ और परिवार का ध्यान रखना। धन की हमारे पास कमी नहीं है और न ही अब भविष्य में कभी होगी, मैं फ्रांस के विरुद्ध उठ रहे दुश्मनों के सिर को कुचल कर फ्रांस की सीमा का विस्तार करना चाहता हूँ।"

"यह तो बहुत अच्छी बात है भाई, हर युद्ध हमारे वैभव में तो वृद्धि करेगा ही साथ ही आपके साथ-साथ हमारी भी मान प्रतिष्ठा को बढ़ायेगा।"

"हाँ भाई!" नेपोलियन बोला—"हमें फ्रांस की जनता का विश्वास जीतना है। उसके बाद हमारे पास कोई अभाव नहीं रहेगा। वह दिन दूर नहीं जब लोग मुझे एक महान नायक और अपने आदर्श के रूप में मान्यता देंगे। मेरी महत्वाकांक्षा मुझे अवश्य ही प्रसिद्धि के उस शिखर पर पहुँचा देगी, जहाँ से मुझे पूरा विश्व देखेगा। मैं महत्वाकांक्षी जरूर हूँ, किन्तु मुझे सत्ता या धन का लोभ नहीं। मैं दुनिया को सिर्फ यह बताना चाहता हूँ कि जनता का प्रिय कैसे बना जाता है।"

नेपोलियन को अपने आपसे ज्यादा अपने परिवार पर विश्वास था। उनके सामने वह अपने मन के भावों को भी सरलता से उगल देता था। वह सच्चाई का पुतला था। झूठ बोलना उसे आता नहीं था।

सत्यप्रिय होकर भी नेपोलियन एक सत्य से अनभिज्ञ था। उसे नहीं मालूम था कि परिवार में चली आ रही विश्वास की अटूट परम्परा...जिसका निर्वाह करने में उसने पूरी निष्ठा से काम लिया था, उसे उसके अपने ही छिन्न-भिन्न कर डालेंगे। उसके भाई बहन स्वार्थवश उसकी प्राथमिकता को सिरे से ही नकार देंगे। जिनकी उसे हर पल चिंता सताती है, वही उसे पराया कर देंगे। उसका यही विश्वास एक दिन उसके विनाश का कारण भी बन सकता है।

बुद्धिमान और पारखी नज़र का होते हुए भी वह इन बातों को समझ न सका।

अभी नेपोलियन अपने भाई से बात कर ही रहा था कि उसकी माँ ने कहा—

"बेटे! मैं तुम्हारी इच्छा का सम्मान करती हूँ, किन्तु यह मत भूलना कि हमारी भी तुमसे कुछ अपेक्षाएं हैं।"

"तुम आज्ञा दो माँ!" नेपोलियन ने भावुकता भरे स्वर में कहा—"मैं अपना सिर काटकर भी तुम्हारे चरणों में रखकर गर्वित महसूस करूँगा।"

"अरे नहीं रे!" माँ ने स्नेह से उसका माथा चूमकर कहा—"ईश्वर तुम्हारा सिर सदैव, प्रत्येक परिस्थिति में गर्व से ऊँचा रखे। मेरी तो बस एक ही इच्छा है कि तेरा घर भी बस जाये। तेरा भी अपने भाइयों की तरह परिवार हो...पत्नी व बच्चे हों...बस तेरी शादी हो जाये।"

शादी का नाम सुनकर नेपोलियन महान् योद्धा होते हुए भी माँ के सामने

लजा गया और उसके मुंह से केवल एक ही शब्द निकला—"शादी?"

"हाँ रे!" वह बोली—"पूरे पच्चीस साल का हो गया है तू? क्या बुढ़ापे में शादी करेगा?"

"ठीक है माँ! यदि कोई लड़की मुझसे विवाह करने के लिये उपयुक्त लगेगी तो मैं तुरन्त तुम्हें सूचित कर दूँगा।"

माँ से यह वादा करने के बाद नेपोलियन ने कुछ समय वहीं अपने परिवार के साथ बिताया और उसके बाद वह माँ व भाइयों से विदा लेकर अपने सैनिक कार्यालय में लौट आया।

युद्ध के दिनों में जनरल ब्यूहरनेस को देशद्रोही मान कर फांसी दे दी गयी थी। फांसी से पूर्व उसने तीन माह का कारावास भी भोगा था। जेल से रिहाकर जिस दिन उसे फांसी दी गयी उसी दिन रोबेस्पीरी की हत्या हुई थी और बोनापार्ट को सजा हुई थी।

हालांकि ब्यूहरनेस के मित्रों ने उसकी पत्नी जोसेफिन की विपत्ति के समय में काफी मदद की थी किन्तु उसके दोनों बच्चों होरिये तथा युशीने की हालत अत्यन्त दयनीय थी।

इस भयंकर निर्धनता में जोसेफिन को अपनी सुन्दरता का सौदा करना आवश्यक हो गया था। पति की मृत्यु के कारण वह विवश थी।

जोसेफिन के पास धन का अभाव था। जनरल ब्यूहरनेस अपने परिवार के लिये धन के नाम पर कुछ जमा नहीं कर सका था। मजबूर जोसेफिन, अपने बच्चों की खातिर धन अर्जित करना चाहती थी।

एक दिन वह अपने पति ब्यूहरनेस की तलवार लेने सैनिक कार्यालय जा पहुँची। उस तलवार को वह नेपोलियन बोनापार्ट से ही प्राप्त कर सकती थी। क्योंकि उसी के आदेश का पालन करते हुए सैनिक उसके घर से तलवार ले गये थे और ले जाकर कार्यालय में जमा कर दी थी।

अतः वह नेपोलियन के पास गयी।

नेपोलियन उस समय अपने केबिन में बैठा अपने कार्यालय के आवश्यक कार्यों को निपटा रहा था। तभी केबिन के बाहर तैनात सैनिक ने नेपोलियन को जोसेफिन के आगमन की सूचना दी।

नेपोलियन ने जोसेफन को भीतर बुला लिया।

जोसेफिन के सुन्दर शरीर, आकर्षक काया और मासूम से दिखने वाले चेहरे को देखते ही वह उसके आकर्षण में बंध सा गया।

हालांकि जोसेफिन इतनी सुन्दर भी नहीं थी वह उम्र में भी नेपोलियन से बड़ी और दो बच्चों की माँ थी। फिर भी उसके चेहरे में जो मासूमियत थी वह

अनायास ही किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर लेने में सक्षम थी।

नेपोलियन एकटक उसके चेहरे को देखता रह गया। यूँ उसे अपनी ओर देखता पाकर जोसेफिन झेंप सी गयी और नीची नज़रें करके उसे पुकारा—"जनरल।"

जोसेफिन की आवाज भी उसके चेहरे की ही भान्ति मीठी थी। नेपोलियन उसके सम्बोधन पर हड़बड़ा सा गया और जल्दी से बोला—

"कहिये! मैं आपके लिये क्या कर सकता हूँ?"

नेपोलियन ने प्रश्न करते हुए इस बात का ध्यान रखा था कि उसकी आवाज में शहद की सी मिठास घुली रहे।

जोसेफिन ने नज़र उठाकर नेपोलियन की ओर देखा और बोली—"मैं अपने पति की तलवार लेने यहाँ आयी हूँ।"

"आप उसका क्या करेंगी?"

"यही सवाल मैं आपसे करती हूँ कि आप उसका क्या करेंगे?" जोसेफिन ने बिना झिझक पूछा।

"वह फ्रांस का बहादुर सिपाही था। उसकी तलवार हमारे लिये उसकी वीरता की निशानी है।" नेपोलियन ने समझाया।

"मगर जनरल! वह मेरे पति की धरोहर है, उनकी अन्तिम निशानी है। वह मेरे लिये बहुत महत्वपूर्ण है, मैं उसे अपने से दूर नहीं रख सकती।"

जोसेफिन की दिल की हालत को समझते हुए नेपोलियन ने उसे वह तलवार वापस कर दी।

वह नेपोलियन को धन्यवाद देती हुई खुशी-खुशी वहाँ से चली गयी।

उसके जाने के बाद नेपोलियन का मन चंचल हो उठा। वह सोचने लगा—"कितनी सुन्दर स्त्री है, उसका चेहरा कितना मासूम है और उसमें आकर्षण तो ऐसा है कि जो देख ले वह उसके आकर्षण में बंधता चला जाये। कौन कह सकता है कि वह विवाहित और तीस या उससे अधिक आयु की होगी।"



नेपोलियन की प्रेमिका और पत्नी जोसेफिन

नेपोलियन जोसेफिन की सुन्दरता से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उससे विवाह करने का निश्चय कर लिया। उसने जोसेफिन के बारे में अधिक छान-बीन करना भी उचित नहीं समझा।

जबकि पति की मृत्यु के पश्चात् जोसेफिन की स्थिति बहुत दयनीय थी। वह

अपना और अपने बच्चों का लालन-पालन करने के लिये अपने सुन्दर एवं आकर्षक शरीर का उपयोग कर रही थी। वर्तमान समय में वह बरास के साथ रहती थी और उसकी स्वामिनी थी।

उस औरत (जोसेफिन) का मित्र टैलियन उसके लिये वहाँ ग्राहकों को लाने का कार्य करता था। नेपोलियन पर जोसेफिन के रूप का जादू कुछ ऐसा चढ़ा कि उसने किसी बात की परवाह नहीं की और दिल के हाथों से मजबूर होकर वह एक दिन जोसेफिन के घर जा पहुँचा।

जोसेफिन ने उसका स्वागत किया। नेपोलियन की आंखें जोसेफिन की गरीबी व दरिद्रता से दो चार हुई तो उसका मन मोम की भान्ति पिघल उठा।

नेपोलियन ने काफी गम्भीरता से जोसेफिन से कहा--

"मैं आपसे कुछ निवेदन करना चाहता हूँ।"

उसके पास आने वाले उससे क्या चाहते थे यह बात वह अच्छी तरह से जानती थी। लेकिन जिस गम्भीरता से नेपोलियन ने उससे निवेदन किया था उसकी बात ही दूसरी थी।

वह स्वयं भी गम्भीर हो गयी और बोली—"जी कहिये!"

"पहले वादा कीजिये कि आप मेरी बात का बुरा नहीं मानेंगी।" नेपोलियन ने उसी गम्भीरता से कहा।

नेपोलियन की बात सुनकर जोसेफिन के चेहरे पर हल्की सी हंसी आ गयी। वह यही समझी कि उसका यह नया ग्राहक उससे कुछ कहने में इसलिये हिचकिचा रहा है कि शायद यह उसका पहला अवसर है जब वह किसी स्त्री से एकान्त में मिल रहा है।

इसीलिये उसने उसे उत्साहित करने के लिये कहा—

"मिस्टर नेपोलियन! आपको जो कुछ भी कहना है बेझिझक कहिये। मैं आपसे वादा करती हूँ कि मैं आपकी किसी भी बात का बुरा नहीं मानूँगी।"

तब नेपोलियन ने हिम्मत करके कहा—"क्या आप मुझसे विवाह करेंगी?"

"जी....?"

जोसेफिन उसका प्रश्न सुनकर बुरी तरह से सकपका गयी। उसे लगा जैसे आसमान टूटकर उसके सिर पर गिर पड़ा हो और किसी अनहोनी के कारण वह जीवित बच गयी। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि कोई उस जैसा विधवा और दो बच्चों की माँ को अपनाने वाला भी होगा।

उसके पास आने वाले वह भँवरें होते थे जो उसके शरीर का रस चूसकर फुर्र हो जाते थे। कोई उसे अपनाने वाला भी उसके पास आयेगा ऐसा तो वह सोच भी नहीं सकती थी।

और, जो व्यक्ति उसे अपनाने की बात कर रहा था वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं था, बल्कि फ्रांस का प्रसिद्ध योद्धा महानायक तथा वर्तमान रिपब्लिकन आर्मी का जनरल नेपोलियन बोनापार्ट था।

बड़ी मुश्किल से जोसेफिन ने स्वयं को सम्भाला और भरे कण्ठ से पूछा—"आप मेरे बारे में क्या जानते हैं?"

"यही की आपका नाम जोसेफिन है और आप ब्यूहरनेस की विधवा हैं।" नेपोलियन ने जवाब दिया और चुप हो गया।

"इसके अलावा मैं और बहुत कुछ हूँ।" वह बोली—"मैं दो-दो बेटों की माँ हूँ और उम्र में भी आपसे बड़ी हूँ।" कहते-कहते वह रो पड़ी।

उसकी आंखों में आंसू देखकर नेपोलियन बेचैन हो उठा। जल्दी से बोला—"क्षमा करना! मेरा इरादा आपका दिल दुखाने का नहीं था। मैंने बस वही कहा है जो मेरे मन की इच्छा थी, यदि आपको मेरी बात का बुरा लगा हो तो मैं माफी चाहता हूँ।"

"इसमें माफी मांगने की कोई बात नहीं है। मेरी दरिद्रता और विवशता को देखकर कोई भी दया खा सकता है।"

"आपकी सोच सिरे से गलत है।" नेपोलियन ने सरल भाव से कहा—"मैं आप पर कोई दया नहीं कर रहा हूँ। आप एक औरत हैं और औरत अपने आप में बहुत साहसी एवं सक्षम होती है। आप दया की पात्र नहीं हैं।"

"फिर आपने मेरे सामने यह प्रस्ताव क्यों रखा है?"

"इसका कारण दया नहीं बल्कि मेरे मन में उत्पन्न होने वाली प्रेम भावना है।" नेपोलियन ने अपने दिल का रहस्य खोलते हुए कहा—"मैं पहली नज़र में ही आपकी ओर आकर्षित हो गया था। आप से पहले मेरे मन में विवाह की इच्छा उत्पन्न नहीं हुई थी। मेरी माँ ने कुछ दिन पहले ही मुझे विवाह करने की स्वीकृति दी है। जिस दिन आपसे भेंट हुई मैं उसी दिन आप पर अपना दिल हार बैठा। यकीन मानिये मैंने आज तक किसी भी स्त्री को इस नज़र से नहीं देखा। मगर पता नहीं मुझे आपमें ऐसा क्या नज़र आया कि मैं अपने आपको रोक नहीं सका और अपने दिल की बात कहने आपके पास आ पहुँचा। यह भाग्य की विडम्बना है कि विधाता ने आपके साथ ऐसा खेल खेला और आपसे आपका पति छीन लिया। अब शायद उसी ईश्वर की इच्छा है कि मैं आपसे विवाह करके आपका घर खुशियों से भर दूँ।"

नेपोलियन की वाक्पटुता और स्पष्टवादिता ने जोसेफिन को सम्मोहित सा कर लिया। कुछ क्षणों के बाद वह बोली—

"मैं आपकी आभारी हूँ कि आपने मुझे इस योग्य समझा। किन्तु मेरी और आपकी आयु में अंतर है। मैं आपसे आयु में बड़ी हूँ।"



नेपोलियन की द्वितीय पत्नी मेरी लुइस ने नेपोलियन के पुत्र को जन्म दिया

"मुझे इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ता।" नेपोलियन ने दृढ़ता भरे स्वर में कहा—"मुझे केवल आपकी स्वीकृति चाहिये।"

"जनरल! आप भावुक होने के साथ-साथ नेक और बहादुर इंसान हैं। मैं आपकी इच्छा का सम्मान करती हूँ, किन्तु मुझे डर है...।"

"किस बात से डर रही हो तुम? क्या मुझ पर विश्वास नहीं है तुम्हें?"

"यह बात नहीं है।" वह बोली—"मुझे आप पर पूरा विश्वास है लेकिन मुझे डर अपने आपसे है...क्या एक अबला, टूटी हुई नारी आपको संतुष्टि प्रदान कर पायेगी?"

"आप ऐसा क्यों सोचती हैं?"

"इसलिये कि मैं एक विधवा हूँ और दो बच्चों की माँ भी हूँ।"

"इसमें आपका क्या दोष है।" वह बोला—"आप जैसी भी हैं मुझे पसंद हैं और आप से वादा करता हूँ कि आप मुझसे विवाह करने के बाद स्वयं को सौभाग्यशाली समझने लगेंगी। आपके अंदर की निराशा आशा में बदल जायेगी।"

"किन्तु मेरे बच्चे...!"

"उनकी आप चिंता न करें। जब आप मुझसे विवाह कर लेंगी तो उसके लालन-पालन की जिम्मेदारी मेरी भी होगी। हम दोनों मिलकर उन बच्चों की देखभाल करेंगे। मैं आपको वचन देता हूँ कि उनके साथ कभी कोई अन्याय नहीं होने दूँगा। वो खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।"

इस प्रकार नेपोलियन ने जोसेफिन से विवाह करने में सफलता हासिल कर ली। विवाह की अंगूठी पर जो शब्द अंकित थे वे इस प्रकार थे—

"भाग्य के नाम।"

विवाह के दो दिन बाद नेपोलियन पेरिस चला गया। रास्ते में वह जहाँ-जहाँ भी रुकता था वहाँ से वह अपनी पत्नी को प्रेम-पत्र लिखता था। उसके बाद वह यूरोप की सीमाओं से दूर नाईस में अपनी फौज में शामिल हो गया।

❑



इटली पर विजय

नेपोलियन को बल से अधिक उसकी योजनाओं पर विश्वास था। वह एक कार्यकुशल व्यक्ति था। उसके पास पुरानी समस्याओं को हल करने का गुण भी था। हनीबल ने एल्प्स की खाड़ी को पार किया था। नेपोलियन उसके चारों तरफ घूमकर आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा था।

उसकी योजना थी कि वह शत्रु को अजैनाइन में एल्प्स के एकदम पास ही किसी स्थान पर धर पकड़े ताकि वह एल्प्स की खाड़ी में आसानी से प्रवेश कर सके।

इसके लिये उसे गरमी का इंतजार करना पड़ता। साल के आरम्भ में बर्फ ठोस होती है, जिससे भू-खलन का खतरा कम होता है। इसलिये देर करना ठीक नहीं था। उस समय उसे बिना किसी डर के आगे बढ़ना था क्योंकि दुश्मन बर्फ के बने घरों में सो रहे थे। उनसे उन्हें कोई खतरा नहीं था।

बर्फ के पिघलने से पहले शत्रु युद्ध के लिये तैयार नहीं था। लेकिन फ्रांस के सैनिक सजग थे। यह वह समय था जब पेरिस की स्थिति ठीक नहीं थी और वह विनाश के कगार पर खड़ा था। ऐसे समय में नेपोलियन ने अपनी सेना का साहस बढ़ाते हुए कहा था—

"इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारी सेना के सैनिक नंगे भूखे हैं; सरकार भी हमारे लिये कुछ नहीं कर सकती। मगर सरकार हमारी ऋणी रहेगी। पर इसका यह मतलब नहीं है कि हमें कोई लाभ नहीं होगा। मैं आप सब लोगों को ऐसी जगह ले जाऊँगा जो जगह संसार में सबसे अधिक उपजाऊ है। वहाँ के नगर सम्पन्न एवं प्रगतिशील हैं। वहाँ पहुँचकर आप सब लोगों को बहुत कुछ मिलेगा।"

तीन साल से भी ज्यादा का समय गुजर चुका था जब नेपोलियन अपने सैनिक साथियों के साथ ऊँची-ऊँची पहाड़ियों के शिखर पर तम्बू गाड़ पड़ा रहा था। इन तीन सालों में उसके एक चौथाई सैनिक अस्पताल में जख्मी पड़े थे, लगभग इतने ही मारे जा चुके थे या फिर युद्धबंदी बनाये जा चुके थे।

नेपोलियन अपने अभियान को विस्तारपूर्वक तथा जल्दी-जल्दी चलाता था। अपने इस अभियान के साथ वह तोपों और लड़ाकू सेना को भी चलाता था। दोनों का समान रूप से निरीक्षण करता था। साथ ही सफलता तथा असफलता का विश्लेषण करना न भूलता था।

उसके पास लड़ाई के योग्य संसाधनों का अभाव था। उसके पास केवल चौबीस पहाड़ी बंदूकें, चार हजार घोड़े, चांदी के तीन लाख फ्रैंक तथा तीस हजार आदमियों के लिये एक महीने तक आधा पेट भरने लायक खाद्य सामग्री थी और उसे इन्हीं अल्प संसाधनों के बल पर इटली पर विजय प्राप्त करनी थी।

वह एक कुशल संगठक की भान्ति कार्य कर रहा था। उसके सैनिकों की स्थिति दयनीय थी। उसने उन लोगों के बीच में कुछ किसानों, कुछ राजदरबारियों तथा कुछ गवैये भरकर उस सेना को रिपब्लिकन सेना का रूप देना चाहा था और इस काम को उसने सफलतापूर्वक पूरा भी किया।

उसके बाद नेपोलियन ने सेना को इकट्ठा करके पहला आक्रमण करने के लिये तैयार किया और इसके बाद आक्रमण को देखा।

फिर दो युद्ध हुए और दोनों में उसकी हार हुई। यही टुकड़ियाँ अग्रिम रक्षा पंक्तियां थीं। यह सेना पूर्ण रूप से प्रशिक्षित थी तथा युद्ध कौशल में पारंगत थीं मगर फिर भी उन्होंने बड़े-बड़े युद्ध नहीं लड़े थे। इसलिये उन्हें महान् युद्धों का लड़ने का अनुभव नहीं था।

कुशल अधिकारी होने के साथ-साथ नेपोलियन एक अच्छा घुड़सवार भी था। युद्ध के समय वह अपनी पत्नी जोसेफिन का चित्र अपने पास रखता था जो एक फ्रेम में मढ़ा हुआ था।

युद्ध के समय नेपोलियन तंग रास्तों से होता हुआ आगे बढ़ रहा था। अचानक उसकी पत्नी के फोटो का फ्रेम टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया। इस पर नेपोलियन अत्यधिक गम्भीर हो गया और उसने ब्राउरिनी से कहा–

"फ्रेम का शीशा टूट गया है। यह इस बात का संकेत है कि या तो मेरी पत्नी स्वस्थ नहीं है या फिर वह मेरे प्रति वफादार नहीं रही है, इसलिये आगे बढ़ो।"

नेपोलियन ने अपने अभियान को सफल बनाने के लिये जो योजना बनाई थी उसमें कुछ धोखा धड़ी का भी समावेश था। उसने अपने दुश्मन को धोखा देते हुए अपने पास बहुत बड़ी सेना होने की चेतावनी दी थी। जबकि उसके पास अधिक बड़ी सेना नहीं थी और जो भी थी वह दोनों ओर को बिखरी हुई थी। जिसका उपयोग नहीं किया जा सकता था।

इस तरह नेपोलियन ने खुद को वचनबद्ध साबित करते हुए सार्डिनिया के राजा को सन्धि करने पर तथा राज्य का सब कुछ उसे समर्पित करने के लिये विवश कर दिया था।

उसके सैनिक भी यह देखकर हैरान रह गये थे कि कैसे उसने पन्द्रह दिनों में ही अपना वचन पूरा कर दिया। इस प्रकार सैनिकों का विश्वास उस पर और भी दृढ़ हो गया।

वह इटली का दुश्मन था फिर भी उसे इटली के नाम से कुछ भी लेना-देना नहीं था। वह तो आगे अपने नाम को एक नया रूप देने की सोच रहा था।

हर कोई इस बात से अन्जान था कि नेपोलियन एक के बाद एक विजय प्राप्त करेगा। कोई भी नहीं जानता था कि उसकी जीत कैसे हुई? नेपोलियन ने अपनी जीत का श्रेय सबसे पहले अपने स्वास्थ्य और अपनी आयु को दिया। वह बिना थके लगातार घुड़सवारी कर सकता था।



नेपोलियन बिना थके अन्य लोगों से अधिक घण्टे घुड़सवारी करता था

सत्ताइस साल की उम्र में ही नेपोलियन ने इतना ऊँचा पद प्राप्त कर लिया था। उसने एक बार फिर साबित कर दिया था कि वह एक दिन अपने अनुसार आजादी से राज्य चलाने वाला राजा बनेगा।

इस संसार का भी यही नियम है कि जिस व्यक्ति के पास शक्ति होती है, सामर्थ्य होता है वही नेता बन सकता है तथा जो असमर्थ होता है उसे शक्तिशाली व्यक्ति के अधीन रहना पड़ता है।

नेपोलियन ने शक्ति का नया दृष्टिकोण प्रकट किया था जो सराहनीय था। इस पृथ्वी पर मनुष्य को जन्म के आधार पर नहीं कार्य के आधार पर फल मिलता है।

इटली का युवा वर्ग स्वतन्त्रता के लिये व्याकुल था। इटली की एकता के लिये निरर्थक शोर-शराबा करने वाले नेता भी थे। यद्यपि उस समय तक क्रान्ति जंजीरों से जकड़ी हुई थी तथापि वह जंजीर राजप्रासाद के दरवाजों पर खड़खड़ा रही थी। ऐसे में भी लोग आक्रमणकारी सेना का स्वागत करने के लिये तैयार थे।

इधर नेपोलियन ने अपनी भूखी सेना को व्यवस्थित एवं शांत रखने के लिये सह-सम्मान एक घोषणा पत्र पढ़ा है—

"मेरे बहादुर सैनिकों! तुम सौगन्ध लो कि इन अधिकार किये लोगों को कभी कष्ट नहीं पहुँचाओगे, याद रहे यदि तुमने ऐसा नहीं किया तो फिर कभी तुम इन लोगों का विश्वास नहीं जीत पाओगे। तब तुम्हारी जीत, तुम्हारा साहस, युद्ध में मारे गये हमारे साथियों का बलिदान, सब कुछ व्यर्थ चला जायेगा। इतना

ही नहीं हमें सम्मान तथा यश भी नहीं मिलेगा। हमारे जनरलों को अनुशासनहीन सेना का अधिकारी कहकर पुकारा जायेगा।"

मगर ऐसा हो न सका।

नेपोलियन के विशेष आग्रह के बावजूद सैनिकों को अनुशासन में रखना बहुत कठिन हो गया। सम्पूर्ण अभियान में लूट की समस्या को लेकर नेपोलियन बहुत दुःखी था। वह अपने जनरलों को बार-बार सिपाहियों से यह बताने का आदेश दे रहा था—

"चोरी का माल चाहे घोड़ा हो या खच्चर, अगर चौबीस घंटे के भीतर ही भीतर नहीं लौटाया गया तो उसे गोली से उड़ा दिया जायेगा।"

नेपोलियन ने उस समय की स्थिति के बारे में अपनी डायरी में लिखा है—

"अब लूट मचाना व्यर्थ है, क्योंकि अभाव से पीड़ित सेना की प्यास बुझा दी गयी है। निःसन्देह इन बेचारों ने बहुत कष्ट झेले हैं। इन्होंने एल्प्स पहाड़ी चढ़ते-चढ़ते तीन वर्ष बिता दिये और अब मैं इन्हें इस सुखद भूमि में ले आया हूँ। मैंने देखा है कि भूख से व्याकुल एक-एक सिपाही इतनी आँते पर उतर आया है कि मानवता को भी शर्म से सिर झुकाना पड़ता है। मैं अपने आदेश को यथावत रखता हूं, क्योंकि मैं डकैतों का कमाण्डर नहीं कहलाना चाहता हूँ। कल मैं कुछ निजी व शासकीय स्थानों पर जाऊँगा तथा चर्च में भोजन की व्यवस्था कराऊँगा। मुझे विश्वास है कि एक या दो दिन के भीतर पुनः अनुशासन लागू हो जायेगा। इटली हमारे सिपाहियों की शान्ति व साहस से दंग है। यह नाजुक क्षण है, इस स्थिति ने मुझे हिला दिया है। मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि परास्त इटली ने मेरे सैनिकों के साथ बुरा व्यवहार नहीं किया।"

अन्त में वास्तव में नेपोलियन ने अपनी सूझ-बूझ तथा बुद्धिमत्ता से अपने सैनिकों पर काबू पा लिया था।

नेपोलियन ने इटलीवासियों को संदेश देते हुए कहा—

"इटली के नागरिकों! फ्रांस की सेना तुम्हारी मित्र है। यह तुम्हें परतन्त्रता की जंजीरों से मुक्ति दिलाने आयी है। इस पर विश्वास रखो। तुम सब नागरिकों की सम्पत्ति को कोई खतरा नहीं है। और तुम्हारी धार्मिक भावनाओं तथा रीति-रिवाजों का भी पूरा सम्मान किया जायेगा।"

❑



नेपोलियन का उत्कर्ष

नेपोलियन ने अपने कार्यों से स्वयं इतिहास रचा। वह हमेशा से इतिहास पढ़ने में रुचि रखता था। उसने सम्पूर्ण यूरोप का वातावरण ही बदल दिया था। वह अपनी सेना को अपने देश के लिये मर मिटने के लिये उत्साहित कर रहा था। उसकी पहली जीत का श्रेय भले ही उसकी चतुराई भरी योजनाओं को दिया जाये फिर भी बहुत बड़ा श्रेय उसकी मधुर वाणी को भी देना चाहिये। युद्ध के समय वह अपने सैनिकों को आज़ाद छोड़ देता था। उन्हें लगातार उत्साहित करता रहता था। मिलान में उसके द्वारा लिखा गया संदेश इस प्रकार है—

"सैनिकों! तुम्हें एल्पाइन की ऊँचाइयों से सैलाब की मानिन्द आक्रमण करना है, मिलान तुम्हारा है, रोम कई शताब्दियों से गुलामी के कारण उसी तरह शक्तिहीन हो चुका है। हमें 'कैपिटल' को पुनः बसाना है और वीरों को दोबारा बनाने के लिए रोम के सोये हुए नागरिकों को दोबारा जगाना है। इसके लिये हमारा अभियान चल रहा है। यह सब आप सैनिकों की जीत का ही फल है जो कि भविष्य के नागरिकों को हैरान करेगा।"

नेपोलियन जिस तरह से मीठे लुभावने शब्दों का प्रयोग अपने दुश्मनों, दोस्तों, जनता व सिपाहियों के साथ करता था वैसा किसी सेनानायक ने नहीं किया होगा। वह आदेश नहीं देता था अपितु उसके स्थान पर वह लोगों के हृदय में जगह बनाकर उन्हें प्रभावित करना जानता था। वह चीख-चीख कर सिपाहियों से कहता—

"तुम डरपोक हो या विजेता।"

एक दो माह में वह उन्हें याद दिलाता—"वे आरकोला के विजेता हैं। हमने 'पो' नदी को पार कर लिया है तथा दूसरा अभियान शुरू कर लिया है।"

नेपोलियन एक युवा वीर था। कोई भी उस पर आक्रमण करने का साहस नहीं कर सकता था।

नेपोलियन बोनापार्ट इटली के सन्धि पर हस्ताक्षर करने वाला पहला जनरल था। जबकि परम्परा के आधार पर सन्धि करने से पूर्व निदेशकों को सूचना दी जाती थी और निर्देशानुसार संधि पत्र तैयार किये जाते थे। संधि से पूर्व नेपोलियन ने निदेशकों को सूचना देना उचित नहीं समझा था। सन्धि के बाद ही उसने यह सूचना निदेशकों को भेजी थी। उसकी सूचना मिलते ही निदेशक हिल उठे थे उन्होंने तुरन्त सालिसिटी

को नेपोलियन के पास भेजा। सालिसिटी सरकारी आयोग का सदस्य और उसका कार्सिका का साथी था।

जब वह बोनापार्ट के पास आया तो बोनापार्ट उसके शासन के अधिकार पर कोई ध्यान नहीं दिया और सर्डीनिया की सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये। यह उसका पहला कदम था, जिससे उसके कूटनीतिज्ञ होने का पता चलता है। उसका मानना था कि किसी भी मामले में जल्दी फैसला लेना ही बेहतर होता है।

जिस दिन युद्ध होना था उस दिन सालिसिटी को ऊपर से एक आदेश प्राप्त हुआ। उस आदेश के अनुसार नेपोलियन को केलरमैन से निर्देश प्राप्त करके फिर सेना का संचालन करना था। केलरमैन उन दिनों फ्रांस का वरिष्ठ सेनानायक था।

नेपोलियन ने फ्रांस सरकार के दबाब का उत्तर इस प्रकार दिया—

"यदि आप मेरे रास्ते में रोड़ा बनते हैं या फिर मेरे द्वारा किये कार्यों को अपील का विषय बनाते हैं तो मुझसे किसी प्रकार के अच्छे व्यवहार की आशा करना बेकार है। यह आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है कि आपको अपने सेनानायक पर पूर्ण रूप से विश्वास होना चाहिये। यदि मुझ पर विश्वास नहीं किया जाता तो बिना किसी शिकायत के मेरा यह प्रयास रहेगा कि मैं आपके विश्वास को किसी अन्य उपाय से जीतने का प्रयास करूँ। प्रत्येक सैनिक का युद्ध करने का अपना एक ढंग होता है। इस बात पर मुझे कोई संदेह नहीं है कि जनरल केलरमैन को मुझसे अधिक अनुभव है और वह सेना का संचालन भी मुझसे अच्छे ढंग से कर सकते हैं। अगर एक साथ रहकर कार्य हमसे सम्पन्न नहीं होगा। फिर यदि आपका पूरा व अखण्ड विश्वास मुझे प्राप्त नहीं है तो मैं देश की सेवा नहीं कर सकूँगा। मैं जानता हूँ कि इस तरह का पत्र लिखने के लिए मुझे अत्यधिक साहस जुटाना पड़ रहा है, क्योंकि मेरे इस पत्र से मुझ पर महात्वांकाक्षी व अहंकारी होने का आरोप आसानी से लगाया जा सकता है किन्तु अपनी भावनाओं को इस प्रकार से व्यक्त करने के लिये आपने ही मुझे विवश किया है। मैं ऐसे व्यक्ति के साथ मिलकर देश सेवा नहीं कर सकता जो खुद को यूरोप का सर्वश्रेष्ठ सेनानायक मानता हो। संक्षेप में मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि एक अच्छा सेनानायक दो बुरे सेनानायकों से बेहतर है।"

निदेशकों को जब नेपोलियन का यह पत्र मिला तो वे उसे पढ़कर दंग रह गये। आपसी विचार विमर्श के बाद उन्हें महसूस हुआ कि सेना का संचालन जैसे कार्य का विभाजन करने पर बल देना उचित नहीं है। फिर नेपोलियन ने इस दौरान जो सेवायें दी थीं वो बहुत ही महत्त्वपूर्ण थीं। अतः उसके निवेदन को स्वीकार कर लिया गया।

नेपोलियन अब खुद को स्वामी समझने लगा था। अब वह स्वयं सेनाध्यक्ष

भी था और सेना की शक्ति एवं दूसरी जरूरतों के बारे में भी निर्णय लेता था।

नेपोलियन के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने आस्ट्रिया के विरुद्ध इटली में अनेक चमत्कार किये। आस्ट्रिया पराजित हुआ और इटली के एक बड़े भू-भाग पर नेपोलियन ने अधिकार कर लिया।



आस्ट्रिया को पराजित कर इटली के एक बड़े भू-भाग पर अधिकार कर लेने वाला नेपोलियन

नेपोलियन की विजयों के फलस्वरूप फ्रांस विरोधी यूरोपीय राज्यों का प्रथम गुट टूट गया। नेपोलियन का यश यूरोप भर में फैल गया।

केवल इंग्लैंड ही एक मात्र ऐसा देश था जो अभी फ्रांस के विरुद्ध टिका हुआ था। इंग्लैंड को हरा पाना इतना आसान नहीं था; क्योंकि फ्रांस की नौ-सेना इंग्लैंड की अनुभवी सेना के सामने बहुत कमजोर थी।

अतः नेपोलियन ने इंग्लैंड को पराजित करने की योजना बनायी; और एक विशाल सेना लेकर फ्रांस से रवाना हुआ।

अंग्रेज लोग नेपोलियन की बढ़ती ख्याति और उसकी बढ़ती महत्वाकांक्षाओं से अनभिज्ञ नहीं थे। उन्होंने नेपोलियन की बढ़ती हुई गतिविधियों पर पैनी दृष्टि रखी हुई थी। अतः जब उन्हें नेपोलियन की योजना की भनक मिली तब उन्होंने नेपोलियन के मनसूबों को खाक में मिलाने के उद्देश्य से एडमिरल नेलसन को भेजा।

एडमिरल नेलसन भी कुशल नेतृत्व वाला सेनानायक था। नील नदी के मुहाने पर उसने नेपोलियन की सेना को घेरकर उस पर आक्रमण कर दिया।

दोनों ओर की सेनाओं में जोरदार भिड़न्त हुई और नेपोलियन की इस युद्ध में बुरी तरह हार हुई। उसकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया।

निराश होकर नेपोलियन कुछ दिनों तक अलेक्जेण्ड्रिया में बैठा रहा, पर फ्रांस की कठिनाइयों की खबर उसके पास पहुँचने लगी। तब वह स्वदेश लौटने के लिए आतुर हो उठा।

9 अक्टूबर सन् 1799 ई० को वह पेरिस पहुँचा। डायरेक्टरी के भ्रष्ट,

अयोग्य और अकुशल शासन से फ्रांसीसी लोग तंग आ चुके थे। वे एक ऐसे योग्य व्यक्ति को देश का नेता मानने को तैयार थे जो उन्हें इन कठिन परिस्थितियों से छुटकारा दिला सके।

नेपोलियन ने फ्रांसीसियों के इस मनोभाव का फायदा उठाया और कुछ सैनिक अधिकारियों से मिलकर डायरेक्टरी के शासन का अन्त करने का निश्चय किया।

अपनी तैयारियाँ पूरी करने के बाद नवम्बर सन् 1799 ई० में नेपोलियन ने डायरेक्टरी के शासन का तख्ता पलट दिया और फ्रांस की व्यवस्थापिका ने एक प्रस्ताव पास करके उसे प्रथम कौंसल के पद पर नियुक्त कर दिया।

दो और कौन्सल बहाल हुए। तीन कौन्सलों की यह कॉस्यूलेट फ्रांस की नई कार्यकारिणी थी। इस कौन्स्यूलेट को फ्रांस के लिये एक संविधान बनाने का आदेश दिया गया। नये संविधान द्वारा सारे देश का शासन एक व्यक्ति अर्थात् प्रथम कौन्सल को सौंप दिया गया।

नेपोलियन ने अपने विरोधियों को कुचल दिया और अपना स्वेच्छाचारी शासन कायम कर लिया।

सन् 1802 ई० में नेपोलियन ने प्रगति के मार्ग में एक दूसरा कदम उठाया। एक जनमत संग्रह द्वारा नेपोलियन का यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया की वह फ्रांस के कोन्सल के पद पर आजीवन बना रहे।

नेपोलियन को अपने उत्तराधिकारी को नियुक्त करने का भी अधिकार मिला। लेकिन नेपोलियन की महत्वाकांक्षा फ्रांस का सम्राट बनने की थी।

सन् 1804 ई० में उसने परिस्थिति को इस तरह मोड़ा की सीनेट को उसे 'फ्रांसीसियों का सम्राट' घोषित करना पड़ा। इस प्रकार सन् 1792 ई० में स्थापित फ्रांस के प्रथम गणराज्य का अन्त हो गया और फ्रांस में सम्राट नेपोलियन का निरंकुश एकतन्त्र कायम हो गया।

नेपोलियन के सभी विरोधियों को दबा दिया गया। सभी प्रकार की स्वतन्त्रताओं पर कड़ा प्रतिबन्ध लगा दिया गया। क्रान्ति ने जिस निरंकुश एक तन्त्र का अंत किया था, वह पुनः फ्रांस में कायम हो गया। इस प्रकार फ्रांसीसी क्रान्ति की अन्त्येष्टि हो गयी।

जनता द्वारा समर्थन के कारण

फ्रांस में नेपोलियन की तानाशाही की स्थापना एक असाधारण घटना थी। फ्रांस के लोगों ने इस व्यवस्था को क्यों स्वीकार किया? क्या कारण थे कि राजनीतिक स्वतन्त्रता के लाभों का रसास्वादन कर चुकने के बाद फ्रांस की जनता पुनः एक निरंकुश सम्राट द्वारा शासित होने तथा ऐसे शासन के सभी सम्भावित नतीजों को भुगतने के लिये तैयार हो गयी?

इस परिस्थिति का विश्लेषण कई दृष्टियों से कर सकते हैं।

सर्वप्रथम फ्रांस की जनता क्रान्ति की राजनीतिक उथल-पुथल से ऊब चुकी थी। उन्होंने इस दौरान इतनी अधिक परेशानियां झेली थीं और इतने अधिक उबाऊ प्रयोगों से वे गुजर चुके थे कि अब वे एक स्थायी सरकार चाहते थे और इस संदर्भ में उनके सामने नेपोलियन ही ऐसा व्यक्तित्व था जो उन्हें ऐसी सरकार दे पाने में सक्षम दिख रहा था।

राजनीतिक आन्दोलनों, न अन्त होने वाले चुनावों, राष्ट्रीय आर्थिक जीवन का गला घोंट देने वाली अव्यवस्थाओं ने फ्रांसीसियों को थका डाला था। अब वे एक ही व्यक्ति के हाथों में राष्ट्र का उत्तरदायित्व सौंप देने को तैयार थे।

फ्रांसीसियों ने राजनीतिक दलबन्दियों से परे एक शक्तिशाली शासक की कामना की और शासक के रूप में नेपोलियन को स्वीकार करके अपनी इच्छा की पूर्ति की।

फ्रांस की जनता ने नेपोलियन की तानाशाही को खुशी से स्वीकार कर लिया, क्योंकि वे डायरेक्टरी के भ्रष्ट शासन से तथा उन षड्यन्त्रों और अयोग्यताओं से...जो न तो देश का आर्थिक विकास होने दे रहे थे और न विदेशी पराजयों से मुक्त होने दे रहे थे...ऊब चुके थे।

फ्रांस की जनता एक काम करने वाली सरकार चाहती थी और नेपोलियन ऐसी सरकार देने की स्थिति में था।

फ्रांसीसी राष्ट्र ने क्यों इतनी तत्परता से नेपोलियन द्वारा शक्ति हड़प लेने तथा क्रान्ति को नष्ट कर देने की क्रिया को अपनी मान्यता प्रदान की, इसका दूसरा कारण था वह गम्भीर खतरा जिससे देश अब भी आतंकित था।

फ्रांस के विरुद्ध यूरोपीय राज्यों का द्वितीय गुट तैयार हो चुका था। चारों ओर से फ्रांस पर हमला करने की कार्यवाही प्रारम्भ हो गयी थी। फ्रांसीसी जनता के लिये ऐसे नाजुक क्षणों में नेपोलियन एक मुक्तिदाता के रूप में अवतरित हुआ था। केवल वही एक ऐसा था जो राष्ट्र को सम्भावित खतरे से बचा सकता था।

तृतीय कारण यह था कि एक शक्तिशाली शासक के रूप में नेपोलियन क्रान्ति के अधिक महत्वपूर्ण परिणामों को सुरक्षित रखने में समर्थ था। उसकी शक्ति इस बात की गारण्टी देती थी कि पुरातन-व्यवस्था के कुलीन अब कभी पहले की तरह अपनी जमीन अथवा विशेषाधिकारों को पुनः प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

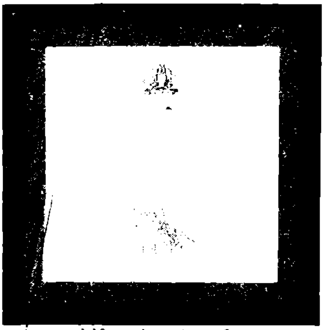
वो व्यक्ति, जिन्होंने क्रान्ति के माध्यम से सम्पत्ति और यश अर्पित किया था वे सभी नेपोलियन को अपना पूरा समर्थन देने को तैयार थे।

❑



नेपोलियन के सुधार

नेपोलियन की सभी राजनीतिक विजयों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण तथा अधिक स्थायी वे कार्य थे जो नेपोलियन ने फ्रांस के जनजीवन के सुधार के लिए किये और उन्हें लागू किया।



नेपोलियन के राजतंत्र का चिह्न

राजनेता के रूप में नेपोलियन के दावे इस अवधि में आधी गृहनीति के विभिन्न आयामों पर ही मुख्य रूप से आधारित थे। वे असंख्य थे और न केवल फ्रांस के लिए वरन् सम्पूर्ण यूरोप के लिये बड़े महत्वपूर्ण थे।

इन असंख्य सुधारों को लागू करने में वह कई बातों से प्रेरित हुआ था। एक तानाशाह के रूप में नेपोलियन अपना स्थान सुरक्षित करना चाहता था। राजसत्ता को पलट कर उसने डायरेक्टरी के शासन को उलटा था और अपनी तानाशाही को कायम किया था।

कट्टर क्रान्तिकारी नेपोलियन के प्रबल विरोधी थे। अपनी स्थिति को मजबूत बनाने तथा विरोधियों का अन्त करने के निमित्त नेपोलियन को पूरे राष्ट्र के समर्थन की जरूरत थी।

आन्तरिक क्षेत्र में सुधार लाकर वह क्रान्ति के लाभों को स्थिर और स्थायी बना सकता था तथा इस प्रकार वह पूरे राष्ट्र का समर्थन पा सकता था। यश अर्जित करने की कामना उसके सुधारों का दूसरा प्रेरकतत्व था। वह स्थायी महत्त्व के कुछ काम करना चाहता था ताकि फ्रांस की भावी पीढ़ियाँ आदर से उसको याद करें।

इन्ही उद्देश्यों से प्रेरित होकर नेपोलियन ने फ्रांस में कई सुधारवादी योजनायें लागू कीं इनमें से कुछ उसकी योजनायें निम्नलिखित थीं–

आर्थिक क्षेत्र मे सुधार–प्रथम कौन्सल बनते ही नेपोलियन बोनापार्ट ने अपने सुधारों का विस्तृत कार्यक्रम आरम्भ किया। सर्वप्रथम उसने देश की सोचनीय आर्थिक दशा की ओर ध्यान दिया।

निरन्तर युद्धों और विद्रोहों के फलस्वरूप देश का आर्थिक जीवन लगभग

बर्बाद हो चुका था। नियमित रूप से कर वसूलने के लिये सरकारी पदाधिकारी नियुक्त किये गये थे। इससे राज्य और करदाताओं दोनों को लाभ पहुंचा और राज्य की आर्थिक दशा बहुत हद तक सुधर गयी।

नेपोलियन ने ठेकेदारों के अनुचित मुनाफों का अन्त किया, सट्टे बाजी रोकी और स्टॉक एक्सचेंज दर नियन्त्रण किया। खर्च करने के तरीकों में भी सुधार किया।

नेपोलियन ने वित्तीय गतिविधियों को संचालित करने के लिये बैंक ऑफ फ्रांस की स्थापना की। यह बैंक आज भी फ्रांस में कायम है और यह नेपोलियन की एक स्थायी देन है।

कामगार वर्ग की कृतज्ञता हासिल करने के उद्देश्य से नेपोलियन ने बेरोजगारी की संख्या का समाधान करने का प्रयास किया। नई नहरें खोदी गयीं। सड़कों को विस्तृत किया गया, गलियों की मरम्मत की गयीं और पेरिस को एक सुन्दर नगर बनाने के लिये कई कार्य किये गये।

इन कार्यों से बहुत से लोगों को रोजगार मिला। इस प्रकार नेपोलियन ने अल्प अवधि में दो देश की आर्थिक जीवन की काया पलट दी।

प्रशासनिक सुधार—नेपोलियन ने फ्रांस की प्रशासनिक व्यवस्था में भी सुधार किया। केन्द्रीय तथा स्थानीय शासन को पूर्णतः केन्द्रित करके जनता को राजनीतिक अधिकारों से वंचित कर दिया।

नेपोलियन ने बूर्बो वंश के ढांचे को अपनाया और देश की शासन व्यवस्था का केन्द्रीयकरण किया। उसने डिपार्टमेंट्स तथा डिस्ट्रिक्ट्स की स्थानीय सरकारों को निर्वाचित पदाधिकारियों की जगह प्रीफेक्टस तथा सब-प्रीफेक्टस को रखा, जिनकी नियुक्ति वह स्वयं करता था।

गाँवों तथा शहरों के सभी मेम्बरों की नामजदगी सीधे केन्द्रीय सरकार द्वारा की जाने लगी। प्रशासन के क्षेत्र में नेपोलियन ने क्रान्ति के दौरान प्रशासन के ढांचे का पूर्ण विकेन्द्रीयकरण कर दिया था तथा देश का शासन चलाने का दायित्व निर्वाचित प्रतिनिधियों को दिया था।

लेकिन बाद में नेपोलियन ने इस व्यवस्था को उलट दिया और क्रान्ति पूर्व व्यवस्था को फिर से थोप दिया। इस क्रान्ति विरोधी कृत्य के बावजूद नेपोलियन के प्रशासनिक सुधार उसकी एक स्थायी कारनामा है। आज भी यही प्रशासनिक ढांचा फ्रांस में कायम है।

शिक्षा के क्षेत्र में सुधार—शिक्षा के क्षेत्र में नेपोलियन ने एक राष्ट्रीय योजना लागू की। क्रान्तिकारियों द्वारा कई वर्षों पहले डाली गयी नींव पर विभिन्न स्तर वाले विद्यालयों तथा स्वतन्त्र छात्रवृत्ति के साथ जन्म शिक्षा की एक भव्य राजकीय पद्धति कायम की गयी।



शिक्षा सुधार के लिये नेपोलियन स्वयं गहरा अध्ययन करता था

नेपोलियन द्वारा लागू की गयी शिक्षा पद्धति का उद्देश्य छात्रों के बीच अनुशासन की व्यवस्था विकसित करना था। क्योंकि नेपोलियन की मान्यता थी कि शिक्षा का मतलब अच्छे नागरिक तथा सैनिक पैदा करना है।

क्रान्ति के दिनों में शिक्षा की व्यवस्था पूर्णतः अस्त-व्यस्त हो गयी थी। इसको व्यवस्थित करने के उद्देश्य से नेपोलियन ने सन् 1802 ई० में कठोर सरकारी नियन्त्रण में लाइसीज की स्थापना की। लाइसीज को देशभक्ति की शिशु-पाठशाला के रूप में विकसित करने का लक्ष्य था।

निजी माध्यमिक विद्यालयों को एक सीमित संख्या में ही बने रहने की इजाजत दी गयी। नेपोलियन की सरकार पाठ्यक्रम और शिक्षा-सत्र बनाती थी। शिक्षकों की नियुक्ति करती थीं और उनकी देख-रेख के लिये निरीक्षकों की नियुक्ति करती थी। विद्यालयों में अनुशासन सैनिक तौर-तरीकों पर आधरित था।

सन् 1808 ई० में नेपोलियन ने यूनिवर्सिटी की स्थापना कर शिक्षा प्रबन्ध को पूरी तरह केन्द्रित कर दिया। यह यूनिवर्सिटी, विश्वविद्यालय के सामान्य अर्थ में कोई यूनिवर्सिटी नहीं था; वरन् प्राथमिक स्तर से उच्चतर शिक्षा तक की सभी संस्थाओं को एक सूत्र में बांधने वाली एक व्यवस्था थी।

शिक्षादर अधिकाधिक सरकारी नियन्त्रण रखना तथा विद्यार्थियों को शासन के प्रति निष्ठावान बनाना इसका उद्देश्य था। नेपोलियन ने निःशुल्क छात्रवृत्तियों का प्रबन्ध किया। शोध कार्यों के लिए उसने इन्स्टीट्यूट ऑफ फ्रांस की स्थापना की जो आज भी विद्यमान है। शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिये ट्रेनिंग कालेज खोले गये। नेपोलियन द्वारा स्थापित यह शिक्षा पद्धति कुछ आवश्यक सुधारों के साथ फ्रांस में आज भी कायम है।

नेपोलियन कोड—नेपोलियन के शासन की सर्वाधित महत्वपूर्ण उपलब्धि पांच विधान संहिताओं के क्रम का संग्रह प्रस्तुत करना था। इसमें से सिविल कोड जिसको 'नेपालियन कोड' कहा जाता है, सर्व प्रमुख है। क्रान्ति के पूर्व फ्रांस की कानूनी व्यवस्था अत्यन्त छिन्न-भिन्न अवस्था में थी। क्रान्ति के दौरान यह अराजकता और भी बढ़ गयी थी। इतनी विधियों का निर्माण हुआ कि यह जानना मुश्किल था कि क्या कानूनी है और क्या गैर कानूनी। नेपोलियन ने इस व्यवस्था को समाप्त करने का निश्चय किया। सन् 1800 ई० में उसने फ्रांस के कुछ प्रमुख्यतः अधिवक्ताओं की एक समिति

बनायी। इस समिति को कानूनी विशृंखलताओं को दूर करने तथा एक सिविल कोड का निर्माण करने का काम सौंपा गया।

बहुत सोच-विचार के बाद जो बात सामने आई उसे सन् 1804 ई० में देश में लागू कर दिया गया। इस विधान-संहिता पर नेपोलियन के व्यक्तिगत विचारों का गहरा प्रभाव था। नेपोलियन पारिवारिक अनुशासन को बहुत महत्व देता था। वह फ्रांस के कड़े पिताओं, आज्ञाकारी पुत्रों तथा बिना अधिकार वाली परतन्त्र स्त्रियों की कल्पना करता था।

विधान-संहिता पर उसकी इस मान्यताओं का प्रभाव अनिवार्य रूप से पड़ा। इसके द्वारा परिवार के स्वामी का अधिकारी काफी दृढ़ बनाया गया। नवीन विधान-संहिता में पत्नी पूर्णतया पति के नियन्त्रण में रखी गयी। तलाक की पद्धति को कठिन बनाया गया और पारिवारिक सम्पत्ति को किसी को भी देने का अधिकार परिवार के स्वामी को मिला।

सिविल विवाह की व्यवस्था भी इसी संहिता में की गयी। इस प्रकार सिविल विवाह और तलाक की प्रथा को मान्यता देकर नेपोलियन ने यूरोप में इस बात का प्रचलन किया कि बिना पादरियों के सहयोग से भी समाज का काम चल सकता है।

नेपोलियन कोड में क्रान्ति की उपलब्धियों को सुरक्षित करने का प्रयास किया गया। क्रान्ति के मूलभूत सिद्धान्तों मे से एक, 'कानून की नज़र में सभी नागरिकों का समान होना' को बरकरार रखा गया। कोड ने सारे देश के लिये एक समान कानून, धामिक स्वतन्त्रता तथा धर्म निरपेक्ष राज्य की स्थापना की।

बाद वाले कुछ संहिता, (जैस सन् 1806 ई० में लागू किया गया कोड ऑफ सिविल प्रोसिजर) क्रान्ति पूर्व फ्रांस के कानूनों से बहुत मिलते-जुलते थे। सन् 1810 ई० में संग्रहित कोड ऑफ क्रिमिनल प्रोसिजर तथा पेनल कोड नेपोलियन की बढ़ी हुई अधिनायकवादी प्रवृत्ति को परिलक्षित करते थे।

इसके माध्यम से व्यक्ति और सम्पत्ति के विरुद्ध किये गये अपराधों के साथ-साथ राजनीतिक अपराधों के लिये भी कठोर दण्ड देने की व्यवस्था की गयी।

सन् 1807 ई० में बनाये गये व्यापारिक कोड में पुराने राजतन्त्र के बहुत से नियमों को बरकरार रखा गया। इसमें श्रमजीवियों के हित में पूरी उपेक्षा की गयी थी। इस प्रकार के प्रावधान रखकर नेपोलियन ने क्रान्ति के आदर्शों के विरुद्ध काम किया। फिर भी, उसकी विधान संहिताओं का महत्व कम नहीं किया जा सकता। यह नेपोलियन की एक स्थायी कीर्ति है। यह आज भी फ्रांस की कानूनी पद्धति का मुख्य आधार है। यूरोप के कई देशों में भी यह कोड लागू है।

धर्म के क्षेत्र में पोप के साथ समझौता कर लेना नेपोलियन के राज नेतृत्व का सबसे बड़ा महत्वपूर्ण था। क्रान्ति के समय चर्च का जो नया संगठन हुआ था,

उसके फलस्वरूप देश में धार्मिक अव्यवस्था मच गयी थी।

फ्रांस की अधिकांश जनता कैथोलिक धर्मावलम्बी थी और नेशनल एसेम्बली द्वारा निर्मित पादरियों के लौकिक विधान के पूर्ण विरुद्ध थी। इसके कारण जनता का एक बड़ा भाग असंतुष्ट था।



पोप के साथ समझौता करना नेपोलियन की बहुत बड़ी दूरदर्शिता थी

यही नहीं पोप भी इसे लेकर बहुत नाराज था। शपथ लेने वाले पादरी विदेशों में क्रान्ति विरोधी प्रचार कर रहे थे। धर्म विग्रह का वह तीखा तत्व था जिसने राष्ट्र को अपने आप में विभाजित कर रखा था।

फ्रांस के बहुसंख्यक लोग अपनी पुरानी मान्यताओं की सीमा में लौट आना चाहते थे। नेपोलियन ने भी यह अनुभव किया कि पोप के साथ धर्म के प्रश्न पर समझौता कर लेने से वर्तमान धार्मिक, सामाजिक कटुता तो दूर होगी ही, आन्तरिक रूप से फ्रांस को मजबूत बनाया जा सकेगा।

इन सारी बातों पर विचार कर धार्मिक कलह को समाप्त करने के उद्देश्य से उसने पोप के साथ वार्तायें करनी आरम्भ कीं। सभी कठिनाइयों को पार करते हुये उसके साथ एक समझौता करने में नेपोलियन सफल हो सका। यह सन् 1801 ई० की 'कौनकोर डैट' सन्धि कहलायी।

इन समझौते के अनुसार पोप ने क्रान्तिकारियों द्वारा फ्रांसीसी चर्चों की जब्त की गयी भूमि पर से अपना अधिकार त्यागना स्वीकार कर लिया। इसके बदले नेपोलियन ने कैथोलिक धर्म को राजधर्म घोषित कर दिया, पर पोप को प्राचीन अधिकार पूर्ण रूप से वापस नहीं मिल सके।

यह तय हुआ कि पादरियों की नियुक्ति के लिये सरकार नामों का चयन कर पोप के पास भेजेगी और पोप उसे स्वीकार कर लेगा। पादरियों को राजकोष से वेतन दिया जायेगा तथा सभी पादरियों को फ्रांस के शासन विधान के प्रति भक्ति की शपथ लेनी पड़ेगी।

क्रांति के समय बंदी बनाये गये सभी पादरियों को मुक्त कर दिया गया और यथासम्भव जब्त की हुई सम्पत्ति के कुछ भाग को चर्च को लौटाने का वचन दिया गया। निर्वासित पादरी जो क्रान्ति के समय फ्रांस छोड़कर भाग गये थे उन्हें स्वदेश लौटने की अनुमति मिल गयी।

इस सन्धि के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की गयी।

क्रान्तिकारी पंचांग को स्थगित कर दिया गया तथा प्राचीन अवकाश के दिवस पुनः प्रचलन में हो गये।

नेपोलियन की इस धार्मिक नीति से फ्रांस की जनता बहुत हद तक संतुष्ट हो गयी। जो पादरी क्रान्ति के विरुद्ध थे, वे अब नेपोलियन के समर्थक बन गये। इस प्रकार नेपोलियन ने अपनी दूरदर्शिता से धर्म का राजनीतिक प्रयोग किया। वह कहा करता था कि धर्म पर राज्य का नियन्त्रण होना चाहिये। पोप के साथ समझौता करके उसने धर्म पर राज्य का नियन्त्रण कायम कर किया।

यद्यपि चर्च पर पोप का नाम मात्र का अधिकार कायम रहा पर वास्तव में उस पर राज्य का ही नियन्त्रण स्थापित था। चर्च राज्य की एक अधीनस्थ संस्था बन गयी। उसके संगठन में आमूल परिवर्तन आ गया। समझौते के फलस्वरूप जो नया रोमन कैथोलिक चर्च उभरा, वह पुरातन काल के चर्च से बिलकुल भिन्न था।

इस व्यवस्था के अन्तर्गत बिशप राज्य का वेतन भोगी कर्मचारी हो गया। वह न तो कोई बड़ी धार्मिक सभा बुला सकता था और न बिना सरकारी आज्ञा के पोप से सीधा सम्पर्क कायम कर सकता था। पादरियों को धार्मिक कार्यों के अतिरिक्त कुछ राज्य का काम भी करना पड़ता था—जैसे चर्च में प्रार्थना के लिये इकठ्ठे लोगों को सेना की विज्ञप्ति पढ़कर सुनाना आदि।

इस प्रकार 'कौनकोर डैट' ने फ्रांस के धार्मिक जीवन को व्यवस्थित कर दिया। यह व्यवस्था इतनी लाभप्रद सिद्ध हुई कि सन् 1801 ई० के कौनकोर डैट ने सन् 1905 ई० तक फ्रांस में चर्च तथा राज्य के बीच के सम्बन्ध को नियन्त्रित किया, फिर भी यह धार्मिक समझौता नेपोलियन के अन्य कार्यों से कम स्थायी सिद्ध हुआ।

इसका एक कारण यह था कि धर्म के कट्टर विरोधी और धर्मपरायण पादरी अन्त तक इसका विरोध करते रहे। यह नेपोलियन के धार्मिक समझौते में विरोधी विचारों की बीच एक समझौता मात्र था।

इस प्रकार नेपोलियन के सभी सुधार बड़े महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। इनके कारण फ्रांस में पहले एक व्यवस्था कायम हुई और राज्य को स्थायित्व प्राप्त हुआ। नेपोलियन के इन कार्यों ने फ्रांस की जनता को तात्कालिक कष्टों को दूर कर दिया। क्रान्ति के समय की गयी भूलों को सुधार दिया गया।

इस दृष्टिकोण से नेपोलियन को उदार स्वेच्छाधारी शासकों की परम्परा में अन्तिम कड़ी कहा जा सकता है।

❑



नेपोलियन की अन्तः पीड़ा

फ्रांस के महान योद्धा व सेनानायक के रूप में उभरने वाले नेपोलियन बोनापार्ट यूरोप के लिये भय का पर्याय बन गया था, पर नेपोलियन के सीने में जो प्रेम के लिये धड़कने वाला दिल था, उसकी पीड़ा को समझने वाला कोई नहीं था। वह अपनी पत्नी जोसेफिन से हद से ज्यादा मुहब्बत करता था। मगर जोसेफिन की नजरों में जैसे उसके प्रेम की कोई कीमत ही नहीं थी।

वह अपनी पत्नी जोसेफिन को हर समय याद करता था। सरबेलोनी के महल के एक कमरे में जब वह आराम कर रहा था, उस समय भी उसे रह-रह कर जोसेफिन की याद आ रही थी। उसके बिना उसने इटली पर जो विजय प्राप्त की थी, वह निरर्थक लग रही थी। जब वह इटली की विजय के लिये निकला तो युद्ध क्षेत्र में भी शीशे के फ्रेम में जड़ी जोसेफिन की तस्वीर उसकी कमीज की भीतरी जेब में रखी थी। वह महल में लौटा तो उसको ही याद करते हुए उसके न आने की वजह के बारे में सोच रहा था। वह सोच रहा था कि कहीं वह अधिक बीमार तो नहीं है या फिर ऐसा तो नहीं है कि मेरी अनुपस्थिति में उसने कोई नया प्रेमी तलाश कर लिया हो?

इटली की विजय के बाद उसने जोसेफिन को पत्र लिखा

"प्रिय जोसेफिन यहाँ के लोग तुम्हारे पति की जीत का जश्न मना रहे हैं लेकिन तुम्हारे बिना मुझे विजय का यह जश्न भी फीका लग रहा है। यहाँ आतिशबाजी छोड़कर लोग अपनी प्रसन्नता का प्रदर्शन कर रहे हैं; लेकिन तुम्हारे बिना मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। तुम नहीं समझ सकती हो कि मेरे दिल में तुम्हारे लिये कितनी तड़प है, तुम्हारी याद मुझे कितनी सता रही है। तुम्हारे बिना एक-एक पल मेरा युगों की भाँति बीत रहा है। मुझे अपना कोई होश नहीं है। तुम अब तक न मुझसे मिलने आई हो और न ही तुमने मुझे कोई पत्र लिखा है; जबकि मेरा मन तुमसे मिलने के लिये तड़प रहा है। तुम अति शीघ्र चली आओ, तुम्हें आना ही होगा, तुम्हें मेरे लिये आना पड़ेगा। मैं तुम्हें अपने वक्ष से सटी हुई तथा अपनी बाहों में आबद्ध देखना चाहता हूँ। अगर हो सके तो उड़कर चली आओ।"

तुम्हारी प्रतीक्षा में—
नेपोलियन बोनापार्ट

नेपोलियन की भावनाएं उसके पत्रों में आसानी से उजागर होती हैं। नेपोलियन हमेशा नवीनता देखना चाहता था। अब उसके जीवन में ऐसा कुछ नहीं था जो उसको पत्नी से मिलने से रोक सके। उसे उम्मीद थी कि उसकी पत्नी उससे जरूर मिलने आयेगी। वह किसी ऐसे स्थान पर जाना चाहता था जहाँ वह और उसकी पत्नी के अलावा कोई और न हो।

जबकि उस वक्त उसकी पत्नी वहां से बहुत दूर पेरिस में थी। शायद भाग्य विधाता ने नेपोलियन के भाग्य में बहुत कुछ आधा लिख कर छोड़ दिया था। वे दोनों एक दूसरे से दूर अपने अधूरे संसार में जी रहे थे।

अगले दिन उसने कारनट को एक जरूरी कार्य के लिये पत्र लिखा। उस पत्र के बीच में उसने लिखा था—

"मैं खुश नहीं हूँ मैं उदास हूँ, मेरी पत्नी यहाँ नहीं आयेगी। मुझे लगता है कि शायद उसे कोई अन्य प्रेमी मिल गया है इसलिये वह पेरिस छोड़ना नहीं चाहती। मैं इस तरह की हर महिला से नफरत करता हूँ।"

इसके बाद नेपोलियन को अपनी पत्नी का एक पत्र मिला, जो इस प्रकार था—

"ऐसा प्रतीत होता है जैसे बिजली की कड़कड़ाहट के साथ सौभाग्य की सभी भावनायें इकट्ठी होकर उस पर वर्षा कर रही हों। वह जीवन में लगातार सफलता हासिल कर रहा है; उसके जीवन में अभाव है तो सुख-सुविधाओं का; अगर भाग्य उसके साथ रहा तो अपने जीवन में निश्चित ही सफलता पायेगा, तब उसे अपने वारिस की जरूरत होगी।"

खत पढ़कर उसने अपने कंधों को झंझोड़ा है और सोचा कि क्या यह सब सच है? क्या उसकी सन्तान है?

नेपोलियन ने तभी कार्यालय से कागज उठाकर स्पष्ट लिखा—

"मैं तुमसे क्षमा मांगता हूँ, क्योंकि मैं तुमसे शिकायतें कर रहा था। मैं तुम्हें अपने शब्दों से आघात कर रहा था। जब कि तुम बीमार थी। मैं बुद्धिहीन हो चुका था। अब मेरा विचार है कि मैं दोबारा समझदार नहीं हो सकूंगा। मैं निराश हूँ, मेरी सारी आशायें मर चुकी हैं। मुझे हर समय एक ही चीज तसल्ली देती है और वह है तुम्हारा पत्र।"

नेपोलियन का भावुकता भरा पत्र पाते ही जोसेफिन उससे तुरन्त मिलने जा पहुँची।

नेपोलियन को सैनिकों से, सम्मानित अधिकारियों तथा महत्वपूर्ण लोगों से घिरा देखकर जोसेफिन खुद को अधिक सम्मानित महसूस करने लगी। सैन्य अध्यक्षा की पत्नी होने का गौरव उसे प्रसन्नता से भरे दे रहा था। इतने सब पर भी जोसेफिन नेपोलियन के प्रेम के प्रति गम्भीर नहीं थी। उसका व्यवहार तथा वाणी नेपोलियन

के प्रति प्रेम का परिचायक नहीं थी, इसका कारण था वह प्रेम का प्रदर्शन तो करती थी, किन्तु उसके मन में प्रेम की व्याकुलता तथा व्यग्रता नहीं थी।



नेपोलियन का पत्र पाकर नेपोलियन के सामने दरबार में आयी हुई जोसेफिन

जोसेफिन, नेपोलियन को अपने प्रेम के प्रदर्शन से खुश तो क्या करती उल्टे उसके चरित्र पर व्यंग करती हुई बोली—

"तुम तो ऐसे खुश हो जैसे तुम्हें कोई उन्नीस वर्षीय नवयौवना का प्रेम मिल गया है? क्या वास्तव में ही तुम्हारे किसी नवयौवना से प्रेम सम्बन्ध हैं? यदि यह सत्य है तो तुम्हारा वही होगा जो शेक्सपियर के नाटक में ओथेलो का हुआ था।"

फिर वह हँसते हुए नेपोलियन से बोली—"बोनापार्ट तुम भी अजीब आदमी हो।"

जोसेफिन के इस व्यंग से नेपोलियन बहुत आहत हुआ था। जिस औरत के प्रेम में वह पागल हुआ जा रहा था, जिस औरत को वह अपना सर्वस्व मानकर उसे अपने विजय उत्सव में अकेले में आनन्द नहीं आ रहा था, वही उस पर लांछन लगा रही थी।

जोसेफिन कुछ दिन वहां रही और फिर वापस पेरिस लौट गयी।

उसके लौटने पर नेपोलियन ज्यादातर कष्ट से गुज़रता रहा। ऐसे समय में भला उसका सच्चा मित्र कौन था? इस संसार में अपने खून के अलावा उसका सच्चा मित्र और कौन हो सकता था। उसने अपने भाई को पत्र लिखा—

"मैं बहुत उदास हूँ। मेरी पत्नी इस समय बीमार है। भविष्य की कल्पनाओं के कारण मेरा हृदय भावहीन हो रहा है। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे पत्र लिखो, यही मेरा आग्रह है।

इन सब बातों के साथ-साथ वह युद्ध की तैयारी में भी लगा हुआ था। उसने बार्दिया को एलेक्ज़ेन्ड्रिया पर कब्जा करने का आदेश दे दिया था। उसने जेनाइज सीनेट को सिपाहियों के कत्ल की चुनौती दे दी थी। कुछ तोपें रिसिरा में छूट गयी थीं। उसने उन तोपों को तुरन्त भेजने का आदेश दिया। उसने मसीना को भी आदेश दिया कि वह जल्दी ही गोला बारूद खरीद ले।

मन्तुआ पूरी तरह से बोनापार्ट के कब्जे में था और राजा फ्रांसिस के सिपाही मन्तुआ को स्वतन्त्र कराना चाहते थे। मन्तुआ एक महत्वपूर्ण स्थान था, इसलिये राजा के सिपाहियों ने तीन बार प्रयास किया। ऐसे समय में नेपोलियन को तुरन्त फैसला लेना पड़ा कि यदि उसे विरोधी से युद्ध करना है तो उसे कुछ समय के लिये मन्तुआ को त्यागना ही होगा।

लेकिन मिलान से पीछे हटने की उसकी योजना को दुश्मन ने सफल नहीं होने दिया और दोनों ओर से भयंकर युद्ध हुआ।

इस युद्ध में फ्रांसिसी सेना खतरे में पड़ गयी। इसका कारण यह था कि गर्मी बहुत तेजी से पड़ रही थी। उसकी सेना तपते मैदान में खड़ी थी। लेकिन फिर भी बोनापार्ट को जैसे गर्मी की कोई चिंता नहीं थी, वह एक से दूसरी टुकड़ी का निरीक्षण करने में व्यस्त रहता था।

नेपोलियन ने विजय पाने के लिये पूरी शक्ति एकत्रित करके विजय के प्रयास में लगा दी। इस समय पूरे युद्ध का निर्णय दांव पर लगा हुआ था। ऐसी विकट परिस्थिति में भी वह जोसेफिन को एक क्षण के लिये भी नहीं भूला। पूरे मानसिक तनाव से गुजरते हुये उसने एक शाम जोसेफिन को पत्र लिखा—

"मैं तुमसे दूर हूँ। यही दूरी मेरी उदासी का कारण है। मुझे लगता है कि मैं तुम्हारे साथ ही खुश रह सकता हूँ। हर समय मैं तुम्हारे सामिप्य और तुम्हारे चुम्बनों के बारे में सोचता हूँ। मुझे लगता है कि मुझे अपना पूरा समय तुम्हारे साथ ही बिताना चाहिये तभी मेरी ये व्याकुलता दूर होगी। मैं केवल तुमसे ही प्रेम करता हूँ। तुम्हारे अलावा मैं किसी अन्य स्त्री के बारे में सोच भी नहीं सकता।"

नेपोलियन कभी भी जोसेफिन के ख्यालों से मुक्त नहीं हो पाया, ना ही उसे भूल पाया।

उसने निर्णय कर लिया था कि युद्ध में हर हाल में विजय प्राप्त करनी होगी। यही निर्णय कर उसने अगले दिन 'कास्टिगिलयोन' को जीत लिया। तुरन्त जोसेफिन को पत्र लिखा—

"तीन दिन गुजर गये हैं, मगर अभी तक तुम्हारी ओर से मुझे कोई पत्र नहीं मिला है, जबकि मैं प्रतिदिन तुम्हें पत्र लिखता हूँ। तुम्हारे बिना मैं उदास और अधूरा हूँ।"

उधर जोसेफिन ने हेलियन को पत्र लिखा—

"मैं इतनी दुःखी और उदास हूँ कि मर जाना चाहती हूँ। नेपोलियन वहाँ युद्ध करने में व्यस्त है और निरन्तर सम्मान प्राप्त कर रहा है, उसके काम को लगातार सराहना मिल रही है, लेकिन मैं वहाँ उदास हूँ। हम दोनों ही अपने जीवन से ऊब चुके हैं। वो इसलिये ज्यादा उदास है कि मैं उससे दूर हूँ और मैं इसलिये उदास हूँ कि मैं उसके बहुत करीब हूँ।"

इसके तीन दिन बाद नेपोलियन ने जोसेफिन को एक पत्र में इस प्रकार लिखा—

"प्रिय मैंने युद्ध में विजय प्राप्त कर ली है तथा युद्ध में शत्रु के अट्ठारह हजार सैनिकों को बंदी बना लिया है। दूसरे सैनिक या तो घायल हैं या फिर मर चुके हैं। ये मेरी सबसे बड़ी सफलता है।"

निराशा और उदासी से घिरे बोनापार्ट का साहस धीरे-धीरे क्षीण हो रहा था। उसकी निराशा का कारण उसकी पत्नी से दूर होना था। पत्नी के विषय में सोचते हुए उसका मानसिक तनाव धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था। उस समय वह अर्कोला के युद्ध में व्यस्त था। वहाँ जनरलों के साथ एक बैठक में विचार विमर्श कर रहा था। वहाँ से आने के बाद उसने अपनी पत्नी को पत्र लिखा—

"मैं तुमसे प्रेम नहीं करता बल्कि अब मुझे तुमसे नफरत होने लगी है। तुम हो ही इसी लायक कि तुमसे नफरत की जाये। तुम मुझे पत्र नहीं लिखती, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि तुम मुझसे प्रेम नहीं करती हो। तुम्हारा हृदय किसी मनचले राजकुमार के साथ लगा हुआ है, जिसके साथ तुम्हारा पूरा समय बीतता है। मैं तुम्हें इस पत्र के माध्यम से सावधान कर रहा हूँ कि मैं किसी भी समय तुम्हारा द्वारा खटखटा सकता हूँ।"

नेपोलियन की पत्नी जोसेफिन अपना दायित्व पूरी तरह से नहीं निभा रही थी। यही नेपोलियन की उदासी और निराशा का कारण था। वह अपने रिश्ते के प्रति ईमानदार नहीं थी। नेपोलियन को सदैव यही चिन्ता सताती रहती थी कि पता नहीं जोसेफिन उससे प्रेम करती भी है या नहीं। यदि नहीं तो यह स्थिति उसके लिये अत्यन्त दुखःदायक थी।

नेपोलियन अभी संसार में जीना चाहता था। वह सेनाध्यक्ष था इसीलिये अपनी कुण्ठा को छिपाने के लिये आदेश जारी किया था—

"सिपाहियों को अपने दुःखों व भावनाओं पर काबू पाना जरूरी हैं।"

दो दिन बाद नेपोलियन अर्कोला में एड्रिज के पुल पर खड़ा गोलियाँ चला रहा था। फ्रांसीसी सेना तेजी के साथ पीछे हट रही थी, क्योंकि नदी के पार रास्ता बनाना असम्भव लग रहा था। सैनिक सेनानायक से आगे न बढ़ने की गुहार करते हुए कह रहे थे—

"जनरल! आगे मत बढ़ो नहीं तो तुम तो मारे ही जाओगे और हम भी कहीं के नहीं रहेंगे।"

आगे की सेना थक चुकी थी। नेपोलियन सम्भलने के प्रयास में गड्ढे में जा गिरा। उसके भाई लुई और मार्मोण्ट ने उसे खींच कर बाहर निकाला। गोली चली थी, परन्तु मुइरन, नेपोलियन को बचाने के लिये ढाल बन गया था। गोली उसने सीने पर खाई थी। उसने नेपोलियन को बचा लिया था।

यह युद्ध का दूसरा दिन था। तीसरे दिन भी वही स्थिति बनी रही। युद्ध का परिणाम बेहतर नहीं रहा।

कोई चारा न देखकर नेपोलियन ने कपट का सहारा लिया। जब उसने देखा कि नदी को पार करना आसान नहीं है तो उसने सैनिकों की कुछ टुकड़ियों को तुरही तथा नगाड़ा बजाने वालों के एक बड़े अर्धावृत्त के रूप में उनके साथ दुश्मन के पीछे जाने का आदेश दिया और वहाँ से आक्रमण किया।

आस्ट्रिया के सिपाही थक चुके थे। इसलिये भयभीत होकर सेना की एक टुकड़ी पीछे हटने लगी। फ्रांसीसी सेना की विजय जिस निराशा के आवरण में चली गयी थी साहस और पराक्रम से बाहर आ गयी।

नेपोलियन ने जिस स्थानों पर विजय प्राप्त की थी उसमें एक नाम और शामिल हो गया। वह अपना समय गंवाये बिना अपनी सेना का मनोबल बढ़ाता हुआ आगे बढ़ रहा था। फिर उसने अपनी पत्नी जोसेफिंन को वहीं से एक पत्र लिखा–

"यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ। तुम मुझ से प्रेम नहीं करती इसीलिये मेरी प्रसन्नता या अप्रसन्नता से तुम्हें कुछ लेना देना नहीं। मैं केवल तुम्हारे लिये ही जी रहा हूँ, लेकिन तुम्हें मेरे दुःखों की कोई चिता नहीं। पर यह भविष्य के लिये अच्छा संकेत नहीं है।"

उस समय नेपोलियन अपनी पूरी शक्ति से आगे बढ़ रहा था, फिर भी दुश्मन उसके चंगुल से भाग निकला था। क्रोधित होने से कोई लाभ नहीं था। यही कारण था कि उसने अपने दिमाग से सारी बातें निकाल दी थीं वह अगर कुछ सोच रहा था तो केवल यही कि किस प्रकार जोसेफिन को प्रभावित किया जा सकता है।

उसे लगता था कि केवल भावनाओं की अभिव्यक्ति ही उसे यहाँ ला सकती है।

इधर नेपोलियन जोसेफिन के लिये पागल हुआ जा रहा था उधर शत्रुओं से जूझती उसकी सेना अपना बल खोती जा रही थी।

वह वही महत्वाकांक्षी युवक था जिसने फ्रांस की सीमाओं से बाहर निकल कर विजय अभियान छेड़ा था और आज वही योद्धा एक स्त्री के कारण अपने उस लक्ष्य से भटक गया था।

अगर नेपोलियन दहकता हुआ लावा था तो जोसेफिन बुझती हुई चिंगारी। शायद यही कारण था जो उसका विवाह सम्बन्ध मधुर नहीं रहा। नेपोलियन को जोसेफिन से कुछ ज्यादा ही अपेक्षायें थीं। जिन्हें पूरा करना जोसेफिन के वश में नहीं था। वह अपने मन के उद्गार नेपोलियन की भांति तूफानी अंदाज में पेश नहीं कर पाती थी, जिसका अर्थ नेपोलियन ने यह लगाया कि वह बेवफा है।

नेपोलियन, जोसेफिन को अपनी जान से ज्यादा चाहता था वह जोसेफिन से भी यही अपेक्षा करता था। किन्तु वह उसकी चाहत को समझ न सकी।

उसके दिमाग में यह बात घर कर गयी थी कि उसका पति एक प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित व्यक्ति है जिसके लिये उसका कोई महत्व नहीं है। उसके एक इशारे पर एक से एक खूबसूरत युवतियाँ की लाइन लग जाती होगी। नेपोलियन लगातार कई वर्षों की दूरी ने उसे शक्की मिजाज़ का बना दिया था।

वह समझती थी कि नेपोलियन दूसरी औरतों के चक्कर में पड़ गया है।

इधर नेपोलियन भी जोसेफिन के चरित्र पर विश्वास नहीं कर रहा था। वह अक्सर कल्पनाओं में जोसेफिन को पर पुरुषों की बाहों में देखता था।

जोसेफिन को बेवफा समझ कर नेपोलियन अपना चारित्रिक पतन कर बैठा। इसे उसके जीवन की बड़ी त्रासदी ही कहा जायेगा कि जोसेफिन उसके बच्चे की माँ नहीं बन पायी। तब नेपोलियन ने कई स्त्रियाँ से केवल इसलिये सम्बन्ध बनाये कि वो उसे उसके उत्तराधिकारी के रूप में एक पुत्र दे दें तो वह उससे विवाह कर लेगा।


मेरी लुई : नेपोलियन की द्वितीय पत्नी

एक दिन वह भी आया जब नेपोलियन ने जोसेफिन को कानूनी रूप से तलाक देकर मैरी लुई नामक युवती से विधिवत विवाह किया। मैरी लुई ने नेपोलियन की इच्छा को पूरा किया और वह उसके पुत्र की माँ बनी।

मगर नेपोलियन का भटकाव समाप्त नहीं हुआ। उसकी दूसरी पत्नी ने उसे उत्तराधिकारी के रूप में पुत्र तो दिया, किन्तु वह भी उस प्रेम प्यासे भंवरे को संतुष्ट करने में असमर्थ रही।



नेपोलियन : एक प्रभावशाली शासक

सालिसिटी ने वर्षों पहले बोनापार्ट को धोखा दिया था। मगर नेपोलियन भावुक स्वभाव का, और कार्सिका का नागरिक होने के कारण सालिसिटी को अपना बनाए रखना चाहता था। इसके लिए उसने उसके पास क्लार्क को दूत बनाकर भेजने का फैसला किया। क्लार्क व्यवहार कुशल होने के साथ-साथ महत्वकाँक्षी भी था।

क्लार्क मिलान जाते समय बोनपार्ट के साथ था इसलिये वह उस समय उसे अपने मुताबिक चलाना चाहता था। परन्तु प्लाजों सरबेलोनी में सेनानायक के सामने आते ही क्लार्क की सारी चेष्टाएं बेकार हो गयीं।

नेपोलियन का व्यक्तित्व एक प्रभावशाली शासक जैसा था। प्रतिनिधि के रूप में उसने क्लार्क का जोरदार स्वागत किया था। परन्तु वह नेपोलियन की गुप्त योजनायें जानना चाहता था, वह सब उसे असम्भव सा लग रहा था।

नेपोलियन को दो दिन में ही क्लार्क के बारे में पूरी जानकारी मिल गयी थी। पर वह चुप रहा था।

वास्तविकता स्पष्ट होते ही क्लार्क बोनापार्ट के सामने नतमस्तक हो गया। वह अपने मन में सोचने लगा कि यह भविष्य देखने वाला पुरुष है। नेपोलियन के प्रति जो उसके मन में भावना थी वह बदल चुकी थी। नेपोलियन का संदेह भी सही साबित हुआ था।

अभी नेपोलियन के पास मौका बाकी था। वह शीघ्र ही विनाश की धमकी नहीं देता बल्कि उसे उपहार देकर बहलाता था। वह सरकार को लूटा हुआ सोना भेजता था। इसके अलावा वह निदेशकों को खुश करने के लिये उन्हें भी छोटे-मोटे उपहार भेजता था। जिनका इस पत्र से पता चलता है—

"मैं इस समय सौ सर्वश्रेष्ठ घोड़े भेज रहा हूँ। अपनी गाड़ियों को खींचने के लिये तुमने जो बेकार घोड़े लगा रखे थे उनकी जगह अब इन बढ़िया घोड़ों को लगा दो"

जैसे-जैसे नेपोलियन की प्रसिद्धि बढ़ती जा रही थी, वैसे-वैसे उसका व्यवहार और अधिक शिष्ट होता जा रहा था। वह कई घंटे घुड़सवारी करता था। पर पेरिस में बैठे कानून बनाने वाले उसके विरुद्ध काम कर रहे थे। उसकी इच्छाओं के विपरीत जा रहे थे।

नेपोलियन ने एक नया दृष्टि कोण अपनाया। वह इटटी में फ्रांस को सशक्त और पेरिस में अपने आप को प्रभावशाली बना रहा था। वह किसी के भी पूरी तरह स्वतन्त्र होने के हक में नहीं था। इटली को भी वह पूरी तरह स्वतन्त्र नहीं चाहता था। अपनी योजनानुसार ही वह इटली का उपयोग कर रहा था।

बोनापार्ट का असली लक्ष्य यूरोप की स्थापना करना था। उसने उत्तरी इटली के छोटे-छोटे राज्यों को भी मिला लिया था और उनका सावधान भी बना रहा था। उसने वहाँ कई कुशल अधिकारियों के साथ-साथ कई घोषणायें भी की थीं।

फ्रांसीसी गणतन्त्र ने कसम ली थी कि वह अपना शुभ चाहने वालों के साथ दोस्ती का व्यवहार करेगा तथा जितने भी तानाशाह हैं उनसे घृणा करेगा। यह सिद्धान्त सेना के सिद्धान्त जैसा ही था। नेपोलियन का प्रमुख सिद्धान्त है सम्पत्ति की रक्षा करना, मानवता व धर्म के लिये सम्मान का भाव रखना, वह लाम्बार्डी को अपना मित्र मानता था। वह लाम्बार्डी से इसके बदले में सिर्फ इतना ही चाहता था कि वह अपने संसाधनों से उसकी सहायता करे।

इसके बाद नेपोलियन ने अपनी इच्छानुसार प्रान्तों, शिविरों, राज्यों, गांवों से कर की वसूली करनी आरम्भ कर दी। वह जब भी किसी राज्य से सन्धि करता तो उनसे अन्य वस्तुओं की मांग करता, जैसे धन, बैल आदि।

इन सभी वस्तुओं को एकत्रित करके नेपोलियन पेरिस भेज देता था। धन की कमी के कारण बोनापार्ट इटली से इकट्ठा किये गये सामान को शोकेस में बड़ी अच्छी तरह से संजो कर रखता था।

नेपोलियन जब इटली के लोगों से धन इकट्ठा कर रहा था तो ऐसा महसूस होता था जैसे कोई शिकारी घोंसलों से पंख इकट्ठे कर रहा हो। जब उसने देखा कि सूखी घास का स्टाक वजन कम है तो उसने घोषणा की—

"काफी समय से सेना और देश अभाव ग्रस्त है। इसका कारण भ्रष्ट अधिकारी हैं इसलिये यह सबसे ज्यादा जरूरी हो जाता है कि इन भ्रष्ट अधिकारियों को गोली से उड़ा दिया जाये।"

नेपोलियन एक कठोर अनुशासन प्रिय सेनाध्यक्ष था। जब उसने देखा कि कुछ महिलायें सैनिक शिविरों के आस-पास घूमने लगी हैं तो उसने एक कठोर आदेश जारी किया—

"जब ये सूचना चिपकायी जाये उसके चौबीस घन्टों के बाद अगर कोई महिला बिना आज्ञा-पत्र प्राप्त किये शिविर में सेना के बीच दिखायी दी तो उस स्त्री के मुँह पर कालिख पोती जायेगी और उसे इसी स्थिति में दो घण्टों तक जनता के बीच में घुमाया जायेगा।"

यही कठोर सेनाध्यक्ष दूसरी तरफ आदर्श मानवतावादी दिखायी देता था।

नेपोलियन एक कुशल कूटनीतिज्ञ था, इसीलिये वह विदेश-नीति के सभी अंगों को मजबूती देता था।

चापलूसी, धमकाना, झूठा वचन तथा स्पष्टवादिता यह सभी विदेश नीति के अंग हैं और एक विलक्षण तथा कूटनीतिज्ञ के रूप में बोनापार्ट इन सभी अंगों का सही स्थान पर तथा कुशलतापूर्वक प्रयोग करना जानता था।

नेपोलियन ने इटली पर कब्जा कर लिया था। उसका अन्तिम उद्देश्य भी पूरा हो गया था, परन्तु उसके उद्देश्यों का अन्त नहीं हुआ। अब वह एक अन्य दूर स्थित क्षितिज की तरफ नज़र उठाता था। उसने लिखा था–

"हमें यहाँ से मैसीडोनिया पहुँचने में चौबीस घंटे का समय लगेगा। यह स्थान टर्की राज्य को अपने अधिकार में लेने के लिये बहुत उपयोगी होगा।"

वह टर्की से युद्ध करना चाहता था। अंकोन से जानिना, स्कूतरी तथा बोस्निया के शक्तिशाली लोगों के साथ सम्बन्ध बनाने के लिये उसने अपने दूत भेजे।

वह कारफू और जेने को अपने कब्जे में लेने की तैयारी कर रहा था ताकि एड्रिएटिक व पूर्व को एक साथ नियन्त्रण में ले सके। वह सोच रहा था कि टर्की को अब कोई नहीं बचा सकता; जब हम आगोजियन प्रायद्वीप पर कब्जा कर लेंगे तो हम चाहे तो टर्की की मदद करें या फिर उसको तबाह कर दें।

नेपोलियन इंगलैण्ड पर आक्रमण करना चाहता था। फ्रांस की इच्छा थी कि वह लम्बे समय तक भूमध्य रेखा में शक्तिशाली शासन करे। बोनापार्ट इंगलैण्ड को अपना बड़ा शत्रु मानकर उससे युद्ध करने का इच्छुक नहीं था। उसकी कल्पनायें उसकी उपलब्धियों के समान अव्यवहारिक नहीं थीं। उसने यूरोप के जिस हिस्सों को जीता था वह उसे सिर्फ एक छोटी उपलब्धि मानता था।

नेपोलियन एक ऐसे शासन की स्थापना करना चाहता था जिसमें किसी प्रकार का भेद-भाव न हो, जिसमें सब के साथ समान व्यवहार हो। बोनापार्ट ने अपनी सेना में साधारण परिवार के पुत्रों को उच्च पद दिये थे। उसे इस बात का कोई डर नहीं था कि इटली के राजकुमार व ड्यूक इस विषय में क्या विचार रखते हैं।

नेपोलयन की माँ एक गर्वित तथा अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रहने वाली महिला थी। जिसके कारण कई प्रयास के बाद भी नेपोलियन उसका हृदय जोसेफिन के प्रति नम्र नहीं कर पायी थी। जोसेफिन भी नेपोलियन की माँ के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती थी।

नेपोलियन की माँ ने तेरह बच्चों को जन्म दिया था। लेकिन जोसेफिन अभी तक बांझ थी। कई शत्रु नेपोलियन के प्रति तिरस्कार और व्यंग की दृष्टि रखते थे।

लिविजिया उसके दुश्मन की नज़र को अच्छी तरह से पहचानती थी जो

कहते थे कि यह महान पुरुष एक संतान तक पैदा नहीं कर सकता। लेकिन उसमें भला नेपोलियन का क्या दोष है?

जब युद्ध में विजय प्राप्त करके नेपोलियन लौटा तब पहली बार उसकी माँ लिविजिया ने उसे गले लगाते हुये कहा—

"लगता है तुम थक गये हो, क्योंकि तुम पहले से अधिक पतले हो गये हो।

"बिलकुल नहीं माँ।" नेपोलियन ने जल्दी से कहा—"मैं पहले जैसा ही जीवन जी रहा हूँ।"

"हाँ संतान के लिये।" माँ ने पूछा।

नेपोलियन कुछ न बोला।

अलबत्ता लिविजिया से विदा लेते हुए नेपोलियन बोला—"माँ अपनी सेहत का ध्यान रखना, क्योंकि यदि तुम मर गयी तो मेरे सिर पर हाथ रखने वाला कोई नहीं होगा।"

नेपोलियन का पूरा परिवार सुखी जीवन व्यतीत कर रहा था। उसकी तीन बहने, तीन भाई, चाचा फैश, सब माण्टेबेलों में सुखपूर्वक जीवन जी रहे थे।

लिविजिया मन ही मन यह सोच रही थी कि क्या मात्र चार वर्षों में यह सब हो सकता है?

वह यह देख कर सोच में पड़ गयी थी कि जिन लोगों ने उन्हें कार्सिका से बाहर निकाल दिया था, आज वह ही लोग पूरी तरह से उत्साहित होकर उनके स्वागत के लिये खड़े हैं। वह सोचती—कि क्या यह वही नगर है जो लम्बे समय तक नेपोलियन के विचारों तथा भावनाओं का केन्द्र था। आज केवल दूर बैठे उसके आदेश से ही एलिस का पति वहाँ सेनाधिकारी बन गया है।

नेपोलियन शानदार ठाठ-बाठ का जीवन जी रहा था। उसका घर हमेशा खुला रहता था और आने-जाने वाले लोगों का तांता लगा रहता था। यह देख कर सभी लोग हैरान रह जाते थे कि वह कभी विचलित नहीं होता था। वह सादगी से रहता था। उसके विषय में माण्टेबेलों ने लिखा था—

"अगर यह व्यक्ति खुद को युद्ध में मौत से बचा पाया तो चार साल के अन्दर ही या तो इसे देश से निकाल दिया जायेगा या फिर राजगद्दी पर बैठेगा।"

नेपोलियन ने जो भी कार्य किये थे, वो यह बताने के लिये पर्याप्त थे कि वह केवल एक राजनेता ही नहीं, बल्कि एक युग का निर्माण करने वाला व्यक्ति है। एक सेना निर्माता जिसे अपनी प्रत्येक इच्छा पर संयम था। नेपोलियन के व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुये एक बुद्धिमान समीक्षक ने कहा है—

"जो कोई भी इस विलक्षण पुरुष के सम्पर्क में आया है वह उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। अगर कभी उसका आचरण प्रभाव न डाल पाये तो भी

उसका स्वभाव, वाणी, उसकी दृष्टि मोहित किये बिना नहीं रहती है। हर व्यक्ति उसके आदेशों का पालन करता था। जब वह सार्वजनिक स्थानों पर या जनता के सामने होता था तब वह इस प्रभाव को जान-बूझकर और बढ़ा-चढ़ा कर दिखाता था। जबकि उसके विपरीत अपने जीवन में वह एक स्वच्छन्द हास्यप्रिय तथा रहस्यमय प्रकृति का व्यक्ति था। काम के प्रति उसका लचीला व्यवहार था। आनन्द के क्षणों में वह लगातार भाग लेता था और उस समय वह वक्त की परवाह नहीं करता था। उस समय वह हर किसी से मिलता था। वैसे उसकी आज्ञा के बिना उससे कोई नहीं मिल सकता था।"

बोनापार्ट को वार्तालाप में भाग लेना पसन्द था। वह हर विषय पर बातचीत करना चाहता था, चाहे वह राजनीति हो या फिर सामान्य प्रश्न हो। बातें करते समय वह कहानियाँ सुनाता था। सुन्दर स्त्रियाँ जल्दी ही उसकी ओर आकर्षित हो जाती थीं और उसे अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करती थीं। लेकिन उनका यह प्रयास बेकार जाता था। क्योंकि वह पूरी तरह से अपनी प्रिय पत्नी जोसेफिन की ओर समर्पित था।

जिस साल उसने जोसेफिन से धोखा खाया, उससे एक साल पहले तक वह उसके प्रति इतनी आसक्ति नहीं रखता था। जोसेफिन के इसी प्रकार के व्यवहार ने बोनापार्ट को आत्मसमर्पण के लिये विवश कर दिया था। उसने जोसेफिन को पत्र लिखते हुए लिखा था–

"मैंने अभी-अभी रोम के साथ शान्ति प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किये हैं। मैं बोलना, फेरारा व रोमन को जीत चुका हूँ, परन्तु यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं तुम्हें इतना प्रेम करने के बावजूद भी तुम्हारे हृदय को नहीं जीत सका हूँ। तुम्हारी तरफ से एक पत्र भी नहीं आया है। ओ मेरे दिल की मल्लिका! तुम भला मुझसे कैसे नाराज हो सकती हो? मुझे लगता है कि शायद तुम यह नहीं जानती कि मैं तुम्हारी ही ताकत के सहारे खड़ा हूँ। मेरा पूरा जीवन तुम्हारे लिये ही समर्पित है।"

नेपोलियन के दिमाग में बड़ी-बड़ी महान् योजनायें चलती रहती थीं। उसका विश्वास था कि उसकी इन योजनाओं के बल पर उसे प्रसिद्धि अवश्य ही मिलेगी। इसी विचार के साथ वह मिलान व माण्टेबेलों लौटा। जहाँ उसे इटली को आखरी आदेश देने थे। पेरिस में वह शान्ति उपहार लेकर जाना चाहता था। उसने अपनी प्रजा को संदेश देते हुए कहा–

"तुम्हारा राष्ट्र पहला ऐसा राष्ट्र है, जिसे स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये कोई संघर्ष नहीं करना पड़ा। यह आश्चर्य की बात है कि आप लोगों के देश को स्वतन्त्रता पाने के लिये किसी क्रान्ति या युद्ध की जरूरत नहीं पड़ी। हमने तुम्हें स्वतन्त्रता दी है और उसे बनाये रखता तुम्हारा काम है। मैंने तुम्हारी स्वतन्त्रता

को सुरक्षित करने तथा देश को समृद्ध करने के लिये अपनी शक्ति द्वारा एक कार्य को पूरा कर दिया है। कुछ समय बाद मैं तुम्हें छोड़कर चला जाऊँगा। मेरे दिल में तुम्हारी खुशी और गणतन्त्र के गौरव का सम्मान हमेशा रहेगा।"

यह युद्ध का आगाज़ करने वाले एक योद्धा की आवाज़ थी। उसने अपने एक अन्य भाषण में कहा था—

"जनता को ऐसा एक मुखिया चाहिये, जो उन्हें विजय दिलाने वाला हो, उन्हें सिद्धान्त व सरकारें नहीं चाहिये। जनता को बालक के समान बहलाने के लिये एक खिलौना दे दो तो वह उसमें मस्त रहेगी और अपना नेतृत्व करने की अनुमति दे देगी। परन्तु नेता को सावधान रहकर अपने लक्ष्य को कुशलतापूर्वक पहुँचाने वाला होना चाहिये। सही रूप से शक्ति की स्थापना हो जाने के बाद मुझे अपनी प्राप्त की गयी शक्ति तथा पद को त्यागना होगा और तब मैं सेनानायक नहीं रहूँगा। अगर मैं इटली को छोड़ देता हूँ तो मैं अपनी इसी भूमिका को फ्रांस में भी निभा सकता हूँ।"

आगे उसने कहा—

"सब वैसा ही हुआ जैसे मैंने सोचा था। इसलिये पूरे विश्व में केवल मुझे ही आश्चर्य नहीं हुआ है। यही सब आगे भी होने वाला है। मैं वहाँ-वहाँ से अपना रास्ता बना लूँगा जहाँ-जहाँ से भी चाहूँगा।"

विचारों का बहुत महत्व होता है। विचारों द्वारा कोई भी व्यक्ति आसानी से अपना रास्ता बना लेता है। नेपोलियन इटली में दो साल तक रहा अब वह वहाँ से जा रहा था। ब्राउरिनी के साथ गाड़ी में यात्रा करते हुये नेपोलियन ने उससे कहा—

"इस प्रकार के अभियान से हमारा यश चारों ओर फैल जायेगा और इसे आने वाली पीढ़ियाँ हमेशा याद रखेंगी।"

जब उसके मित्र ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा कि वह काफी प्रतिष्ठा पा चुका है तो उसने कहा था—

"ब्राउरिनी! तुम मेरी झूठी प्रशंसा कर रहे हो। अगर आज मैं मर जाऊँ तो मेरे द्वारा किये गये कार्य इतिहास में आधे पृष्ठ में ही सिमट कर रह जायेंगे।"

नेपोलियन जाने क्यों अपनी वाह-वाही पाने से कतराता था। वह आडम्बर में विश्वास नहीं करता था। अतः वह जन समूह के सामने अपने सैनिक वेश-भूषा में ही आता था। उसके पीछे-पीछे उसके तीन सहायक भी होते थे। उसके चेहरे पर शान्ति और गम्भीरता हमेशा बनी रहती थी।

नेपोलियन चुपचाप आकर मंच पर खड़ा हो जाता था और अपना भाषण इस प्रकार देना आरम्भ करता था—

"प्रजातन्त्र का युग शुरू हो चुका है। यूरोप को दो हजार वर्षों तक राजशाही,

सामन्तवाद के राज से निरस्त रहना पड़ा, फ्रांस को स्वतन्त्रता के लिये अपने ही राजाओं से लड़ना पड़ा। देश की प्राकृतिक सीमाओं को बढ़ाने में आप लोगों का पूरा योगदान रहा है। आप लोगों ने बहुत अच्छा किया। मैं राजा फ्रांसिस द्वारा निर्धारित शर्तों पर सन्धि वार्ता करने में गौरव महसूस कर रहा हूँ। सैनिकों के उत्कृष्ट तरीके से जिस प्रकार फ्रांस का भाग्य सुरक्षित हो गया है, उसी तरह से यदि आप लोगों का सहयोग साथ रहा तो यूरोप भी आजाद हो जायेगा।"

यह सब कहकर नेपोलियन खामोश हो गया। कुछ देर के लिये चारों तरफ शान्ति हो गयी फिर तालियाँ गूंजती रहीं। सुनने वाले हैरान थे, क्योंकि बोनापार्ट एक अच्छा वक्ता था; मगर आज उसके भाषण में न तो पेरिस की दीवारों को हिला देने वाली गर्जना थी न ही उसकी प्रसिद्ध बोलने वाली कला दिखायी दी। भाषण में केवल चेतावनी दी गयी थी।

यह एक शासक का भाषण था। अपने भाषण में उसने जो कुछ भी कहा था वह सच नहीं था। फ्रांस की पहचान तब बन सकी जब जर्मनी के साथ उसका समझौता हुआ। इसका प्रमाण महाद्वीप में सन्धि का दस्तावेज है।

इस भाषण के बाद बरास ने पहली बार उसे गले लगाया। नेपोलियन के जीवन के इतने बड़े अवसर पर उसकी पत्नी जोसेफिन उपस्थित नहीं थी। वह कहाँ थी इस बात को कोई नहीं जानता था। जब वह पेरिस पहुँची तो नेपोलियन को पेरिस पहुँचे हुए एक महीने से ज्यादा हो चुका था। पेरिस पहुँचते ही उसने अपने प्रेमियों से फिर सम्बन्ध बनाना आरम्भ कर दिये थे।

इधर नेपोलियन के जीवन में भी मैडम स्टेल नाम की सुन्दर स्त्री प्रवेश कर चुकी थी। उस सुन्दर स्त्री के आग्रह पर टैलीरैण्ड को विदेश मन्त्री बनाया गया था, फिर भी वह उसे अपनी सुन्दरता के जाल में नहीं बांध सकी।

नेपोलियन पूरी तरह से उसके सम्मोहन से नहीं निकल पाया था। नेपोलियन का चित्रण करते हुए उसने लिखा था—

"वह एक सुन्दर चेहरे वाला व्यक्ति है। उसके चेहरे पर निराशा की छवि है और वह छोटे कद का है, इसीलिये वह अपने पांवों पर खड़ा हुआ इतना प्रभावशाली नहीं लगता जितना कि घोड़े की पीठ पर बैठा हुआ लगता है। वह स्वभाव से संकोची नहीं है, फिर भी समाज में लोगों के साथ उसका आचरण अधिक अच्छा नहीं है। उसका क्रोध से तमतमाया हुआ चेहरा अच्छा लगता है। मैं चाहती हूँ कि वह सभ्य बने।"

उसने आगे लिखा—"वह सबसे ज्यादा महत्व खुद को देता है। खुद से ज्यादा महत्वपूर्ण उसके लिये कोई भी व्यक्ति नहीं हो सकता। वह न तो किसी से प्रेम ही करता है और न किसी से घृणा करना जानता है। वह इस बात को अच्छी तरह से जानता है कि अगर व्यक्ति का लक्ष्य अच्छा हो तो उसे प्राप्त करने पर

सराहना होती ही है। वह जिस राष्ट्र की सराहना करता है वास्तव में वह उससे घृणा करता है। उसका एक मात्र लक्ष्य मानव जाति को आश्चर्यचकित करना है। इसी इच्छा को वह महत्व देता है। जब वह होता है तो मैं कभी भी खुलकर सांस नहीं ले सकती।"

उसने नेपोलियन के चरित्र को बड़ी ही सावधानीपूर्वक अध्ययन करने की कोशिश की। यह पूरा विवरण एक निश्छल, सराहनीय व कुशल स्त्री की अभिव्यक्ति कही जा सकती है। वह अच्छी तरह से इस बात को जानती भी, कि निरंकुश शासक को संसार में कोई मतलब नहीं होता है।

जिस घर में जोसेफिन रह रही थी उस घर को नेपोलियन ने खरीद लिया था। वह ज्यादातर साधारण कपड़े ही पहनता और अकेले ही घूमने निकल जाता। वह हमेशा ही भीड़-भाड़ वाली जगहों से दूर रहता था और अपनी प्रतिष्ठा के विषय में चिन्ता करते हुए विचार किया–

"अगर मैं इसी तरह यहाँ निष्क्रिय बैठा रहा तो मेरी निष्क्रियता मेरी प्रतिष्ठा को खत्म कर देगी। इसलिये मेरा यहाँ से चले जाना ही उचित होगा।"

नेपोलियन योजनाबद्ध तरीके से पूरी तैयारी करके डिनकिर्क की ओर रवाना हो गया। वहाँ उसने समुद्र के किनारे पहुँच कर मछुआरों और तस्करों से पूछताछ की। जोसेफिन को नेपोलियन के आने की खबर नहीं थी। उसने अचानक उसे सामने देखा तो भयभीत हो गयी। परन्तु नेपोलियन की जानकारी में यह बात रह गयी। उसने एक पुराने प्रसिद्ध सचिव को जल्दी से कुछ वाक्य लिखकर एक पत्र भेज दिया।

नेपोलियन के अभियानों में सैकड़ों गुप्तचर कार्य में लगे हुए थे, उन्हीं में एक गुप्तचर उसके लिये गुप्त संदेश लेकर पहुँचा। जोसेफिन के उस पत्र को पढ़कर कुछ न कर सका था।

नेपोलियन को बरास द्वारा आमन्त्रित रात्रि भोजन में जाना था। लेकिन उसने जाने के बजाये उसे संदेश भेजा–

"मुझे इस बात का दुःख है कि मैं प्रयास करने के बावजूद भी रात्रि भोजन में शिरकत नहीं कर पाऊँगा।"

नेपोलियन अभी भी विवाह की मर्यादाओं में बंधा हुआ था। लेकिन बरास की स्थिति निश्चित नहीं थी। बरास एक शक्तिहीन निदेशक सेना के सशक्त अध्यक्ष के प्रति घृणा का भाव रखता था।

जोसेफिन एक खुले विचारों वाली अड़ियल किस्म की महिला थी। वह अपना समय व्यतीत करने के लिये महिलाओं से बातचीत करती या फिर पुरुषों के शयनकक्ष में अपना समय गुजारती थी।

नेपोलियन के साथ वह औपचारिकता का निर्वाह मात्र कर रही थी। नेपोलियन को एक पत्र लिखते समय वह अपना नाम वही लिखती थी जो विवाह से पहले लिखती थी। जैसे वह अभी भी अविवाहित हो और अपने लिये किसी जीवन साथी की खोज कर रही हो।

नेपोलियन ने अगले दिन बरास को रिपोर्ट भेजी—

"लगातार कई बड़े-बड़े प्रयास करने पर भी समुद्र पर जीत हासिल करने के लिये हमें कई साल लग जायेंगे। अगर हम इंग्लैण्ड पर हमला करते हैं तो यह एक आत्मघाती प्रयास होगा। इन हमलों का प्रयास प्रायद्वीप के निवासियों को भी हैरान कर देगा। इसलिये हमें अगले साल का इंतजार करना होगा, क्योंकि ऐसा प्रयास केवल लम्बी ठंडी रातें में सही होगा। अगर हम इससे पूर्व हमला करते हैं तो महाद्वीप में बाधाओं की भी काफी संभावना है और ऐसा भी हो सकता है कि इसके बाद दोबारा प्रयास करने का मौका न मिले।"

इसके बाद नेपोलियन ने इंगलैण्ड पर हमला करने की विलक्षण योजना बनायी। वह मिस्र में अंग्रेजों के व्यापारिक माल को लूटना चाहता था। उसके बाद वह इंगलैण्ड पर हमला करना चाहता था। निदेशक चाहते थे कि बोनापार्ट उनसे दूर ही रहे। वह चाहते थे कि उसे दूर रखकर जान से मरवा दिया जाये।

टैलीरैण्ड ने एक पत्र को बोनापार्ट एक टिप्पणी के साथ आगे भेज दिया। यह टिप्पणी इस प्रकार थी—

"इस अभियान के नेता में असाधारण सैन्य संचालन की क्षमता होना जरूरी नहीं होगा।"

इस टिप्पणी से पता चलता है कि वह बोनापार्ट को फ्रांस में ही रखना चाहता था, या फिर यह टिप्पणी उसके मन में बोनापार्ट के प्रति घृणा की भावना को दर्शाती है।

बोनापार्ट खुद को इन विचारकों की तरह उच्चकोटि का बनाना चाहता था, जिन्होंने खुद को संसार के सामने सबसे अधिक महत्वपूर्ण उदाहरण बनाकर प्रस्तुत किया।

बोनापार्ट किसी अनजाने तथा बड़े संघर्ष के बारे में गहराई से सोचता था। उसे मालूम था कि हमला किये बिना किसी भी समस्या को सुलझाना आसान नहीं है। उसने यह सब सोचते हुए अपने भाई को एक पत्र लिखा—

"मैं सभी साधनों के साथ पूर्व की ओर जा रहा हूँ। जब भी युद्ध होगा मैं वापस लौट आऊँगा।

ब्राउरिनी के यह पूछने पर कि वह कितने समय तक बाहर रहेगा तो उसने उत्तर दिया— "छः माह या छः वर्ष।"



लम्बे समय के लिए युद्ध पर निकला नेपोलियन

अन्तिम क्षणों में किस्मत उसे चेतावनी देना चाहती थी। आस्ट्रिया रसटाट में राडन के बायें किनारे को छोड़ने को मना कर दिया था।

नेपोलियन फिर मिलान पहुँचा। उसके दो साल बाद चार सौ पोत टाउलन से समुन्द्र में पहुँचाये गये। उसके डांटने पर जोसेफिन भी वहाँ आ गयी थी। जोसेफिन का दिल उगेनी से ज्यादा लगा हुआ था।

नेपोलियन को इस बड़े उपकरण को चलाने की आज्ञा नहीं थी। वह समुन्द्र के किनारे दक्षिण पूर्व को निहार रहा था।

दूसरी ओर उसी समय नेल्सन तथा दूसरे अंग्रेज सेनानायक अपने पोतों की डेक पर खड़े होकर अपने टेलीस्कोप से समुन्द्र में अपने दुश्मन पर नज़र रखे हुए थे। नेल्सन का बेड़ा एक आँधी में घिर गया था तब सभी पोत कई दिनों के बाद आपस में मिल पाये थे।

बोनापार्ट का भी लगभग यही हाल था। वह भी आँधी में फंस कर लगभग चौबीस घंटे तक टाउलन में रुका रहा था। इस प्रकार आंधी ने फ्रांस को बचा लिया। नेपोलियन अंग्रेजी जहाजों के बेड़े के पहुँचने से पहले ही माल्टा पहुँच गया। भयंकर मुकाबले के बाद एक महत्वपूर्ण प्रायद्वीप पर उसने अपना कब्जा कर लिया।

नेपोलियन की नज़र मिस्र से आने वाले हर पोत पर लगी हुई थी। लेकिन दुश्मन उसके हाथ से बचकर निकल गया था। वह दुश्मनों को खोजता हुआ उसके

पीछे-पीछे सीरिया पहुँचा और वहाँ उसने स्वयं को और दुश्मन को कोसते हुए कहा–

"कुछ नहीं है, वापस सिसली लौट चलो। बदकिस्मत का पीछा हमेशा बदकिस्मती करती रहती है।"

फ्रांस का बेड़ा चार हफ्तों तक समुन्द्र पर रहा। नेपोलियन समुन्द्री यात्रा से दिल चुराता है, जिससे पता चलता है कि उसमें समुन्द्र सेना का नेतृत्व करने की क्षमता नहीं थी।

कुछ दिन बाद बोनापार्ट घोड़े पर सवार होकर रेत पर धीर-धीरे बढ़ता रहा। वह युद्ध के लिये तैयार था। उसने घोड़े पर सवार होकर सेना से कहा–

"सिपाहियों, तुम्हारी तरफ चालीस सदियों की आशा से भरी आँखें लगी हुई हैं।"

मामेल्यूक ने फ्रांसीसी सेना पर हमला कर दिया मगर वह जल्दी ही मुंह की खा गया। वह तोप के गोले की मार झेल नहीं पाया, इसलिये उसे पीछे हटना पड़ा। जल्दी ही बोनापार्ट ने उसके शिविर पर कब्जा कर लिया।

नेपोलियन ने काहिरा में त्रेख व पाशा को अपनी तरफ करने की कला में विशेषता दिखायी। उसने घोषणा की कि वह जो भी आक्रमण करेगा वह मामेल्यूक पर ही करेगा। वह उसका दुश्मन है, वह तुर्क व सुल्तान का सम्मान करता है।

वहाँ नेपोलियन एक कुशल कूटनीतिज्ञ की भांति कूटनीतियां अपना रहा था। उसने मिस्र के पाशा को लिखा–

"मैं काहिरा को इन दुष्ट उपद्रवियों पर विजय दिलाने के इरादे से युद्ध कर रहा हूँ। आप लोग जानते हैं कि मेरा अभियान आपके खिलाफ नहीं है। मैं आपकी शक्ति एवं प्रतिष्ठा पर आक्रमण नहीं करना चाहता। मुझे विश्वास है कि आप मुझे खुशी-खुशी प्रवेश करने की मंजूरी दे देंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि कुरान या सुल्तान के खिलाफ कुछ नहीं किया जायेगा। आप मेरी सहायता के लिये आयें और इस नास्तिक जाति का दमन करने में मेरी मदद करें।"

नेपोलियन को जिस धर्म की प्रशंसा करनी होती थी पहले वह उस धर्म की विशेषताओं के बारे में मालूम करता था। फिर उसका उपयोग एक राजनीतिक शास्त्र के रूप में करता था।

उसने कुरान को अपने विचारों का आधार बनाया और उसे प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया। काहिरा में जब उसने एक खतरनाक सैनिक को निकालते हुए कहा था–

"ईश्वर का हर कार्य अच्छाई के लिये ही होता है। ईश्वर ही हमें विजय दिलाता है। मेरे द्वारा किये गया हर संकल्प सफल ही होता है। हालांकि कई बार मेरे मित्रों ने मेरा विश्वास तोड़ा है, मगर भरोसा रखो मेरे शत्रुओं की सहायता

करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को मृत्युदण्ड दिया जायेगा।"

उसे अच्छी तरह से पता था कि अंग्रेजों का स्वभाव शक करने वाला होता है। वह उनसे नफरत करता था और समय आने पर इसका प्रदर्शन भी करता था।

ऐसे समय में अचानक उसे जोसेफिन का एक पत्र मिला जो उसके दोस्त ने नेपोलियन को लिखा था। पत्र पढ़ने के बाद उसने बेचैन होकर गुस्से से अपने माथे पर तीन चार मुक्के मारे और शिविर से बाहर बैठ ब्राउरिनी के पास जाकर बोला–

"तुम एक अच्छे मित्र नहीं हो।"

"मुझसे कोई गलती हो गई है क्या?" ब्राउरिनी ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"तुम्हें जोसेफिन के बारे में मुझे बताना चाहिये था।"

"क्या?"

"तुम अच्छी तरह से जानते हो जुनोट मेरा अच्छा मित्र है, जोसेफिन मुझसे दो हजार मील से भी ज्यादा दूरी पर है। वह मेरे साथ इस प्रकार से विश्वासघात नहीं कर सकती। अगर वह दोषी है तो मैं त्याग दूँगा।"

ब्राउरिनी ने उसे समझाने की पूरी कोशिश की। लेकिन नेपोलियन ने उसकी एक न सुनी और कहा–

"यश का क्या मूल्य है? मैं उसके लिये संसार की प्रत्येक वस्तु को त्यागने के लिये तैयार हूँ। मैं संसार में उसे सबसे अधिक प्रेम करता हूँ। ईश्वर करे जुनोट की खबर सही न हो।"

फिर उसने परेशानी में अपने भाई जोसेफ को एक पत्र लिखा जो उसके स्वाभिमान को प्रदर्शित करता है–

"मैं दो-तीन दिनों तक फ्रांस लौट सकता हूँ। मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि मेरे हितों का ध्यान रखना, मेरे घर पर संकट आया है। तुमसे ज्यादा मेरे लिये कोई विश्वसनीय नहीं है। तुम्हारा प्यार मेरे लिये बहुत कीमती है। अगर तुमने मेरे साथ विश्वासघात किया तो मैं और भी दुःखी हो जाऊँगा। कृपया ऐसी व्यवस्था करो कि घर लौटते ही मैं पेरिस या बरगैण्डी पहुँच जाऊँ, जहाँ मैं अकेले में सर्दियां बिता सकूँ। मैं पूरी तरह से टूट चुका हूँ। मनुष्य के लिये मेरे दिल में घृणा भर चुकी है।"

बोनापार्ट काफी व्याकुल था। दुनिया में अब उसके भाई के सिवा कोई नहीं रह गया था। सिर्फ एक ही आघात ने उसके पूरे जीवन को हिलाकर रख दिया था।

समुन्द्री सेना के युद्ध में केवल चार जहाज ही बच पाये थे। बाकी सभी जहाज या तो डूब गये थे या फिर नेल्सन के कब्जे में चले गये थे। नेपोलियन भी निराश था। फिर वह अपने आपको उत्साहित करते हुए बोला–



नेपोलियन का पुत्र और फ्रांस-इटली साम्राज्य का वारिस

"अच्छा तो हम मिस्र से हार गये। तूफानी बरसात है इसलिये जरूरी है कि हम अपना सिर ऊँचा रखें। हमें पुराने योद्धाओं की तरह ही धैर्य रखना होगा और यथासम्भव अपनी विजय पताका को फहराना होगा।"

नेपोलियन के लिये घर लौटने का कोई अवसर नहीं मिल रहा था और न ही कोई सम्भावना बन रही थी। चार साल बाद उसने घोषणा की थी–

"केवल मिस्र ही ऐसी जगह है जहाँ से मेरे सारे सपने सच होते दिखायी देने लगे हैं। मैं जहाँ खुद को सभ्यता की जकड़न से मुक्त महसूस करता हूँ। मेरी इच्छा भारत को अंग्रेजों के राज्य से मुक्त करने के बाद यूरोप के साथ नये सम्बन्ध जोड़ने की है तथा मैं इतिहास को नया रूप दूँगा।"

नेपोलियन को अपने पिता न बन पाने का दुःख था क्योंकि उसके लिए पत्नी बांझ थी। कई सालों से वह अपनी संतान के लिये तरस रहा था। वह अपना वारिस देखने के लिये छटपटा रहा था। वह किसी ऐसी स्त्री की तलाश में था जो उसे पुत्र दे सके। इसलिये उसने कई स्त्रियों से सम्बन्ध बनाये थे।

वह इस समय अत्यन्त मानसिक तनाव से गुजर रहा था। क्योंकि नील नदी पर होने वाले युद्ध ने उसकी योजनाओं को खराब कर दिया था। समुन्द्र तट पर अंग्रेज रुकावट बन कर खड़े थे। सुल्तान उसका दुश्मन बन चुका था। मिस्र भी दुश्मनी करने को आमादा था। हालात बदल चुके थे। नेपोलियन की कोई भी योजना सफल नहीं हो पा रही थी।

बोनापार्ट ने जब देखा कि अंग्रेज चढ़ाई करने आ रहे हैं, तो उसने अपने आपको विनाश से बचाने के लिये चढ़ाई करने की सोची। अतः उसने अपनी बची-कुची सेना को संगठित कर सीरिया जाने की सोची।



सीरिया की ओर

सीरिया की ओर जाने वाला मार्ग सुगम नहीं था। वहाँ तक जाने के लिये घोड़े पर सवार होकर जाना पड़ता था। जिस कारण उसे लगातार पन्द्रह-पन्द्रह घंटे तो क्या कभी-कभी दिन-रात घुड़सवारी करनी पड़ती। कभी वह भूखा-प्यासा बिना अंगरक्षक को लिये मीलों पैदल चलता।

जबरदस्त रुकावटों को पार करता और परेशानियों को झेलता हुआ वह सीरिया तक जा पहुँचा। नेपोलियन ने अपनी वाणी से अपनी सेना में ऐसा विजय मन्त्र फूंका कि फ्रांस की सेना भूखे शेरों की भांति सीरिया सैनिकों पर टूट पड़ी।

सीरियाई सेना नेपोलियन की सेना के इस हमले को झेल नहीं पाई और हजारों तुर्की सैनिकों ने उसकी सेना के सामने हथियार डाल दिये। उन्हें बंदी बना लिया गया।

बोनापार्ट ने तीन दिन तक सोचा और अन्त में सभी तुर्की सैनिकों को समुन्द्र में ले जाकर डूबोकर मार डाला।

अब नेपोलियन के सामने आकेर का किला था। जहाँ से उसे हथियारों के भण्डार प्राप्त हो सकते थे। इन दिनों उसके सारे सपने साकार हो रहे थे। उसने तुर्की पर युद्ध करने की घोषणा कर दी। उसने अपनी योजना को अपने एक अधिकारी को बताते हुए कहा—

"आकेर को उसने कब्जे में लेकर मैं दमिश्क व अलेप्पो पर आक्रमण करूँगा तथा अपनी सेना में वृद्धि करता जाऊँगा, क्योंकि मैं लोगों के सामने यह घोषणा करूँगा कि वे तानाशाह पक्ष के शासन का विरोध करें तथा उसे पलट दें। इसके बाद मैं विशाल सेना के साथ 'कान्सटैण्टी नोपल' पर जबरदस्त आक्रमण कर उसे अपने अधिकार में ले लूँगा और फिर तर्की को नष्ट करके उसके स्थान पर साम्राज्य स्थापित करूँगा।"

नेपोलियन आकेर के किले के पास पहुँचा तो वहाँ का दृश्य देखकर वह हैरान रह गया।

पूरा किला आधुनिक हथियारों से सुसज्जित अंग्रेज अधिकारियों व तोपचियों से सुरक्षित था।

नेपोलियन ने आकेट को तीन बार जीतने का प्रयास किया मगर उसे सफलता नहीं मिली। तब उसने सोचा—हमें जीते बिना ही यहाँ से लौट जाना चाहिये।

नेपोलियन की आज्ञा से दो हजार बीमार व्यक्ति, दो हजार स्वस्थ व्यक्ति उस

रेगिस्तान से धीरे-धीरे आगे बढ़े। रोगियों को ले जाने के लिये उनके पास पर्याप्त घोड़े भी नहीं थे। अन्त में विजय सेना काहिरा पहुँची।

मिस्र के लोगों के सामने वह कब्जे के लिये ध्वजों का प्रदर्शन करके सैन्य संचालन करते हुए तथा विजय घोष करके उन्हें धोखा देने का प्रयास किया। परन्तु उनका प्रयास निरर्थक साबित हुआ। वह यह सोचकर चिंतित हुआ कि पेरिस में जाकर क्या कहेगा कि वे आकेर क्यों हार गये?

वे समन्द्र से तुर्की पर उतर आये थे। वे फ्रांसीसी सेना को खत्म करना चाहते थे। नेपोलियन ने पहले उन्हें भूमि पर कब्जा करने दिया। फिर उसके बाद करारी दी। युद्ध के पश्चात् मुराट ने उससे गले मिलते हुए कहा–

"जनरल! तुम्हारे लिये यह संसार छोटा है, क्योंकि तुम एक महान व्यक्ति हो।"

अचानक नेपोलियन को सूचना मिली कि स्कैटर मारा गया है और वो इटली को गंवा चुके हैं। यह सुनते ही वह उछल कर खड़ा हो गया। सुबह होते ही उसने अपने सेनानायक को बुलाया और काहिरा के लिये निकल पड़ा।

बंद दरवाजे के अन्दर नेपोलियन ने अपने वफादार मार्मोन्ट से कहा–

"मैं निश्चय कर चुका हूँ कि फ्रांस लौटूंगा। तुम मेरे साथ चलोगे। हमारी



नेपोलियन काहिरा के लिए सेना का नेतृत्व करता चल पड़ा

सेना हार चुकी है। दुश्मन कहाँ तक कब्जा कर चुका होगा यह तो ईश्वर ही जानता है। इटली हमारे हाथ से निकल चुका है। मैंने जितनी विजय हासिल की है उनसे एक सरकार का निर्माण हुआ है।"

मार्मोण्ट वापस लौटने की तैयारी में जुट गया।



बोनापार्ट फ्रांस में

नेपोलियन की सेना को फ्रांस लौटने के लिये समुन्द्री मार्ग से जाने का खतरा उठाना पड़ा। दो छोटे युद्धपोत समुन्द्र में उतारे गये। उन दोनों युद्धपोतों को कई सप्ताहों तक लगातार खतरों से गुजरना पड़ा। नेपोलियन ने कहा—

"अगर हमें अंग्रेजी बेड़े ने देख लिया तो हमें निश्यित ही आत्म समर्पण करना पड़ेगा; क्योंकि डरकर भागने का कोई रास्ता नहीं है। तुम अच्छी तरह से जानते हो कि तुम्हारी अपेक्षा मुझे अधिक लाभ होगा। इसलिये मुझे उम्मीद है कि तुम लोग ऐसा कुछ नहीं करोगे। इसके अलावा यदि दूसरा कोई विकल्प है तो वह यह है कि पोत को उड़ा दिया जाये।"

इसी प्रकार उन्हें छः हफ्ते गुजर गये। तब भूमध्य सागर से एक प्रायद्वीप दिखायी देता है। क्षितिज से दूर एक पर्वत चोटी भी दिखाई दे रही थी यह चोटी नेपोलियन को कुछ जानी-पहचानी सी लगी। तभी बोनापार्ट ने उन्हें बताया—

"यह कार्सिका है।"

बोनापार्ट युद्धपोत चालक को आगे बढ़ने के लिये कहा। आगे बढ़ते ही उसे ऐसे संकेत मिले, जैसे उसकी मातृभूमि फिर से अपना प्यार भरा आंचल उसके लियें फैलाये खड़ी है।

कार्सिका पहुँचने ही उसका भव्य स्वागत हुआ, जिसे देखकर नेपोलियन भावुक हो गया और उसने उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। हजारों लोग उससे हाथ मिलाने के लिये आतुर थे।

पर नेपोलियन के कदम [illegible] उस घर की तरफ बढ़ रहे थे जिसे उसकी माँ ने बनवाया था। उस घर में अब कोई नहीं रहता था। उसने अपने मित्रों से अपने परिवार की कुशलता जानने की कोशिश की।

बाहर आकर वह छोटी-सी गली की तरफ मुड़ा तो भावुकता से कह उठा—

"यह मेरा घर है।"

नगर के सभी लोग उसके आने की खुशियाँ मना रहे थे। वह अपने साथ अपने देश के लोगों के लिये नई आशा, कीर्ति, शान्ति व खुशी लेकर आया था।

जिस समय नेपोलियन पेरिस में था उसकी पत्नी उसके साथ नहीं थी। वह गोटियर के निदेशक के साथ भोजन कर रही थी। सूचना मिलते ही दोनों सतर्क हो गये। क्योंकि अब दोनों खतरे में आ चुके थे।

बरास, जो समय-समय पर जोसेफिन से संसर्ग प्राप्त करता रहता था, उसने उसे सलाह दी थी कि वह नेपोलियन के साथ अपने सम्बन्ध तोड़ दे।

इधर नेपोलियन के आगमन पर पेरिस में जश्न मनाया जा रहा था। ऐसी स्थिति में जोसेफिन ने सोचा वह स्वयं को वर्तमान में सुरक्षित स्थान पर रखे।

यही सोचकर वह गोटियर के साथ खाना खाने के बाद अपने घर पहुँची और फिर तैयार होकर दक्षिण की ओर निकल पड़ी। उसे अपनी सुन्दरता पर घमण्ड था। वह सोचती थी कि वह उसका दिल जीत लेगी।

लेकिन जोसेफिन की यह धारणा गलत थी। जल्दी ही नेपोलियन पेरिस की ओर रवाना हो गया। उसे जोसेफिन की वास्तविकता का पता चल चुका था। इसलिये अब जोसेफिन बोनापार्ट को पूरी तरह खो चुकी थी।

पर जोसेफिन उसके पास पहुँची। वह जान चुकी थी कि नेपोलियन काफी लोकप्रिय हो चुका है, इसलिये अब उसका घमण्ड टूट चुका था। लेकिन अब नेपोलियन उससे बिल्कुल भी प्रभावित नहीं था। वह अडिग बना खड़ा रहा।

जोसेफिन एक आखरी प्रयास करने की कोशिश कर रही थी। वह बहुत चीखी-चिल्लाई और उसने आँसू भी बहाये परन्तु नेपोलियन उस धोखेबाज़ स्त्री के झांसे में आने वाला नहीं था।

उसे घर वापस आये दो हफ्ते हो चुके थे। उसका मानसिक तनाव लगातार बढ़ रहा था। राज्य का काम रुक सा गया था। नया संविधान जैसे एक धमाके से उड़ गया था। राज्यसत्ता का असली मालिक कौन है, कोई नहीं जानता था।

कोई यह भी नहीं बता सकता था कि बोनापार्ट और सरकार के सम्बन्ध कैसे हैं? बोनापार्ट का कहना था—

"राष्ट्र को महान बनाने का काम मैंने किया है।"

उसके इस प्रकार के कथन पर दुःख प्रकट करते हुए ओबेसियरा कहता था—

"तुम यह सब कभी नहीं कर सकते थे, अगर हमने सबसे अधिक राष्ट्र को महत्व न दिया होता या उसे प्रमुख न माना होता।"

उस रात के समय नेपोलियन सभी विषयों पर विचारमग्न बैठा था। वह अपनी पुरानी बातों को याद करके इस निष्कर्ष पर पहुँचा—

"क्या मैं सियरा के अधीन रह सकता हूँ? दस वर्षों से वह संविधान बना रहा है परन्तु वह एक ऐसी कोरी धारणा से ज्यादा कुछ नहीं है, जिसके प्रभावहीन होने से पूर्व तक मैं साहसी सेनाध्यक्ष के पद का उपयोग कर पाता। मैं बिल्कुल सही और अनुकूल समय पर यहाँ पहुँचा। अगर ऐसा न होता तो सेना की बागडोर सौंप दी होती। मैं बर्दिया ब्राउरिनी, मुराट, मार्गोण्ट तथा ले क्लार्क पर विश्वास कर सकता हूँ, परन्तु लिसियन के बारे में कुछ नहीं कह सकता, जबकि बर्नाडोट

अवसरवादी है, फिर भी उसमें मेरे विरुद्ध मैदान में उतरने का साहस नहीं है। टेलीरेण्ड एक बहुत ही खतरनाक आदमी है। अतः मुझे उसे अपने पक्ष में करना होगा। माउलिन के बारे में सोचना होगा। पेरिस में उस जैसे अनेक जनरल हैं। अतः समय बर्बाद न करके मुझे सतर्क रहना होगा।"

अगले दिन टेलीरेण्ड, रोइडटर तथा सिएस ने रात का भोजन बोनापार्ट के साथ किया और हारे हुए जाईन व बार्नाडोट को भी बुलाया गया। वहाँ सभी योजना पर सहमत हो गये कि अड़तालीस घण्टे के भीतर योजना पर कार्यवाही करेंगे। लूनियस ने वचन दिया कि वह पांच सौ लोगों की परिषद् के मामलों में व्यवस्था करेगा।

9 नवम्बर की सुबह को बोनापार्ट के घर के आगे चहल पहल का माहौल था। अधिकारीगण घोड़े-गाड़ियों में सवार होकर वहाँ आ रहे थे। जितने भी अधिकारी वहाँ मौजूद थे, उनमें से इटली के काफी अधिकारी उसके साथ थे। भीड़ के हिसाब से घर छोटा था इसलिये सब आमन्त्रित लोग बागीचे में टहल रहे थे।

बोनापार्ट को जिन लोगों से नफरत थी उन्हीं को वह सम्बोधित करने जा रहा था। फिर संविधान के पालन की उसने क्लास ली थी, आज उसी को वह खत्म करने जा रहा था। उसने मंच पर बोला--

"गणतन्त्र खतरे में है। यह सोचकर आपने एक कानून पारित किया है, जो इस गणतन्त्र की रक्षा करेगा। अपने क्रिया-कलापों पर रोक लगाने के लिये इतिहास के पन्नों को मत देखो। अट्ठारहवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों जैसे अवधि का उल्लेख इतिहास में कहीं नहीं है, इसलिये यह समय एकदम विलक्षण तथा भिन्न है। हम स्वतन्त्रता व समानता पर आधारित गणतन्त्र बनाना चाहते हैं। और यह अवश्य होगा। मैं स्वतन्त्रता के सभी पक्षधरों की सहायता से गणतन्त्र को बचाऊँगा। मैं खुद अपने व अपने सहस्त्र सैनिकों की तरफ से आपके सामने शपथ लेता हूँ।"

विशाल कमरे में यह आवाज गूंज रही थी— "हम शपथ लेते हैं।"

परिषद् के सदस्य बेचैन हो गये थे। बोनापार्ट राहत की सांस लेकर कमरे से बाहर आ गया। उसने घोड़े पर सवार होकर गणतन्त्र की रक्षा करने के लिये अपनी सेना का आह्वान किया।

उसी समय लूसियन की एक रिपोर्ट आयी जिसमें पाँच सौ लोगों की परिषद् को एक दिन के लिये स्थगित कर दिया गया था।

गोहियर असफल हो चुका था। वह घर में बैठा डींगे हाँक रहा था। उसे आठ बजे नाश्ते पर बुलाया गया था पर उसने नाश्ते पर अपनी पत्नी को भेज दिया था।

अब गोहियर को लग रहा था कि जोसेफिन के साथ उसकी पत्नी एक कैदी की

तरह चाय पी रही होगी। जब कि जोसेफिन अपने पति के साथ धोखा कर रही थी।

बोनापार्ट कई लोगों के सामने अपने क्रोध को छिपाने का प्रयास कर रहा था। गोहियर निदेशकों के लिये अपने कर्तव्य को याद दिला रहा था। पर बोनापार्ट नाराज हो गया। उसने क्रोध से चिल्ला कर कहा—

"कोई भी निदेशक अब बाकी नहीं बचा है। मैं सिर्फ गणतन्त्र के बारे में सोच रहा हूँ। मुझे खतरे में पड़े गणतन्त्र को बचाना है। निदेशक सिएस ड्यूकोस व बरास अपना पद त्याग चुके हैं।"

बोनापार्ट ने पहले ही दिन गणतन्त्र के पांच स्तम्भ रूपी निदेशकों की ताकत को खत्म कर दिया। उन्हें शक्तिहीन बना दिया।

वे पांच सौ लोग अभी तक चिल्ला रहे थे, जिन्हें धोखा दिया गया। अगले दिन उन्हें फिर मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इस मुसीबत का एक ही हल था कि सदन को खाली करवाकर, परिषद् के लिये सभी खतरा पैदा करने वाले सदस्यों को बन्धक बना लिया जाये।

निश्चय ही अगले दिन बोनापार्ट के लिये मुश्किल खड़ी हो सकती थी, इसलिये रात को वह बंदूक से गोलियाँ भरकर अपने बिस्तर के पास रख कर सोया। वह किसी भी स्थिति में निपटने के लिये तैयार रहना चाहता था।

अगले दिन सुबह ही सुबह झुण्ड के झुण्ड लोग सैण्ट क्लाउड की ओर बढ़ रहे थे। पोलियन लोगों को उत्साह बढ़ाने के लिये झुण्ड के साथ पैदल चल रहा था। आज परिषद् सारे लोगों के सामने संविधान में बदलाव करेगी और तीन ऐसे शासकों को नियुक्त किया जायेगा जो स्थायी नहीं होंगे। इसके बाद पूरा प्रशासन परिषद् द्वारा कानून के अनुसार दोबारा व्यवस्थित किया जायेगा।

एक कक्ष में शपथ लेने के बाद सभी लोगों ने इस बात पर विचार किया कि लूसियन को अध्यक्ष बनाया जाये या नहीं। तो कुछ ने कहा—विरोधी दल की बातों में ज्यादा वजन है। कुछ लोग बाहर खड़ी सेना की ओर ध्यान कराने लगे तो कुछ वक्ता हैरानी से बोले—

"किसी भी तरह की तानाशाही कामयाब नहीं होगी। ये क्रमबैल हमें बंधन में लेना चाहता है।"

इस बात के समर्थन में सभी लोग उठकर खड़े हो गये। सभी अधिकारी बेचैन होकर बोले—

"हम और हमारे लोग यहाँ किसके लिये आये हैं? इन भिखारियों को यहाँ से निकालो।"

वहाँ होने वाली टिप्पणियों को बोनापार्ट शान्त खड़ा सुन रहा था। फिर वह पुरानी परिषद् के कक्ष की सीढ़ियों को चढ़ने लगा। उसके अधीन अधिकारी

उसके पीछे थे। अध्यक्ष ने विवशता से बोनापार्ट को बोलने की आज्ञा दी। बोनापार्ट ने बोलना आरम्भ किया–

"कल जब आप लोगों ने मुझे बुलाया था तब मैं अपने घर में शान्त बैठा हुआ था। लेकिन आज मैं हैरान हूँ। जब मैं लौटकर आया तो सभी ने अपने मन में मेरे नाम का समर्थन दिया। इसलिये पुरानी परिषद् में इस निर्णय पर तुरन्त फैसला होना चाहिये। मैं एक देश भक्त हूँ, इसका प्रमाण देने की मुझे आवश्यकता नहीं है। यह सत्य है कि मैं षड्यन्त्र करने वाला नहीं हूँ। मैं युद्ध की योजना बना सकता हूँ, तो तुम सब भी स्वयं को लाभदायक बना सकते हो।"

एकाएक वह वहाँ छिपे सिपाहियों को सम्बोधित करके बोला–

"मेरे मित्रों! जितने लोग भी यहां एकत्रित हैं, तुम अपनी-अपनी उन तलवारों को उठा लो जिनसे हमने जीत हासिल की है और मेरे सीने में झोंक दो। अगर दूसरे देश का कोई भी आदमी तुम्हारे सेनाअध्यक्ष की बुराई करे तो तुम अपने क्रोध की दिशा बदल देना। तुम इस बात पर भरोसा रखो कि इस वक्त युद्ध की देवी हम पर मेहरबान है तथा भाग्य भी हमारे साथ है।"

नेपोलियन अपनी पूरी शक्ति व मेहनत से देश को व्यवस्थित करना अपना कर्तव्य समझता था। विधान सभा के सदस्यों की मन की स्थिति को समझ नहीं पाया था। जैसे ही उसने पांच सौ लोगों से भरे हॉल में प्रवेश किया तो जैकोविन चिल्लाकर बोला–

"इस तानाशाही और निरंकुश व्यक्ति को देश से बाहर निकाल दो।"

नेपोलियन के चारों अंगरक्षक ने उसे चारों तरफ से घेर लिया। तब वह तुरन्त ही वहाँ से बाहर निकलकर एक कमरे में पहुँचा और स्वयं को नियन्त्रित करने लगा।

नेपोलियन ने कई ऊँचे पदों पर काम किया था। यह पहला अवसर था जब वह अपने आप को दुविधा में महसूस कर रहा था। वह समझता था कि उसके विरोधियों के पास शस्त्र नहीं है, परन्तु उनके पास शस्त्र थे।

अन्त में नेपोलियन उस स्थिति से बचकर निकल गया। परन्तु उसके दिल पर लगे आघात से उसका सिद्धान्त नष्ट हो गया। उसने देशा कि लूसियन सभा भवन में उसके लिये झगड़ रहा था। कई प्रतिनिधि चिल्ला-चिल्लाकर नेपोलियन के निकालने की मांग कर रहे थे।

नेपोलियन इस स्थिति को देखकर घबरा गया। उसने तुरन्त अपनी सेना को तैयार रहने और शस्त्र उठाने का आदेश दिया।

उन लोगों के कुछ ही दूरी पर सिएरा तथा ड्यूकोस अपनी गाड़ियों में बैठे भागने के लिये तैयार थे। वे भविष्य के राजा बनना चाहते थे। लूसियन अपने सिपाहियों से बोला–

"सिपाहियों! मैं पांच सौ सदस्यों की परिषद का अध्यक्ष, यह सूचना दे रहा हूँ कि सभा भवन में एकत्रित भीड़ को कुछ लोग व जैकोबिन, शस्त्रों द्वारा डरा रहे हैं। उनके इस तरह के प्रयोग अंग्रेजों के पक्ष में हैं। उन्होंने तुम्हारे सेनाध्यक्ष को निकालने का साहस किया है। असल में वे नेपोलियन को मारना चाहते हैं। अब तुम्हें नेपोलियन को बचाने के लिये तलवार उठानी होगी।

लूसियन की बात खत्म होते ही नेपोलियन क्रोध में आकर बोला—

"खिलाफ चलने वालों को खत्म कर दो, मेरा अनुकरण करो, मैं युद्ध में जीतने वाला देवता हूँ।"

लूसियन घबराकर नेपोलियन से बोला—

"भगवान के लिये अपना मुँह बन्द कर लो।"

"बोनापार्ट जिन्दाबाद।" एकाएक सभी सैनिक एक साथ चिल्लाने लगे।

लेकिन इस नारेबाजी का किसी पर भी प्रभाव नहीं पड़ा था। लूसियन को अन्तिम उपाय सूझा। उसने जल्दी से एक अधिकारी की तलवार छीन ली और उसे नेपोलियन की छाती पर रखते हुए बोला—

"आजादी के खिलाफ कुछ भी किया तो मैं स्वयं अपने हाथों से इसे मार डालूंगा।"

लूसियन के इन शब्दों का उन लोगों पर काफी प्रभाव पड़ा था। युराट ने सेना को आगे बढ़ने का आदेश दिया—

"जवानों! सभा भवन से सारी भीड़ को निकाल दो।"

इसके बाद सिपाहियों ने सारी भीड़ को सभा भवन से बाहर निकाल दिया। इसके बाद लूसियन सीढ़िया चढ़कर शीघ्र ही वहाँ पहुँचा, जहाँ हॉल में तीस लोगों के साथ अध्यक्ष बैठा था। ये वो तीस लोग थे, जिन्हें फ्रांस का प्रतिनिधित्व करना था। लुसियन चाहता था कि सफल राजनीतिज्ञों का अच्छी प्रकार से स्वागत होना चाहिये।

सुबह दो बजे सलाहकारों द्वारा शपथ ली गयी। कुछ लोगों ने नारे लगाये—"गणतन्त्र जिन्दाबाद।"

सुबह तीन बजे बोनापार्ट ब्राउरिनी के साथ पेरिस जाने के लिये रवाना हो गया। रवाना होने से पहले उसने कहा—

"कल हम लोग लक्सेमबर्ग जायेंगे और रात वहीं बितायेंगे। इसलिये आज के लिये शुभरात्रि!"

❑



नेपोलियन द्वारा संविधान परिवर्तन

नेपोलियन बोनापार्ट के लिये अब यह जरूरी हो गया था कि वह फ्रांस के शासन के रूप में अपनी जिम्मेदारी को पूरा करे। अब उसके लिये किसी पद को पाने के लिये संघर्ष की जरूरत नहीं रह गयी थी।

फ्रांस को ऐसे व्यक्ति की जरूरत थी जो न किसी दल से सम्बन्ध रखता हो और न ही उसने कभी लोकप्रियता पाई हो; वह व्यक्ति पहले कभी सत्ता में भी न रहा हो।

नेपोलियन की असफलता और लोगों द्वारा उसके काम में बाधायें उत्पन्न करने की यही वजह थी कि वह संविधान का सम्मान करता था। उसका कहना था—

"मुझे इस बात की बहुत हैरानी है कि केवल दो शक्तियाँ हैं जिनसे हर चीज को संगठित किया जा सकता है। एक भावना और दूसरी ताकत। भावनाओं से प्राप्त जीत, शक्ति से प्राप्त विजय से अधिक स्थायी होती है।"

अपने शासन काल में नेपोलियन ऐसे व्यक्ति की तलाश में रहा जो हजारों लोगों का नेता बनने की शक्ति रखता हो। जो अपने काम में कुशल हो वह स्वयं एक रहस्यों से भरे व्यक्तित्व का स्वामी था। सिर्फ शक्ति और योग्यता ही पद की उन्नति का आधार होती है, उन्हीं बातों को ध्यान में रखकर नेपोलियन ने राज्य के सभी सदस्यों का चुनाव किया था।

उसने एक गोलमेज सभा का आयोजन किया जोकि उसके द्वारा चयनित विशेषज्ञों की आखरी गोल मेज सभा थी। सभा भवन में सभी नागरिक एक दूसरे को सहजतापूर्वक कामरेड कहकर सम्बोधित करते थे। जन परामर्श द्वारा सभा में विचार-विमर्श का विवरण दिखाये जाने पर नेपोलियन ने कहा था—

"कानून विशेषज्ञों के विचारों तथा सिपाहियों व कुलीन धनी व्यक्तियों के विचारों में अन्तर है। कानून विशेषज्ञों द्वारा दी गयी राय का एक-एक शब्द महत्वपूर्ण है, जबकि हम सिपाहियों की सोच घटिया होती है; इसलिये कानून विशेषज्ञों की राय को सही रिपोर्ट देना जरूरी है।"

कुछ समय रुकने के बाद वह बोला था—

"मैं वैसे ही दिखता हूँ जैसा मैं हूँ। इससे ज्यादा दिखने की मैं अभिलाषा नहीं करता। कभी-कभी कुछ पल क्रोध में आकर मेरे मुंह से ऐसी बातें निकली हैं जो स्वयं मुझे गलत लगी हैं।"

सभा का अध्यक्ष नेपोलियन; बाकी सभासदों से उम्र में सबसे छोटा था। वह केवल तीस साल का था। लेकिन उसके पास अनुभवों की कमी नहीं थी। उसका अध्ययन स्थल युद्ध था। इस प्रकार की स्थिति में उसे कई प्रकार के महत्वपूर्ण निर्णय लेने पड़े थे जैसे—दण्ड से सम्बन्धित, आज्ञा का पालन और स्वामी, व्यक्ति, धन के अधिकार से सम्बन्धित आदि।

नेपोलियन ने कार्सिका में परिवार के साथ रहते हुए जो अनुभव प्राप्त किये पारिवारिक कानून की तरह उन्होंने भी नेपोलियन के जीवन पर काफी प्रभाव डाला था। उसने अनुभव किया था—

यह एक आम बात है कि एक स्त्री का या एक पुरुष का किसी दूसरी स्त्री का या पुरुष से दिल लग जाये। इसके लिये कोई समय या स्थान निश्चित नहीं है।

रोम में परम्परा है कि स्त्री विवाह के बाद औपचारिक रूप से अपने पिता के हाथों से अपने पति के संरक्षण में चली जाती है। नेपोलियन के अनुसार रोम की यह पुरानी परम्परा समाज की दृष्टि से काफी लाभदायक है।

नेपोलियन के विचार में तलाक लेने में कोई हर्ज नहीं है, परन्तु उसे उसने आसान नहीं बनाया था।

यदि पति-पत्नी के रिश्ते में अन-बन होगी, तो सबसे अधिक प्राकृतिक तथा दृढ़ समझे जाने वाले बन्धनों का क्या होगा? तलाक लेने की प्रक्रिया को अधिक मुश्किल न बनाने के कारण युवा महिलायें किसी भी पुरुष से चाहे वह उसके अनुकूल भी न हो, उससे विवाह कर लेती थीं; सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने के लिये वो विवाह के बंधन में बंध जाती हैं।

नेपेलियन के अनुसार तलाक होना न होना, इसका निर्णय पंचायत में लिया जाये तथा न्यायालय में केवल इस निर्णय की पुष्टि की जाये।

उसके मुताबिक विवाह के पवित्र बंधन की पवित्रता को बनाये रखने के लिये विवाह के लिये स्त्री पुरुष की आयु भी अधिक होनी चाहिए। नेपोलियन के अनुसार स्त्री की आयु तेरह वर्ष और पुरुष की इक्कीस वर्ष होना चाहिये।

एक सांसारिक व्यक्ति होने के नाते और उच्च पद पर आसीन व्यक्ति के रूप में, नेपोलियन अपनों का निष्कर्ष इस प्रकार किया करता था—

"चाहे मेरा सम्मान दांव पर लग जाये पर मैं सच की रक्षा अवश्य करूँगा और पत्नी के सम्मान पर कोई आंच नहीं आने दूँगा। क्योंकि इससे किसी को कोई लाभ नहीं है।"

जिस दिन नेपोलियन ने संविधान में परिवर्तन किया उसके पन्द्रह दिनों के अन्दर-अन्दर सभी विभागों में कर की वसूली के कार्यालय स्थापित किये। उसका कहना था—

जिस देशों में हर साल कर की कीमतों में परिवर्तन और परिवर्धन नहीं किया

जाता, वही देश सुरक्षित और सम्पन्न होता है।

सभी तरह के कार्यों के लिये नेपोलियन ने अपने पूरे मनोयोग और सद्भावना का प्रयोग किया था। जैसा बुद्धिमान वह खुद था वैसा ही ऊर्जावान, बुद्धिशाली तथा समर्पित। लोगों को उसने अलग-अलग मन्त्रालयों, विभागों तथा संस्थानों के लिये प्रभारी के रूप में नियुक्त किया था। उसका कहना था—

साधारण मामलों की फाइलें भी शीर्ष अधिकारियों के पास भेजी जायें, उसकी यह परम्परा बिल्कुल अर्थहीन थी।

नेपोलियन ने पूरी तरह से सावधान रहकर सभी दलों को संतुष्ट किया। दो ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों को कार्य सौंपे, जो आपस में दुश्मनी रखते थे। लेकिन वो हैरान कर देने वाली योग्यता रखते थे।

नेपोलियन ने इटली पर स्वयं चढ़ाई की और मोरेऊ को राइन पर चढ़ाई करने के लिये भेजा। इस प्रकार नेपोलियन एक ऐसे साहसिक कार्य के लिये तैयार था जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उसका यह अभियान मिस्र के अभियान से कहीं अधिक महत्व रखता था। उसका कहना था—

एलप्स को पार करने के लिये हनीबल ने पहाड़ों से अपना मार्ग बनाया था, लेकिन अब सेनानायक को तोपखानों को बर्फ पर घसीटने के लिये पेड़ों को काटकर बड़े-बड़े स्लेज बनाने चाहिये तथा दर्रे के मध्य से तोप को ले जाना चाहिये।

नेपोलियन को सफलता पाने की पूरी उम्मीद थी। सभी सैनिकों को भी अपने नेता पर पूरा विश्वास था; इसलिये वे उसका अनुकरण कर रहे थे।

नेपोलियन ने शत्रु पर जबरदस्त हमला किया, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। विशाल सेना वाला शत्रु उसे पछाड़ने में सफल हो गया था। स्थिति बिगड़ती नज़र आ रही थी और उस समय डेसेक्स का कहीं पता नहीं था। वह सड़कों के किनारे खड़ा होकर अपनी सेना पर चिल्लाने लगा।

"रुक जाओ कुछ देर इंतजार करो। डेसेक्स कुमुक लेकर आने ही वाला है।"

लेकिन सैनिक भागते रहे। तभी कुछ क्षणों बाद डेसेक्स वहाँ आ गया। उसने डरी हुई आस्ट्रियन सेना पर हमला बोल दिया। इस तरह वह दुश्मन के रास्ते की रुकावट बन गया।

मोटेग्ये के जिस युद्ध को बोनापार्ट पांच बजे तक हार गया था, उसी युद्ध को लगभग सात बजे तक डेसेक्स ने जीत में बदल दिया। परन्तु युद्ध को जीतने वाला वह वीर अपने जीवन की रक्षा नहीं कर पाया।

डेसेक्स की मृत्यु का बोनापार्ट को बहुत दुःख हुआ, फिर भी वह मैदान में डटा रहा। वह युद्ध तो लगभग हार ही चुका था। उसके सर्वश्रेष्ठ जनरल की मृत्यु ने उसमें नये जोश तथा साहस को उत्पन्न कर दिया।

यह नेपोलियन की योजना थी जो डेसेक्स सही समय पर पहुँच गया था।

उसकी योजना सफल हुई थी, जिसने हारे हुए युद्ध को जीत में बदल दिया था।

नेपोलियन के विचार एक विजेता के थे। वह यह बात जानता था कि जीत तलवार के बल पर हासिल की जाती है। वह किसी भी कीमत पर शान्ति स्थापना की बात करके शेखी नहीं मारता था।

नेपोलियन प्रजातान्त्रिक आधार पर तानाशाह बनना चाहता था। क्योंकि वह तानाशाह शब्द को अच्छी तरह से जानता था। जनता की इस कमजोरी से जितना बोनापार्ट वाकिफ था उतना कोई नहीं था। वह सबसे अधिक महत्व अपनी बुद्धि को देता था, क्योंकि यह बुद्धि ही है जिसने युद्ध तथा शान्ति में उसे जीत दिलाई थी। युवा बोनापार्ट के असली व्यक्तित्व को पहचानने वाला व्यक्ति यही कहता–

"तुम्हारी जगह प्लूतार्क के लोगों के बीच में है।"

बोनापार्ट को अपने लिये केवल एक ही पद दिखायी देता था जो उसके अनुसार उसके लिये उपयुक्त था। वह था रोम के शासक या खलीफा का पद।

उसके पास अब काफी सैनिक शक्ति थी। इसलिये अब वह स्वयं को पूरी तरह सुरक्षित महसूस करता था।

फिर उसने युद्ध मंत्री को पत्र लिख जिसमें उसने आदेश जारी किया कि सेना के लिये जरूरत का समान मंगवाया जाये।

बिना समय गंवाये नेपोलियन ने उस नियम को हटा दिया था जिसके अनुसार केवल कामगार का चोगा पहनने के पहचान के पश्चात् ही कोई व्यक्ति टिवलरीज के बगीचे में जा सकता है। उसने सभी कामगारों को वहाँ बिना किसी रुकावट के जाने की इजाजत दे दी थी।

नाटकों आदि का जनता पूरी तरह से आनन्द ले सके इसके लिये फ्रांस सिनेमा गृह में रविवार के दिन टिकटें अन्य दिनों की अपेक्षा सस्ती कर दी थी। वह चाहता था कि लोग यहाँ पूरे मनोरंजन ले सकें। अपने एक भाषण में उसने कहा था–

"अगर मैं जुआ घरों को रहने दूँ और वहाँ जुआ चलने दूँ तो इसको सहने का यही मतलब होगा कि मैं गलत आदतों को बढ़ावा दे रहा हूँ। अतः फ्रांस में जुआ घर नहीं होंगे।"

नेपोलियन ने यश पाने के लिये कुछ भी बाकी नहीं छोड़ा था। उसने न्यायालयों की स्थापना की। शिक्षा के क्षेत्र में देश में कई प्राथमिक स्कूलों, जूनियर स्कूलों, महाविद्यालयों तथा तकनीकी विद्यालयों की स्थापना कराई। उसने तीन सालों के अन्दर लगभग चार हजार पाँच सौ स्कूलों व उच्च शिक्षा केन्द्रों का निर्माण कराया। इन स्कूलों में शुल्क नहीं लिया जाता था।

❑



नेपोलियन पर आत्मघाती हमला

सन् 1800 ई० में नेपोलियन क्रिसमस के दिन शाम के समय अपनी गाड़ी में बैठा ओपेरा हाउस जा रहा था। इस समय उसकी पत्नी जोसेफिन तथा उसकी बेटी उसके पीछे गाड़ी में बैठे हुए थे।

रास्ते में एक संकरी गली पड़ती थी, जिसमें एक खाली गाड़ी खड़ी हुई थी उस गाड़ी के खड़ी होने के कारण आने जाने का रास्ता लगभग बंद था।

नेपोलियन ने अपनी गाड़ी से उतरकर खाली गाड़ी को धक्का देकर आगे किनारे से लगाया और अपनी गाड़ी को आगे लेकर चला। जैसे ही उसकी गाड़ी वहाँ से आगे निकली अचानक उस गाड़ी में जबरदस्त विस्फोट हुआ।

उस विस्फोट में बीस लोग मारे गये थे परन्तु जोसेफिन और नेपोलियन को किसी तरह की क्षति नहीं पहुँची। ओपेरा पहुँच कर नेपोलियन अपनी सीट पर जाकर बैठ गया और अपनी पत्नी के बैठाने के बाद वह शान्तिपूर्ण ढंग से जोसेफिन से कहने लगा—

"जोसेफ! कुछ लोग मेरी प्रसिद्धि से जलते हैं और वो मुझे मार डालना चाहते हैं। चलो अब हम संगीत सुनते हैं।"

नेपोलियन एक संगीत प्रेमी इंसान था। संगीत सुनते समय वह अपनी समस्याओं तथा योजनाओं को भूल जाता था। परन्तु उस दिन उस का दिमाग बहुत तेज गति से काम कर रहा था। वह लगातार अपने ऊपर होने वाले हमले के बारे में सोच रहा था। वह सोच रहा था कि हमला करने वाले कौन लोग हो सकते हैं—दक्षिणी पंथी क्रान्तिकारी या फिर वामपंथी।

ये दोनों ही उसके कट्टर दुश्मन थे। यदि वह इस हमले में मारा जाता तो फ्रांस के लिये बहुत ही भयंकर परिणाम होता। यह तो उसकी किस्मत अच्छी थी जिसने उसे बचा लिया।

उसके सुरक्षित बच जाने पर अगले दिन सभी लोगों ने उसे बधाइयाँ दीं। राज्य परिषद् ने प्रस्ताव रखा कि हमलावरों के विरुद्ध कार्यवाही की जाये। परन्तु नेपोलियन ने इसका विरोध किया और कहा—

हमें इस विषय पर कोई कार्यवाही नहीं करनी चाहिये बल्कि 'आगस्टस' की तरह अपराध करने वाले लोगों को क्षमादान दे देना चाहिये। और अगर कार्यवाही करनी है तो फिर इतनी देर किसलिये। यह एक शासकीय मामला है। इसके लिये

आम प्रक्रिया को अपनाना उचित नहीं है। इसमें खून बहाना पड़ेगा अपराधियों को फांसी की सजा सुनानी होगी। इसमें बेकसूर लोग भी मारे जायेंगे। ये कोई एक आदमी नहीं है बल्कि दो सौ धूर्त भेड़ियों का एक संगठन है जो हर समय अपने शिकार को ढूँढ़ते रहते हैं और अवसर की प्रतीक्षा करते हैं। इन सब बुरे लोगों के कारण हम सब इतना कष्ट झेल रहे हैं।

सभी लोगों ने सहमति जतायी। उनके अनुमार इस काम के पीछे अंग्रेजों तथा शरणार्थियों का हाथ था। नेपोलियन ने गुस्से में पूछा—

"क्या आप लोग धनी और पुजारियाँ को देश निकाला दे सकते हैं?"

लोग शान्त थे पर नेपोलियन बोला—"मैं धर्म के मानने वाले लोगों को निर्वासित नहीं करना चाहता। मैं नासमझ नहीं हूँ। ये बताने की जरूरत नहीं है कि हमारा देश खतरे में है। क्या क्रान्ति से पहले भी फ्रांस कभी इससे अच्छी स्थिति में रहा है? जिन लोगों ने स्वतन्त्रता से प्रेम नहीं किया, वह स्वतन्त्रता की परवाह क्या करेंगे।"

इतना कहकर उसने सभा समाप्त कर दी।

नेपोलियन बेचैन तो था पर डरा हुआ नहीं था। उसने सोचा कि अपनी सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिये कुछ मजबूत उपायों को अपनाना होगा।

नेपोलियन के जीवन पर दो घटनाओं का गहरा प्रभाव पड़ा। एक घटना थी उसको जान से मार डालने का प्रयास और दूसरी घटना थी कौसटैण्ट चेनियर की तरह के कई विख्यात लोकतन्त्र के विचारों को समर्थन देने वाले सदस्या जिनको प्राधिकरणों तथा संगठनों से निष्कासित किये जाने से उसके विवेक पर होने वाला हमला।

लूसियन सबसे अधिक चतुर और बुद्धिमान था। वह आयु में नेपोलियन से छः वर्ष छोटा था मगर महत्वाकांक्षाओं में वह नेपोलियन से कम नहीं था। वह नेपोलियन का छोटा भाई था।

नेपोलियन की प्रतिष्ठा का लाभ उठाकर उसने काफी तरक्की की थी। वह पूरी तरह नेपोलियन की छत्रछाया में रहा था तथा उससे संरक्षण प्राप्त कर रहा था। फिर भी बाद के कुछ सालों में नेपोलियन उससे नाराज हो गया था। जिसके कारण वह चिड़चिड़ा हो गया था।

लूसियन उस दिन को कभी नहीं भूला था जब संविधान सभा में वह राजा बनने वाला था, जबकि उसे राजा बनाने का काम करना पड़ा था। उसे नेपोलियन को सिंहासन पर बैठना पड़ा था। उसे हर हालत में नेपोलियन की आज्ञा का पालन करना था।

लूसियन गृहमन्त्री के पद पर था और वह जोसेफिन से नफरत करता था। वह जोसेफिन से मिलने वाले सभी लोगों को अपना दुश्मन मानता था।

लूसियन के बारे में कहा गया है कि वह अन्दर से अपराध करने वाली प्रकृति का था। पच्चीस साल की उम्र में वह काफी शक्तिशाली था, फिर भी पिछड़ा हुआ राजनीतिज्ञ था। उसने एक होटल के मालिक की लड़की से शादी कर ली थी उसने अपने धन से पेरिस में एक सुन्दर मकान खरीदा था और उसे कीमती समान से सजाया था। यह सब उसने नेपोलियन को नीचा दिखाने के लिये किया था।

नेपोलियन का दूसरा भाई व्यवहार कुशल तथा अच्छा इंसान था। उसकी इच्छा थी कि वह धर्म के क्षेत्र में ऊँचा स्थान पा सके। नेपोलियन की मदद से उसके पास धन की कोई कमी नहीं थी। उसने सीनेट का पद भी त्याग दिया था। वह रोम का दूत बनना चाहता था।

लूई स्वभाव से कवि था। वह कई सालों से जोसेफिन की एक रिश्तेदार की लड़की से प्रेम करता था। वह कई सालों से प्रेमगीत गा रहा था।

जोसेम नेपोलियन का छोटा भाई और स्वभाव से चंचल था। उसे नेपोलियन ने अपने बेटे की तरह पाला था, उसे फ्रांस भेजते हुए नेपोलियन ने लिखा था—

"मैं तुम्हारे पास जोसेम बोनापार्ट को भेज रहा हूँ वह पोत पर काम करेगा। उसे कठोर अनुशासन में रखना जरूरी है। उस पर नज़र रखना कि वह अपनी जिम्मेदारियों तथा कर्तव्यों का भली भान्ति निर्वाह करे।"

नेपोलियन ने अपनी बहनों को भी बहुत धन और सम्मान दिया। फिर भी बदले में उसे बुराई ही मिली थी। उससे हर बार अधिक धन की मांग होती रही। लूसियन और एलिस नेपोलियन से जलने लगे थे तब बोनापार्ट ने चिल्लाकर कहा था—

"मैं पूरी मेहनत के साथ लोगों को नैतिक तथा इज्जत का जीवन जीने लायक बना रहा हूँ और मेरे भाई-बहन निकृष्ट विचारों के हैं। नेपोलियन के सभी नाते रिश्तेवालों ने उसकी प्रतिष्ठा और पद का फायदा उठाते हुए खूब धन तथा ऊँचा पद प्राप्त किया था। सभी रिश्तेदारों में नेपोलियन की माँ ही ऐसी थी जो उससे स्नेह रखती थी परन्तु वह जोसेफिन को पसंद नहीं करती थी।

नेपोलियन ने अपनी मां को अपने साथ रहने का आग्रह किया था परन्तु उसने स्पष्ट इंकार कर दिया। उसकी इच्छा जोसेफ के साथ रहने की थी। जब भी कोई उसकी मां के सामने उसके धन की प्रशंसा करता तो वह कहती—

"अच्छे काम करने के अच्छे ही परिणाम होते हैं। नेपोलियन न केवल अपने रिश्तेदारों का सम्मान करता है बल्कि उनके व्यवहार को सहन भी करता है। उसे अपनी पत्नी से सबसे अधिक प्रेम है और वही उसे संतान का सुख नहीं दे सकी।"

जिस समय नेपोलियन जोसेफिन से मिला था उस समय वह तीस वर्ष का था। उसके बाद नेपोलियन कई अन्य महिलाओं से मिला। उन महिलाओं के साथ सम्बन्ध बनाने से उसे तीन पुत्रों की प्राप्ति हुई। लेकिन उसकी कामना पत्नी के साथ एक विधि सम्पन्न पुत्र की जरूरत थी।

नेपोलियन यूं तो सारी शक्तियों से परिपूर्ण था; लेकिन उसकी इच्छायें अधूरी थी। सत्ता सम्भालने के पहले ही वर्ष में रोइडरर के सामने नेपोलियन ने एक प्रस्ताव रखा है—

"शासकों का कहना था कि बोनापार्ट की मृत्यु के पश्चात् उसका उत्तराधिकारी कौन होगा?"

इस पर रोइडरर ने कहा—"हाँ, आपके उत्तराधिकारी के बारे में जानकर फ्रांस को काफी राहत मिलेगी।"

"पर मेरी कोई संतान नहीं है।" नेपोलियन ने जवाब दिया था। तब राइडर ने उसे सलाह देते हुए कहा था—"आप चाहें तो किसी को गोद भी ले सकते हैं।

"ऐसा करना मेरी परेशानी का हल नहीं है।" नेपोलियन ने जवाब दिया—"लेकिन सीनेट मेरा उत्तराधिकारी घोषित कर सकती है। इसके अलावा मुझे कोई दूसरा समाधान नज़र नहीं आ रहा है। मैं और सीनेट उस उत्तराधिकारी का नाम सुनना चाहेंगे। मगर वह कौन होगा?"

"अच्छा होगा।" रोइडरर ने कहा —"अगर सीनेट किसी बारह साल के किशोर को चुन ले।"

"तुम भला उसे संतान क्यों कहना चाहते हो रोइडरर।" नेपोलियन ने पूछा।

"तुम्हारा प्रेम और तुम्हारा संरक्षण पाकर तुमसे प्रशिक्षित होकर वह तुम्हारी तरह ही योग्य बन जायेगा।" रोइडरर ने उत्तर दिया।

रोइडरर की बात सुनकर नेपोलियन कुछ क्षण तक एक कोने में खड़ा सोचता रहा फिर बोला—"मेरा असली उत्तराधिकारी फ्रांस का ही रहने वाला होगा।"

नेपोलियन की आयु उस समय पैंतीस वर्ष की थी। वह केवल दस वर्ष के लिये नियुक्त किया गया था। परन्तु वह स्वयं को राजा समझता था।

जोसेफिन ने अपनी पुत्री हार्टेनी को लुई के साथ विवाह करने पर मजबूर किया था तथा इस जबरन विवाह से उत्पन्न पुत्र को नेपोलियन का वारिस मान लिया गया था।

पर, उसकी बहन ने इस बात को फैला दिया था कि वह बच्चा बोनापार्ट का नहीं है। एक तरफ यूरोप अपने अच्छे भाग्य पर गौरवान्वित महसूस कर रहा था दूसरी तरफ इस अफवाह के कारण परिवार की एकता भंग हो गई थी।

नेपोलियन की मां लितिजिया अपने छोटे पुत्र का साथ दे रही थी क्योंकि उसे विवाह के लिये मजबूर किया गया था पर लूसिया जिसे परिवार से निकाल दिया गया था वह एक सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रही थी।

नेपोलियन की बहनें जोसेफिन को पसंद नहीं करती थीं। वे उसे चिढ़ाने का कोई मौका नहीं छोड़ती थीं।

जोसेफिन को नेपोलियन जार्जियन के नाम से बुलाता था। यह नाम उसे

इटली में दिया गया था। नेपोलियन एक सुलझा हुआ व्यक्ति था। उसने न कभी किसी अधिकारी को अपमानित किया और न ही कभी किसी को निष्कासित किया तो भला ऐसी पत्नी को, जिसे वह केवल प्यार करता था, चाहे वह कितनी भी गलतियाँ करती हो फिर तलाक कैसे दे सकता था।

नेपोलियन हमेशा अपने भविष्य के प्रति चिन्तित रहता था। वह एक कुशल गणितज्ञ के साथ-साथ कुशल राजनेता भी था। वह बिना युद्ध किये अपने देश को सुरक्षित रखना अपना एक जरूरी कर्तव्य मानता था। इसके पीछे पारिवारिक जीवन को सबसे ज्यादा महत्व देने की उसकी व्यक्तिगत जरूरत भी छिपी हुई थी।

नेपोलियन के विचार में उसके साहस और शौर्य को ही पुरस्कृत किया गया था। इसके अलावा उसने कुछ भी नहीं जीता था। उसका जानना था कि जब तक वह जीवित है तब तक उसकी उपलब्धियाँ रहेंगी। वह कहता था—"राजा ही अमर होता है, वह अपना पूरा जीवन पारम्परिक सोच के अनुसार व्यतीत करता है और अपनी मृत्यु के बाद उसके वारिस द्वारा यश बना रहता है। लेकिन मेरा तो कोई वारिस नहीं है। इसलिये मेरे जीवन का अन्त होने के साथ-साथ मेरे यश का भी अन्त हो जायेगा। मैं नहीं चाहता कि मेरा वारिस कोई अधिकारी बने, मेरा यह सोचना है कि शासक का पद कल्पनाओं को गति देना है। उसके महत्व को आंका नहीं जा सकता।"

इन वाक्यों से उसके मन की बुरी भावनाओं, शक्ति, महत्वाकांक्षा, की संक्षिप्त एवं स्पष्ट झलक मिलती है।

नेपोलियन अपने खून, अपने वीर्य से उत्पन्न पुत्र को अपना उत्तराधिकारी बनाने के सिद्धान्त को जीवित करना चाहता था। उसने अपना दुःख प्रकट करते हुए कहा—"मैंने जगह-जगह पर आश्रय के लिये जगह बना रखी हैं, क्योंकि विश्व की शान्ति के लिये मैं अपने व्यक्तित्व से प्रेरित होकर आगे बढ़ाये गये मनुष्य की जरूरत को पूरी कर सकता हूँ।"

उसके विश्वासपात्र रोइडरर ने उसे नई पत्नी ढूँढ़ने की सलाह दी जो उसके लिये पुत्र को जन्म दे सके। इस पर नेपोलियन ने उत्तेजित होकर कहा—

"मैंने हमेशा न्याय के साथ शासन किया था। तलाक मेरा व्यक्तिगत मामला हैं। मैं नहीं जानता कि केवल महान व्यक्ति बन जाने के कारण मुझे अपनी पत्नी को तलाक देने का अधिकार मिल जाता है। जिस स्त्री ने मेरे हर अच्छे-बुरे वक्त में साथ दिया—जैसे देश निर्वासन के समय जेल आदि में; ऐसी स्त्री को मैं क्योंकर त्याग दूँ?"

कुछ समय बाद चैम्बर में होने वाले चुनाव में नेपोलियन को शासक घोषित कर दिया गया। शासक बनते ही उसने कहा—

"फ्रांस के लोग राजतन्त्र को पसंद करने वाले हैं, इसलिये आजादी का महत्व

उनके लिये एक तमाशे जैसा है। सेना से कोई राजकुमार उनका शासन करे वे इसी में संतुष्ट हो जाते हैं। आज सैनिक और जनता मेरे पक्ष में है। ऐसे में कोई बुद्धिहीन ही शासन न करने की बात सोच सकता है।"

नेपोलियन अपने उद्देश्यों को पूरी तरह प्रकट नहीं करता था। वह स्वयं को राजनीतिक विषयों तक ही सीमित रखता था। फिर भी शासन के आरम्भिक समय में ही राजनीतिक विषय उसको बहुत प्रभावित कर चुके थे।

उसे अपने राज्य के आरम्भिक दिनों में ही परेशानियों का सामना करना पड़ा था। जब बैस्टील पर कब्जा करने की सालगिरह मनायी गयी तब सभी क्रान्ति पर सहमत हो गये थे। पहली बार आजादी की सालगिरह समारोह को स्थगित रखा गया और फिर एक दो सालों के बाद उसने वर्षगांठ को मनाना बंद कर दिया।

यह इंग्लैण्ड का दुर्भाग्य ही था कि साधारण जनता की क्रान्ति के विषय में प्रबुद्ध लेखकगण गलत खबरें फैला रहे थे। नेपोलियन स्वयं को अपमानित सा महसूस करने लगा था एक छोटे से लैफ्टिनैन्ट को नेपोलियन बनाकर प्रचार किया जा रहा था।

जबकि वह अपने दरबार से जुड़े लोगों को ऊँचा वेतन देता था। उससे जुड़े लोग धनवान बन गये थे। पर पहले से धनी लोगों को धन देते समय वह पूरी कंजूसी बरतने लगा था।

धन की कीमत को, उसके महत्व को जानकर, नेपोलियन लोगों को अपने ज्ञान से आश्चर्य में डाल देता था। सम्राट का वेतन दो अरब पांच लाख रखा गया था जब कि पहले राजा लुई चार अरब पांच लाख खर्च करता था।

नेपोलियन अपने व्यक्तित्व पर जितना कम खर्च करता था उतना ही अधिक उसकी पत्नी जोसेफिन बेकार खर्च करने वाली महिला थी। उसके भाई-बहन भी उसकी पत्नी के समान फिजूल खर्ची थे। वह उन्हें हर तरह की सुविधा देता था फिर भी वे लोग संतुष्ट नहीं थे। उसके परिवार वालों और जोसेफिन की कभी बनती नहीं थी।

नेपोलियन वास्तव में दृढ़ आत्मविश्वासी तथा महान व्यक्तित्व का स्वामी था। लेकिन वह एक शान्त, संयम तथा स्थिर बुद्धिवाला बने रहना चाहता था। वह अपने सैनिकों पर उतना ही विश्वास करता था जितना वह अपने रिश्तेदारों पर करता था।

पोप भी यह देखकर हैरान रह गया। उसको आशीर्वाद देना उसकी मजबूरी थी। अपनी किस्मत खुद बनाने वाले नेपोलियन के राज्याभिषेक के दिन कहीं भी उसकी मनोवृति से ऐसा दिखाई नहीं दिया कि वह पोप जैसे किसी व्यक्ति से प्रभावित हो सकता है।



इंग्लैण्ड से युद्ध

राज्याभिषेक के एक साल बाद ही इंग्लैण्ड के साथ ऐसा युद्ध आरम्भ हुआ जो नेपोलियन की किस्मत को डुबोने के बाद ही खत्म होने वाला था। इस युद्ध की स्थिति में सेना का यह कमाण्डर किसी पर कोई प्रभाव नहीं डाल पा रहा था। और न ही युद्ध को खत्म कर पा रहा था।

वास्तव में जिस व्यक्ति ने अपनी जवानी का काफी समय बड़ी-बड़ी तोपों के बीच गुजारा हो वही तोपों की सही जानकारी रख सकता था। इतनी जल्दी उसे समुन्द्री सेना से सम्बन्धित सभी कार्यों को व्यवस्थित करते देखकर उसके सेनाध्यक्ष भी हैरान रह जाते थे।

नेपोलियन के पास न ही महान नौसेनाध्यक्ष थे और न ही बेड़ा। न ही वह अपने अधीन किसी अधिकारी को उस अभियान का संचालक बनाना चाहता था इसका खामियाजा उसे भुगतना पड़ा था।

महासागर में अचानक हैरान कर देने वाला तूफान उठा। इस स्थिति को देखकर नेपोलियन भटक गया था। तूफान के आने पर उसने नौसेना का पुनः निरीक्षण करने का आदेश दिया जिसे जलसेनाध्यक्ष ब्रुक्स ने मानने से इंकार कर दिया। नेपोलियन ने उसके पास जाकर पूछा—

"तुमने मेरे आदेश का पालन क्यों नहीं किया?"

"श्रीमान, आप स्वयं मौसम को देखकर इस बात का निर्णय करें कि क्या इस खराब मौसम में सैनिकों का जीवन खतरे में डालना उचित होगा?"

"आपका काम मेरा आदेश मानना है न कि परिणामों के बारे में सोचना। इसलिये जो कहा जा रहा है वह करो।"

"क्षमा करें श्रीमान! मैं इस समय कोई खतरा मोल नहीं लूँगा।"

इस पर नेपोलियन भड़क गया ओर क्रोधित होकर बोला—

"चौबीस घंटे के अंदर तुम बोर्बोन छोड़कर हालैण्ड चले जाओ, मेरे आदेश का तुरन्त पालन होना चाहिये।"

इसके बाद, भयंकर तूफान में सेना का निरीक्षण किया जाने लगा। उसके सामने कई नावें उलट गईं 'स्वयं' नेपोलियन को अपने जीवन रक्षा के लिये नौका में छलाँग लगानी पड़ी। नतीजा यह हुआ कि अगले दिन समुन्द्र तट पर दो सौ सैनिकों के शव पड़े मिले।

नेपोलियन के जीवन की यह सबसे बड़ी भूल थी, यदि यह युद्ध समुन्द्री न होकर थल युद्ध होता तो अवश्य ही वह उसे जीत लेता। नेपोलियन कई सालों से अपनी शक्ति का संचार कर रहा था, लक्ष्य शान्ति स्थापित करना था।

जिन सालों में नेपोलियन शान्ति स्थापना में लगा था उनमें वह सहनशील बना रहा। उसने कहा–

"यूरोप में शान्ति की स्थापना तब तक नहीं हो सकती, जब तक कि पूरे यूरोप महाद्वीप पर एक ऐसे सम्राट का शासन नहीं हो जाता जिसके प्रमुख अधिकारी होंगे और राजा की जिम्मेदारी निभायेंगे।"

इंग्लैण्ड पर हमला करने के संकल्प को उसकी सेना वसन्त ऋतु से उस समय तक टालती जा रही थी। अब वह बोलोन में इक्ट्ठा हो चुकी थी। नेपोलियन ने अपनी सेना को पूर्व की ओर कूच करने का आदेश दिया।

नेपोलियन ने आस्ट्रियनों को घेर लिया। उसने उनकी सेना को एक गोल लोहे के जाल में फंसा लिया था। आत्मसमर्पण करने के लिये मजबूर कर दिया था। सैनिकों को एक भी गोली चलाने का भी मौका नहीं मिला था।

इस विषय में नेपोलियन का कहना है–

"मैंने अपना लक्ष्य आस्ट्रिया को हराकर प्राप्त कर किया है। इसके बाद अब मैं रूस पर हमला करूँगा। वे ताकतवर नहीं रहे उनकी शक्ति क्षीण हो चुकी है।"

दूसरे देश की धरती पर पहली बार नेपोलियन ने अपनी जीत का प्रदर्शन किया था। उस समय वह सैनिक की पोशाक में था और उसके हाथ पीछे कसे हुए थे। उस शाम वह अपने दुश्मन की गतिविधि समझकर खुश होकर बोला–

"वे स्वयं ही मेरे जाल में फंसकर मेरे हाथों में आ रहे हैं। कल शाम तक उनकी सेना का खात्मा हो जायेगा।"

नेपोलियन ने अपने तोपचियों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा–

"वह उनकी सुरक्षा के लिये सावधान रहेगा और उनकी वीरता का उचित इनाम देगा।"

इसके बाद नेपोलियन ने अपने दोनों दुश्मनों पर विजय प्राप्त कर ली। यह जीत हजारों सालों के लिये विख्यात हो गयी थी। यह मैदान 'आस्टर लित्ज' का मैदान कहलाता है। वह विजयी सैनिकों से खुश होकर बोला–

"मैं बहुत खुश हूँ। तुम लोग अपनी संतानों को मेरा नाम देना। अगर कोई उनमें से मेरी ही तरह योद्धा सिद्ध हुआ तो मैं उसे गोद ले लूँगा और अपना पुत्र बनाकर उसे उत्तराधिकारी घोषित कर दूँगा।"

आस्टर लित्ज की जीत के अगले दिन नेपोलियन ने टैलीरेण्ड को इस प्रकार लिखा था–



रूस में नेपोलियन की हार

"अब हैब्सबर्ग को मिटाना ज्यादा मुश्किल नहीं होगा। लेकिन हमारे लिये यही सही सबित होगा कि उसे शक्तिशाली बनाया जाये और फ्रांस की शासन प्रणाली में उसे एक निश्चित जगह दी जाये।"

प्रेजबर्ग में शान्ति लागू करने के लिये नेपोलियन ने पुराने जर्मनी राज्य को टुकड़ों में बिभाजित किया जबकि आस्ट्रिया को जर्मनी तथा इटली से अलग कर दिया गया। तब किसी को भी यह जानकारी नहीं थी कि आखिर नेपोलियन के दिमाग में क्या चल रहा है?

नेपोलियन ने अपनी योजनाओं को क्रियान्वित करते हुए स्वयं को यूरोप का एक मात्र राजा घोषित कर दिया, जो सम्पूर्ण यूरोप पर राज्य करेगा, बाकी सभी राजा उसके अधीन होंगे।

अपने किसी भी भाई को नेपोलियन ने उनकी भूल के लिये क्षमा नहीं किया। उसने जेरोम को कोई सहयोग नहीं दिया, बल्कि उसका राज्य भी उससे छीन लिया था।

उसके परिवार में केवल उसका सौतेला बेटा एगिनी ही एकमात्र ऐसा सदस्य था जो उसके प्रति पूरी तरह से निष्ठावान था। नेपोलियन भी उससे बहुत प्यार करता था। सदैव उसकी प्रशंसा कर उसका हौसला बढ़ाता था। एगिनी ने बवेरियन राजकुमारी से विवाह किया था नेपोलियन ने अपनी सौतेली बहु से वारिस की मांग करते हुए कहा था–

"बेटी हमें पुत्री नहीं चाहिये एक वारिस चाहिये। पुत्र प्राप्ति के लिये मैं तुम्हें एक नुस्खा बताता हूँ, तुम रोज कुछ दिन के लिये अंगूरी शराब को बिना पानी मिलाये पियो।"

इसके बाद एगिनी की पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। इससे नेपोलियन को बहुत प्रसन्नता हुई।

❑



नेपोलियन के सपने

फ्रांस शासक नेपोलियन गणितज्ञ से ज्यादा कुछ न होता तो भी वह अपने गणन कार्यों से संतुष्ट हो गया होता। वह अपने फ्रांस के नेतृत्व में यूरोप के राज्यों के संगठित होने से पूर्व ही विश्व साम्राज्य के अपने सपने को साकार कर लेता।

किन्तु वह गणितज्ञ होने के साथ-साथ स्वप्नदृष्टा भी था। सपने देखना उसकी आदत थी।

उसकी इस आदत को उसका वारिस मिल जाने के बाद और भी बल मिल गया था। उसमें पुनः उसकी शक्ति का संचार हो गया था जो ग्यारह वर्ष पूर्व थी।

नेपोलियन के विचार से उसकी शक्तियाँ परिपक्क हो रही थीं। शक्तियों के साथ-साथ उसका भाग्य भी विकसित हो रहा था।



नेपोलियन का पुत्र माँ की गोद में

नेपोलियन ने कभी समझदारी का परिचय नहीं दिया किन्तु वह हमेशा चतुर अवश्य रहा।

इंग्लैण्ड अभी तक अविजित था। उसने इंग्लैण्ड से आयात होने वाली वस्तुओं पर प्रतिबन्ध लगा दिया था; जिससे फ्रांस की जनता का शोषण होने लगा था। पेरिस द्वारा अंग्रेजी सामान के आयात पर प्रतिबन्ध लगाये जाने पर लंदन में सभी तटस्थ देशों के लिये बंद किये गये बंदरगाह खोल दिये गये।

तब पेरिस ने यह घोषणा करके इसका विरोध किया कि लंदन के बंदरगाहों पर आने जाने वाले तटस्थ देशों के जहाज जब्त कर लिये जायेंगे।

उसने ऐसा किया भी। पेरिस की इस हरकत पर अमेरिका सरकार ने अपने नागरिकों को यूरोप के साथ व्यापार करना तथा फ्रांस के साथ निजी सम्बन्ध न रखने की घोषणा कर दी।

उस समय नेपोलियन ने अमेरिका को आश्वासन दिया कि यदि वह अपने व्यापारियों को इंग्लैण्ड के बंदरगाहों पर जाने से रोक दे तो वह उसे सभी तरह के विशेषाधिकार देने को तैयार हैं। विदेश व्यापार को नियन्त्रित करने के प्रयास से उत्पन्न विरोधाभास की स्थिति मे नेपोलियन ने समुन्द्री व्यापार की स्वतन्त्रता

छीनने का प्रयास किया।

इंग्लैण्ड के व्यापारिक स्रोतों पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये वह अन्य देशों को भी अपनी इच्छा से चलाने पर विवश करना चाहता था। यह उसके स्वप्नदृष्टा होने का प्रभाव ही था।

उसकी आशायें, चाहतें, व इच्छायें बढ़ती ही जा रहीं थीं जिनका परिणाम युद्ध के अतिरिक्त कुछ नहीं था। संसद में विपक्षी दल युद्ध करने के विरुद्ध था। इसके बावजूद नेपोलियन ने सन्धि प्रस्तावों को ठुकरा दिया था!

स्पेन में फैली बगावत इंग्लैण्ड के विरोध रुख का ही परिणाम थी।

फ्रांस की ढाई लाख सेना अभी तक स्पेन में तैनात थी। सभी कोशिशों के बावजूद बागियों की तीस हजार की संख्या वाली सेना को हराया नहीं जा सका था। फ्रांसीसी सैनिकों के विरुद्ध स्पेन के अधिकारियों तथा पादरियों के नेतृत्व में देशभक्त विद्रोही निरन्तर गुरिल्ला युद्ध कर रहे थे। जिस कारण नेपोलियन के जनरलों की हिम्मत टूटने लगी थी, उनमें संगठन-हीनता की भावना बढ़ती जा रही थी।



मेरी लुइस ने नेपोलियन की दूसरी पत्नी नेपोलियन से उत्पन्न पुत्र संतोष मुद्रा में

तब नेपोलियन ने फ्रांस के जनरल मसीना को स्पेन भेजा। इसी दौरान उसने जोसेफ को चार प्रान्तों से वंचित कर दिया।

यूरोप में एक बार फिर नेपोलियन के विरुद्ध विद्रोह की चिंगारियाँ भड़क उठीं। उदास नेपोलियन हर जगह भड़कती चिंगारियों को देख रहा था। चिंगारियां उसके परिवार के पागलपन के कारण ही भड़की थी।

नेपोलियन अपने सगे सम्बन्धियों तथा अमीरों से निराश हो चुका था। इस सम्बन्ध में उसने अपने एक घनिष्ठ मित्र को लिखा था–

"मुझे मुराट व अपने भाइयों को सिंहासन पर बैठाना नहीं चाहिए था। शरणार्थियों से छीने हुए राज्य को वापस लौटाना भी एक भूल थी। मुझे इन प्रदेशों को अपने राज्य के अधिकार में ले लेना चाहिये था। पहले के स्वामियों के लिए साधारण आमदनी निर्धारित कर देनी चाहिए थी। इन पुराने शासकों को मैं सहन नहीं कर सकता। उनके आशीर्वाद मेरे गम्भीर व्यक्तित्व की समझ से बाहर हैं। मैंने खुद भी अपने पिता से उत्तराधिकार में कुछ नहीं पाया फिर भी मैं संतुष्ट हूँ। मेरे पास जो कुछ भी है उस पर किसी का अधिकार नहीं है। मुझे राज्यपाल और राजप्रमुखों की नियुक्ति करके संतुष्ट हो जाना चाहिए था। मेरे कुछ मार्शल

भी महानता और स्वतन्त्रता को पाने के स्वप्न देखने लगे हैं।"

नेपोलियन ने कभी यह नहीं सोचा था कि उससे लाभ उठाने उसके भाई तथा साले व मार्शल, आने वाले समय में उससे प्रतिशोध लेंगे। जब उसके सितारे धूमिल पड़ जायेंगे व यूरोप का आकाश संकट के बादलों से घिर जायेगा, तो शौर्य की उस बुझती लौ में उसके सम्बन्धी ही महाद्वीप के उस पार को चमकाने का प्रभास करेंगे।

मैरी से विवाह होने से नेपोलियन के राजनीतिक तनाव को कम करने में कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पड़ा। इस विवाह से लाभ उठाने के लिये आस्ट्रिया से दहेज के रूप में दो प्रान्तों को मिलाने की आशा थी मगर उसे कुछ भी नहीं मिला था।

यूरोप में भड़कती चिंगारियों को नेपोलियन अपनी तलवार की ताकत से बुझा सकता था। वह अपने पुराने दिव्य विजय के सपने को कार्य रूप देने का प्रयास कर रहा था। विश्व को शत्रु बनाने के स्थान पर मित्र बनाना चाहता था।


नेपोलियन परिवारिक सदस्यों के बीच : कुछ अवकाश के क्षणों में

नेपोलियन को पता था कि रूस की हार से उसे कुछ नहीं मिलने वाला है, बल्कि युद्ध में अपनी हार की आशंका ज्यादा थी। अतः वह पहले अवसरों की तरह इस युद्ध से बचने के प्रयास कर रहा था।

नेपोलियन की नज़र ज़ार पर टिकी थी। उसके विचार से ज़ार पर उसके सुझावों का प्रभाव होता जा रहा था। इसलिये उसने इन आश्चर्यजनक शब्दों में राइन संघ के राजकुमार को लिखा—

"यह युद्ध मेरे न चाहने और ज़ार व दो साम्राज्यों के हितों के प्रतिकूल होने के बावजूद जरूर होगा।"

नेपोलियन की शत्रुता तो इंग्लैण्ड से थी, क्योंकि उसने उसे भारी क्षति पहुँचाई थी। बदले में वह भी इंग्लैण्ड को क्षति पहुँचाना चाहता था। अतः उसने अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये ज़ार से सभी तटस्थ देशों के पोतों को बंदरगाह में प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगाने को कहा था।

मगर ज़ार उससे सहमत नहीं था। क्योंकि ऐसा करने पर उसका समुद्री व्यापार प्रभावित होता।

नेपोलियन बरामद हुए प्रतिबन्धित माल को जब्त कर लेता था। किन्तु फ्रांस

में हो रही तस्करी को वह रोकने में असफल रहा। इस कारण उसे जर्मनी के समुद्र तट की दोहरी देख-रेख करनी पड़ी।

अतः उसने बेरार तथा एल्बी के मुहानों को, होंग नगर तथा हनोवर के एक हिस्से के साथ जोड़ दिया।

इस सम्बन्ध में उसका कहना था—

"परिस्थितियाँ इंग्लैण्ड के विरुद्ध एक नयी व्यवस्था की मांग कर रही है।"

नेपोलियन ने ओल्डनबर्ग पर भी अपना अधिकार कर लिया।

उसकी इस व्यापक कार्यवाही नीति का तर्कसंगत परिणाम निकला। ज़ार ने इसे सन्धि का उल्लंघन समझा क्योंकि ये ओल्डनबर्ग के एकीकरण की गारन्टी दी गयी थी। उसने इसके विरुद्ध विद्रोह करते हुए नेपोलियन की राज्य सभा को एक पत्र लिखा।

यह पत्र लगभग युद्ध की घोषणा करने वाला जैसा था। उसका अगला कदम भी विरोध प्रकट करने वाला था। जिसमें उसने रूस को औपनिवेशिक माल ले जाने की इज़ाज़त दे दी थी। जबकि फ्रांस के उद्योगों द्वारा निर्मित शराब व रेशम जैसे उत्पादों पर प्रतिबन्धित आयात शुल्क लगा दिया था।

ज़ार तुर्की के साथ सन्धि करने का इच्छुक था। नेपोलियन सर्बिया के कब्जे में लेने को आस्ट्रिलिया को उकसा रहा था तथा हस्तक्षेप ना करने का वचन देने को उसे बाध्य किया व वैलेशिया की तरफ कूच करने को प्रेरित किया।

रूस का दूत कोलेनकार्ट शान्ति स्थापित करने की इच्छा से फ्रांस आया। किन्तु नेपोलियन गुप्त समझौते के लिये राजी हो गया। नेपोलियन का विचार था—

"यदि फ्रांस व रूस के बीच की दूरी बढ़कर युद्ध में बदलती है तो उसे ज़ार के विरुद्ध युद्ध छोड़ने के लिये पोलैण्ड की आवश्यकता पड़ेगी। अतः पोलैण्ड को प्रोत्साहन देना आवश्यक है।"

मगर ज़ार ने खुली सन्धि की मांग की, ताकि पोलैण्ड की सभी आशाएं समाप्त हो जायें।

उन्ही दिनों फ्रांस का जनरल मसीना स्पेन में हार गया। नेपोलियन को संदेह हुआ कि वह किसी दबाव में हारा है। इसी बीच रूस का राजदूत कोलेनकोर्ट पुनः पेरिस पहुँचा। उसने नेपोलियन से ज़ार के बाबत वार्ता की।

नेपोलियन को उससे ज्यादा सुना अच्छा नहीं लगा। वह बेचैनी से चहलकदमी करने लगा फिर उसने कहा—"पूरी एकाग्रता से किया गया युद्ध तुम्हारे शासक ज़ार के सुन्दर सपनों को शीशे की तरह चूर-चूर कर देगा। वह फरेबी, झूठा, दुर्बल व महत्वाकांक्षी है। उसका आचरण ग्रीकवासियों के आचरण जैसा है। मेरा विश्वास करो, मैं नहीं बल्कि, उसकी युद्ध करने की इच्छा है। इस प्रकार वह

अपने गुप्त उद्देश्य को पूर्ण करना चाहता है। वह दुःखी है क्योंकि मैंने उसकी बहन से विवाह नहीं किया।"

इस पर ज़ार कोलेनकोर्ट ने उसकी विचारधारा के विपरीत प्रमाण प्रस्तुत किये तो नेपोलियन ने कहा—

"मैं सन्धि प्रस्ताव की शर्तों को भूल चुका हूँ।"

नेपोलियन को स्वयं अपनी स्थिति पर विश्वास नहीं था तथा वह तथ्यपरक व्यक्ति होने के बावजूद अपने विरुद्ध जाने वाले तथ्यों को भूलने का ढोंग रच रहा था।

रूस का राजदूत वापस ज़ार के पास चला गया।

उसके जाते ही नेपोलियन ने फाउश को बुलाया। वह कोलेनकोर्ट जैसे दूत की तुलना में फाउश जैसे खतरनाक दुश्मन को अपनी बात ढंग से समझा सकता था।

विगत वर्ष नेपोलियन ने फाउश को पुलिस-मन्त्री के पद से हटा दिया था। क्योंकि उसने इंग्लैण्ड के साथ मिलकर गहरा षड्यंत्र रचा था। मगर नेपोलियन ने उसे फ्रांस से निर्वासित नहीं किया था बल्कि उसकी नियुक्ति सीनेट सदस्य के रूप में कर दी थी।

फाउश को मन्त्री पद से हटाने के बाद उस पर नेपोलियन ने अपने गुप्तचर भी नियुक्त कर रखे थे। फिर भी सर्वाधिक मामलों में वह उसी से राय लेता था।

नेपोलियन ने फाउश से कहा—"लोगों का विचार है कि विवाह होने के बाद शेर सो गया है, मगर अब उन्हें जल्दी ही यह पता चल जायेगा कि मैं सोया नहीं जागा शेर हूँ। मुझे आठ लाख सैनिकों की आवश्यकता है ताकि मैं उनके साथ सम्पूर्ण यूरोप को जीत सकूं। यूरोप के साथ-साथ सहज में ही मैं उसे अपने वश में कर सकता हूँ। क्या तुमने मुझसे नहीं कहा था कि मैं अपनी बुद्धि को उसके रास्ते पर चलाता हूँ क्योंकि मैं असम्भव शब्द को नहीं जानता। यदि कोई शक्ति मुझे विश्व विजेता बनने को प्रेरित करती है तो मैं कैसे उसकी बात की उपेक्षा कर सकता हूँ। तुम व तुम जैसे कई लोग, मेरी आलोचना करते फिरते हो तथा शासक बनने की शिक्षा देते हो, क्या तुम सब मेरे अधीन नहीं हो? मेरा उद्देश्य अभी पूरा नहीं हुआ है। जब मैं एक बार कुछ करने की ठान लेता हूँ तो उसे सफलतापूर्वक करना अपना कर्तव्य समझता हूँ।"

फिर उसने कहा—"हमें यूरोपीय विधि संहिता, अमीता की सुविधा वाला न्यायालय एकीकृत मुद्रा बाट व माप की सामान्य पद्धति अपनाने की आवश्यकता है। मैं सभी राष्ट्रों को इकट्ठा कर दूँगा।"

इतना कहकर उसने फाउश को वापस भेज दिया।

❑



फ्रांसीसी क्रान्ति के सिद्धान्त

नेपोलियन के सम्पूर्ण कार्यो पर विचार करते समय एक प्रश्न जो प्रायः हमेशा पूछा जाता है वह यह कि–

"क्या नेपोलियन के द्वारा किये गये कार्यो ने फ्रांस की क्रान्ति को जारी रखा था अथवा उसने क्रान्ति के प्रमुख सिद्धान्तों का हनन किया था?"

एक बार स्वयं नेपोलियन ने क्रान्ति का पुत्र होने का दावा किया था।

एक दूसरे अवसर पर उसने यह भी कहा था–"मैंने क्रान्ति को नष्ट कर दिया।"

कुछ कथनों में वह निश्चय ही क्रान्ति का पुत्र था; पर उसके कुछ कार्य ऐसे भी थे जिनसे प्रतीत होता है कि वह घोर क्रान्ति विरोधी या प्रति क्रान्ति था। सही स्थिति को जानने के लिये हमें क्रान्ति के प्रति नेपोलियन के दृष्टिकोणों का अध्ययन करना होगा।

नेपोलियन और समानता का सिद्धान्त

क्रान्ति आरम्भ से ही समानता, स्वतन्त्रता और भाई चारे के सिद्धान्त पर आधारित थी। ये प्रारम्भिक क्रान्तिकारियों के सबसे प्रिय नारे थे। यहाँ पहले हमें समानता के सिद्धान्त के प्रति नेपोलियन के रवैये को परखना होगा।

फ्रांस के क्रान्तिकारियों ने शुरू में ही मानवाधिकारों की घोषणा करके समानता के सिद्धान्त को प्रमुख स्थान दिया था। इसके अनुरूप सभी प्रतिभावान व्यक्तियों के लिये राजकीय पदों का द्वार खोल दिया था।

नेपोलियन ने इस सिद्धान्त का आदर किया। उसने इस सिद्धान्त को मान्यता दी कि सभी व्यक्तियों को अपनी प्रतिभा को विकसित करने का अवसर मिलना चाहिए।

यह सच है कि नेपोलियन का शासन परम निरंकुश शासन था। पर पुरातन



नेपोलियन ने फ्रांस को क्रांतिका दृष्टि कोण दिया

व्यवस्था की तरह इसमें जन्म पर आधारित किसी प्रकार के विशेषाधिकार को स्थान नहीं था। उसके शासन में उसके अपने परिवार के कुछ दुर्भाग्यपूर्ण अपवादों को छोड़कर किसी को भी पद पर पहुँचने के लिये सिवाय योग्यता के और कोई रास्ता नहीं था।

नेपोलियन ने सामन्तशाही को हमेशा के लिये समाप्त कर दिया। उसने कुलीन तथा पादरियों की जमीनों पर किसानों का अधिकार बने रहने दिया तथा रूसी व्यक्तियों को सामाजिक और नागरिक समानता प्रदान किया तथा क्रान्ति की उपलब्धियों को स्थायित्व प्रदान किया। क्रान्ति के समान भागीदारों - किसानों तथा बुर्जुआओं के पास उन लाभों को बरकरार रहने दिया जो उन्हें प्राप्त थे।

लेकिन नेपोलियन ने इसके अतिरिक्त कुछ और भी किया। उसने राष्ट्र की एकता को अपने व्यक्तित्व के साथ मिला दिया। स्वयं ही क्रान्ति का प्रतीक बनने का दम करने लगा। उसने दावा किया कि मैं ही क्रान्ति हूँ। क्रान्तिकारी रक्षा करते-करते उसने गणतन्त्र को ही समाप्त कर दिया।

सन् 1804 ई० सन में नेपोलियन को सम्राट घोषित किया गया। एक नये संविधान के द्वारा उसके शासन को आनुवंशिक बना दिया गया। साम्राज्य की स्थापना का अर्थ था दरबार की पुनरावृत्ति। इसमें नेपोलियन का परिवार और परिवार से सम्बन्धित लोग अपेक्षाकृत नीचे के स्तर से आये हुए लोग थे।

अतः यह उचित समझा गया कि इस नये उच्चतर स्तर प्राप्त व्यक्तियों को दरबार के तौर-तरीकों का प्रतिक्षण दिया जाये। इसके लिये भूतपूर्व बूर्बो राजवंश के कुछ व्यक्तियों की नियुक्ति की गई।

नेपोलियन ने अपने भाइयों को साम्राज्य में ऊँचे स्थान दिये थे। उसकी बहनें इम्पीरियल हाईनेंसेज बनीं। इन सारी बातों से समानता के सिद्धान्त का उल्लंघन हुआ।

इस प्रकार इस विश्लेषण के उपरान्त यही कहा जा सकता है कि यद्यपि नेपोलियन ने बहुत हद तक समानता के सिद्धान्त का आदर किया; लेकिन अपने सगे-सम्बन्धियों को कुल के आधार पर बढ़ावा देकर उसने इस सिद्धान्त का अतिक्रमण भी किया। कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि उसने बहुत हद तक इस सिद्धान्त का पालन किया। अपवाद उसके परिवार के कुछ व्यक्ति ही थे।

नेपोलियन और स्वतन्त्रता का सिद्धान्त

नेपोलियन का व्यवहार क्रान्ति के दूसरे सिद्धान्त, स्वतन्त्रता के साथ बड़ा कठोर और अनुचित रहा। उसने पूरी तरह इस सिद्धान्त का गला घोंट दिया।

नया शासन आरम्भ से ही तानाशाही था। निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा शासन की पद्धति और जनता की सम्प्रभुता के सिद्धान्त को निर्ममतापूर्वक दबा दिया गया।

सन् 1779 ई० के राज्य परिवर्तन के बाद एक नया संविधान बना और एक जनमत संग्रह के उपरान्त इसे लागू कर दिया गया। नये संविधान ने संसदीय संस्थाओं को बेकार बना दिया। इसके अन्तर्गत जनता को मताधिकार तो अवश्य मिला, लेकिन उसे केवल 'नोटेबल्स' चुनने का अधिकार मिला।

चुने हुए 'नोटेबल्स' की सूची में शामिल व्यक्तियों की नियुक्ति सरकारी पक्षों पर होती थी। ये नोटबल्स तो व्यवस्थापिका में बैठ सकते थे, पर वे न तो किसी कानून बनाने का कार्य कर सकते थे और न किसी विधान पर विचार-विमर्श कर सकते थे।



सम्राट नेपोलियन : स्वतंत्रता के सिद्धांत का पोषक

ये नोटेबल्स महज किसी विधि को स्वीकृत या अस्वीकृत कर सकते थे।

एक 'ट्राईस्यूनेट' भी था जो किसी विधि पर विचार विमर्श कर सकता था, लेकिन उसके पास विधि बनाने का अधिकार नहीं था। प्रथम कॉन्सल ही सारा निर्णय लेता था और शासन चलाता था।

इस प्रकार यह व्यवस्था किसी का भी प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती थी। बोनापार्ट यह कह सकता था कि मैं सीधे जनता से समय-समय पर जनमत संग्रह के माध्यम से आदेश प्राप्त करता हूँ, पर जनमत संग्रह के निर्णय अधिकतर दबाव में ही होते थे।

नेपोलियन के शासन काल में विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर कठोर नियन्त्रण लगाया गया। मानवाधिकारों की घोषणा में स्वतन्त्रता के लिये इस अधिकार का कोई महत्व नहीं था।

नेपोलियन ने सत्ता में आते ही आलोचना और विचारों की स्वतन्त्रता पर कठोर पाबन्दी लगा दी। उसके सत्ता में आने के कुछ ही दिनों बाद पेरिस में अखबारों की संख्या तिहत्तर से घट कर तेरह रह गयी थी।

इन अखबारों पर भी कड़ा नियन्त्रण लगा हुआ था और सरकार की अनुमति के बाद ही कोई समाचार छाप सकते थे। सरकार राजनीतिक रूप में ख़तरा पैदा करने वाली साहित्यिक रचनाओं के भी विरुद्ध थी।

थियेटरों पर विशेष ध्यान रखा जाता था। ऐसे नियन्त्रणों को लागू करने के लिये पुलिस शक्ति की आवश्यकता थी।

पुलिस की देख-रेख का कार्य कुख्यात जोसेफ फाउश को सौंपा गया। उसने सम्पूर्ण फ्रांस में जासूसों का जाल बिछा दिया। इसके माध्यम से हजारों ऐसे व्यक्तियों पर नज़र रखने की व्यवस्था की गयी जिन पर तोड़-फोड़ करने वाली

प्रवृत्ति रखने का संदेह था।

लोगों को अनजाने ढंग से नज़रबंद रखा जाने लगा तथा कुछ अन्य को पागलखाने में बन्द कर दिया। सन् 1814 ई० में फ्रांस में राजनीतिक कैदियों की संख्या ढाई हजार तक पहुँच गयी। इसके फलस्वरूप जिस प्रकार का वातावरण बना वह आतंक शासन के युग की याद दिलाता रहा।

निश्चय ही यह क्रान्ति की उस 'अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता' को सिद्धान्त के विरुद्ध था, जिसकी घोषण सन् 1789 ई० में की गयी थी।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि बोनापार्ट की सरकार द्वारा फ्रांस के किसी अन्य सिद्धान्त का इतना अधिक सिलसिलेवार उल्लंघन नहीं किया गया; जितना स्वतन्त्रता के सिद्धान्त का।

वस्तुतः स्वतन्त्रता के सिद्धान्त में नेपोलियन को लेशमात्र भी विश्वास नहीं था। वह तो स्वतन्त्रता को राज्य की कुशलता में बाधा पहुँचाने वाले अशान्ति जनक तत्वों की रूप में देखता था।

नेपोलियन और विश्व बन्धुत्व का सिद्धान्त

फ्रांसीसी क्रान्ति का तीसरा सिद्धान्त भ्रातृत्व की भावना या विश्व बन्धुत्व का सिद्धान्त था। प्रारम्भ में ही क्रान्तिकारियों ने सभी मनुष्यों के बीच भाईचारे के सिद्धान्त की घोषणा की थी, यह वादा किया था कि विजय करने के निमित्त फ्रांस की सरकार ने कुछ आक्रमक रवैया अपनाया तो उसका एक उद्देश्य सामन्ती अत्याचारों से यूरोप की गुलाम प्रजाओं को मुक्त कराना था।

निश्चय ही कुछ क्रान्तिकारी नेतागण क्रान्ति के लाभों को यूरोप के सभी लोगों तक पहुँचाना चाहते थे। यह सत्य है कि जब फ्रांसीसी सेनाओं ने युद्ध में आक्रामक रूप अपनाया तब उन्होंने जीते हुए प्रदेशों को फ्रांस में मिला लिया। अपनी कार्यवाही के पक्ष में उन्होंने दलील देते हुए कहा—"यदि इन प्रदेशों को यूं ही छोड़ दिया जाये तो उनके भूतपूर्व शासक उन्हें जीतकर स्वयं फ्रांसीसी गणतन्त्र के लिये खतरा पैदा कर सकते हैं। अतः कुल मिलाकर क्रान्तिकारी फ्रांस के युद्ध को आत्मसुरक्षात्मक युद्ध ही कहा जा सकता है, आक्रामक युद्ध नहीं।"



सम्राट नेपोलियन : विश्व बन्धुत्व के सिद्धांत का पोषक था

लेकिन नेपोलियन द्वारा लड़े गये

युद्धों के साथ ऐसी बात नहीं थी। एक आकांक्षायुक्त प्राणी की तरह वह विश्वविजयी बनने के सपने देखा करता था।

सम्राट बनने के शीघ्र बाद ही नेपोलियन ने अपना वह विजय-अभियान छेड़ा जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण महादेश पर फ्रांसीसी प्रभुसत्ता स्थापित करना था। उसका कहना था कि जब तक सम्पूर्ण यूरोपीय महादेश एक सत्ता के अधीन नहीं हो जाता, तब तक यूरोप में शान्ति स्थापित नहीं हो सकती।

अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति के लिये नेपोलियन ने बड़ी संख्या में दूसरे राज्यों को अपने अधीन कर लिया था। उसने फ्रांस के लाभ के लिये इन राज्यों की जनता का शोषण किया।

ग्रैंड एम्पायर की प्रजा को फ्रांसीसी अभिलाषाओं की पूर्ति के लिये कठोरतापूर्वक दबाना फ्रांसीसी शासकों और संस्थाओं को अधीनस्थ राष्ट्रों पर थोपना—ये नेपोलियन के ऐसे कार्य थे जिनसे स्पष्ट झलकता था कि क्रान्ति के आदर्शों से उसका कोई गहरा लगाव नहीं था।

नेपोलियन ने इटली और जर्मनी में जो कुछ किया उसका उद्देश्य इन देशों के निवासियों की राष्ट्रीय अभिलाषाओं की पुष्पित-पल्लवित करना एवं अधिक अच्छे ढंग से उनका शोषण करना था।

जैसे-जैसे नेपोलियन का युद्ध बढ़ता गया, वैसे-वैसे अधीनस्थ राष्ट्रों की राजकीय सेना के लिये अधिक से अधिक धन और सैनिक आपूर्ति करनी पड़ी।

सन् 1812 ई० में रूस पर आक्रमण करने के लिये जो विशाल सेना गठित की गयी थी उसमें अधिक व्यक्ति विजित प्रदेशों की प्रजा ही थे। नेपोलियन द्वारा लागू की गयी महाद्वीपीय व्यवस्था ने यूरोप के व्यापारी वर्ग को सबसे अधिक परेशान किया।

नेपोलियन यदि अपने विजय अभियानों में किसी महान आदर्श से प्रेरित हुआ था तो वह रोमन आदर्श के समान विश्वव्यापी साम्राज्य कायम करने का सपना था, न कि समान राष्ट्रों का एक संघ स्थापित करने का आदर्श।

नेपोलियन का सपना सिकन्दर या शार्लमो बनने का था। निश्चित रूप से यह प्रारम्भिक क्रान्तिकारियों के विश्व बन्धुत्व के सिद्धान्त के अनुरूप न था। नेपोलियन असंदिग्ध रूप से क्रान्ति का पुत्र था। लेकिन वह एक ऐसा पुत्र था जिसने अपनी सुविधाओं के हित में अपनी माता को भी आघात पहुँचाया था।

सन् 1815 ई० में अन्तिम पराजय के बाद नेपोलियन सेंट हेलेना द्वीप में छः वर्षों तक निर्वासित का जीवन बिताता रहा। इस अवधि में उसने अपने संस्मरण लिखे। इस पुस्तक में उसने अपने को क्रान्ति का पुत्र तथा उदारवादी राजनेता प्रमाणित करने का प्रयास किया तथा यह सिद्ध करने की चेष्टा भी की उसने



रूस के विरुद्ध सैनिक अभियान पर निकला विजेता नेपोलियन सन् 1812 ई०

क्रान्ति के दिनों में प्रारम्भ किये गये सुधारों को पूरा करने तथा उन्हें आगे बढ़ाने का कार्य किया।

इसके साथ ही नेपोलियन ने यह दावा भी किया कि क्रान्ति के कायदों को उसने उन यूरोपीय देशों तक पहुँचाने का प्रयास किया जो अब भी सामन्ती व्यवस्था के अन्तर्गत पशुतुल्य जीवन बिता रहे थे। उसके इस कथन में बहुत अंश तक सत्यता है।

अपने शासन के प्रारम्भिक दिनों में नेपोलियन ने कई ऐसे कार्य किये जो क्रान्ति के दिनों में शुरू किये गये थे। अपने सुधारों द्वारा उसने क्रान्ति का स्थायित्व भी प्रदान किया। रोजगार के अवसर की समता को मानकर उसने सचमुच ही क्रान्ति की उपलब्धियों को सुदृढ़ किया। इनमें से अधिकांश सुधारों को अधीनस्थ राज्यों में लागू करके उसने प्रमाणित कर दिया कि वह सम्पूर्ण यूरोप में क्रान्ति की मशाल प्रज्ज्वलित करना चाहता था।

दूसरी ओर ये सभी सुधार एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत लागू किये गये थे जो किसी भी नागरिक को अपनी सरकार में कोई वास्तविक भूमिका अदा नहीं करने देता था। अधीनस्थ राज्यों के साथ ही उसने उपनिवेशों जैसा व्यवहार किया तथा समानता के सिद्धान्त के प्रति भी वह अक्षरशः निष्ठावान नहीं रहा। ये सारी बातें नेपोलियन के इस दावे की कि वह क्रान्ति का पुत्र था, को कमजोर बनाती हैं।

❑



नेपोलियन के पतन के कारण

नेपोलियन न केवल एक महान योद्धा था वरन् एक असाधारण प्रतिभाशाली विजेता भी था। यही कारण था कि उसने चंद वर्षों के अन्दर ही यूरोप में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना कर ली। उसके साम्राज्य को "ग्रैण्ड एम्पायर" कहा जाता।

नेपोलियन के इस साम्राज्य की स्थापना अद्‌भुत विजयों की एक महान शृंखला के फलस्वरूप हुई थी। उसका विजय अभियान डायरेक्टरी की शासनावधि से ही प्रारम्भ हो चुका था। सन् 1808 ई० में तिलसित की सन्धि के साथ यह पराकाष्ठा पर पहुँच गया था।

तिलसित की सन्धि पर हस्ताक्षर करने के समय नेपोलियन न केवल अपनी महानतम् सीमाओं को पार कर चुका था, वरन् दृढ़स्थिति भी प्राप्त कर चुका था। क्षेत्रफल के संदर्भ में सन् 1810 ई० से 1811 ई० के बीच नेपोलियन का प्रभाव अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँच चुका था।



नेपोलियन सेंट हेलेना में निर्वासित जीवन

इस समय तक उसका साम्राज्य बाल्कन प्रायद्वीप को छोड़कर यूरोप की सम्पूर्ण मुख्य भूमि पर फैल गया था। इसका केन्द्र फ्रांसीसी साम्राज्य था। जो चारों ओर से आश्रित और समर्थक राज्यों से घिरा हुआ था। लगभग सारा स्पेन,

इटली, जर्मनी का राइन संघ, वारसा की ग्रैंड डची, नेपोलियन के आश्रित राज्य थे। जिनके शासकों की नियुक्ति वह स्वयं करता था।

इसके साथ ही आस्ट्रिया, प्रशा और रूस उसके समर्थक राज्य थे। यह स्थिति सन् 1812 ई० तक कायम रही। इसके बाद ही घटनाओं का चक्र दूसरी दिशा में घूमने लगा। जो नेपोलियन को पतन की ओर ले गया। सन् 1811 ई० से वे शक्तियाँ एकत्र होने लगीं। जिन्होंने नेपोलियन साम्राज्य के इस विशाल भवन को अन्ततः धराशायी कर दिया।

कहा जाता है कि नेपोलियन के पराभव में तीन बड़ी गलतियों का हाथ था। ये थे महाद्वीपीय व्यवस्था (काण्टिनेण्टल सिस्टम), स्पेन की उलझन व रूस का आक्रमण। पहली वाली गलती ने उसके द्वारा की जाने वाली दूसरी गलतियों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

उन्नीसवीं सदी के शुरू से ही काम्स्युलेट तथा सम्राट, यूरोप में व्यापक पैमाने पर युद्ध शुरू करने की तैयारियों में लगे थे। विजय की इन योजनाओं का सबसे जबर्दस्त विरोध ब्रिटेन द्वारा था। इसका महत्वपूर्ण कारण यही था कि मई 1803ई० से लेकर सन् 1814 ई० तक युद्ध का वातावरण रहा था।

सन् 1804-05 में ब्रिटेन पर नेपोलियन की आक्रमण योजनाओं की असफलताओं तथा ट्राफलगर में फ्रांसीसी नौसेना की पूर्ण पराजय से बिल्कुल ही स्पष्ट हो गया था कि सामुद्रिक शक्ति में ब्रिटेन, फ्रांस से तगड़ा पड़ता है। लेकिन नेपोलियन इस वास्तविकता को मानने के लिये तैयार नहीं था।

नेपोलियन ब्रिटेन की व्यापारिक गुरुता को नष्ट करने के लिये महाद्वीपीय व्यवस्था को लागू करने के प्रयास में जुट गया था। इस व्यवस्था को प्रभावशाली बनाने के लिये उसे प्रादेशिक विजय के लिये बाध्य होना पड़ा। जब तक अधिक से अधिक तटवर्ती प्रदेश उसके नियन्त्रण में नहीं आ जाते तब तक महाद्वीपीय व्यवस्था की सफलता संदिग्ध थी।

इस योजना को सफल बनाने के लिये जरूरी था कि पुर्तगाल को महाद्वीपीय व्यवस्था का समर्थन करने पर बाध्य किया जाये। इस इच्छा ने सम्पूर्ण इबेरियन प्रायद्वीप की राजनीति को उलझा दिया। जिसकी परिणति स्पेन तथा पुर्तगाल पर कब्जा कर लिये जाने के रूप में हुई।

पुर्तगाल पर नेपोलियन के अधिपत्य से ब्रिटिश प्रतिरोध को और भी मजबूत कर दिया। तथाकथित प्रायद्वीपीय युद्ध ने नेपोलियन को और भी क्षति पहुँचायी।

फ्रांस का स्पेन पर आधिपत्य बड़ा महंगा पड़ा। स्पेनवासी कभी फ्रांसीसी शासन से समझौता नहीं कर सके। उन्होंने बहुत तगड़ा विरोध प्रस्तुत किया। इसके कारण फ्रांस के साधनों पर दबाव पड़ा तथा यूरोप में उसके पराभव में इसका बड़ा हाथ रहा। नेपोलियन ने बाद में कहा—

"यह (स्पेन) एक ऐसा सैनिक घाव था जिसने मुझे बर्बाद कर दिया।"

यह महाद्वीपीय व्यवस्था ही थी जिसने उसे ऐसी मुसीबतों में डाल दिया था जिससे निकलने का कोई रास्ता उसके सामने नहीं था। पुर्तगाल के प्रायद्वीप युद्ध, स्पेन का छापामार युद्ध और रूस के छल प्रपंच वाले युद्ध ने उसकी सैनिक शक्ति को खोखला कर दिया था। इन सभी घटनाओं ने उस परिस्थिति का सृजन किया जिसमें नेपोलियन के विरोधी संगठित होकर उसका अन्त कर सके।

नेपोलियन की सैनिक शक्ति को कमजोर होते देखकर उसके शत्रुओं में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये जोश पैदा हो गया। पर नेपोलियन भी कोई कमजोर दिल वाला न था। हिम्मत हार जाने वाला मनुष्य नहीं था। मास्को से पेरिस लौटते ही उसने फिर विशाल सेना का संगठन किया और अपने दुश्मनों से जूझने की तैयारी में लग गया।

उधर नेपोलियन के विरुद्ध यूरोपीय राज्यों (प्रशा आस्ट्रिया, रूस और इंग्लैड) का चौथा गुट सन् 1813 ई० में कायम हो गया।

फ्रांस के विरुद्ध इन सब राष्ट्रों ने मिलकर युद्ध में आ डटने का आह्वान किया। चारों ओर से मित्र राष्ट्रीय सेनाएं फ्रांस की ओर बढ़ने लगीं। लाइपजिंग के निकट, तीन दिन के राष्ट्रों के युद्ध में नेपोलियन की भारी पराजय हुई। 31 मार्च, सन् 1814 ई० को मित्र राष्ट्रों की सेना पेरिस में प्रवेश कर गयी। पराजित नेपोलियन को एल्बा के द्वीप में भेज दिया गया।

पर नेपोलियन बहुत दिनों तक एल्बा में नहीं रहा। 11 मार्च सन् 1815 ई० को वह चुपके से फ्रांस वापस आ गया।

नेपोलियन के फ्रांस पहुँचते ही सारे देश में एक नयी उमंग आ गयी। सेना ने उसका साथ दिया और देखते ही देखते उसके पास एक बहुत बड़ी सेना इकट्ठी हो गयी। अट्ठारहवाँ लुई, फ्रांस की गद्दी को छोड़कर भाग गया। नेपोलियन फिर फ्रांस का सम्राट बन गया।

वियना में एकत्र विजयी राष्ट्र के प्रतिनिधियों ने अपना अधिवेशन स्थागित कर पुनः नेपोलियन के सैनिकों मुकाबला करने को चल पड़े। इस बार 18 जून, सन् 1815 ई० को मित्र राष्ट्रों और नेपोलियन के बीच 'वाटरलू का प्रसिद्ध युद्ध' हुआ। जिसमें नेपोलियन अन्तिम रूप से हार गया। वह 'सैण्ट हैलेना' के द्वीप में निर्वासित कर दिया गया।

पतन के मौलिक कारण

नेपोलियन के पतन के कई मौलिक कारण थे। नेपोलियन के साम्राज्य में निहित परस्पर विरोधी तत्व इस पतन का एक मुख्य कारण थे। फ्रांसीसी सेना के एक विजयी सेनापति के रूप में नेपोलियन ने सत्ता प्राप्त की थी। वह भली भाँति

जानता था कि मात्र सैनिक विजय ही उस स्थान को बरकरार रख सकती है जो उसने देशों को जीतकर प्राप्त किया था।

उसने एक बार कहा था—"मैं सिर्फ अपने देशवासियों की कल्पना को ध्यान में रखकर ही काम करता हूँ। जब यह साधन (युद्ध) मेरा साथ न देगा, तब मैं कुछ भी नहीं रह जाऊँगा और तब कोई दूसरा मेरी जगह ले लेगा।"

यह वाक्य उसके पतन का एकमात्र सूत्र था। यदि फ्रांसीसियों को निरन्तर विजय और यश के प्रकाश की चकाचौंध में नहीं रखा जाता तो क्रान्ति के पुराने आदर्शों के पुनः प्रतिष्ठित होने का भय था।

नेपोलियन यह भी जानता था कि उसकी सत्ता सेना के समर्थन पर आधारित है। उसे सेना को निरन्तर विजय और यश प्रदान करते रहना था। अन्यथा उसका पतन निश्चित था।

निरन्तर सफलताएं

सफलता और सफलता के सिवा कुछ नहीं, नेपोलियन के अस्तित्व की कीमत थी। लेकिन यह एक ऐसी कीमत थी जिसे नेपोलियन की प्रतिभा भी अदा नहीं कर सकती थी। स्वयं नेपोलियन में ही उसके विनाश के बीज निहित थे।

विजित प्रदेशों में राष्ट्रवाद की भावना का विकास, नेपोलियन के पतन का एक दूसरा कारण था। यह भावना सीधे फ्रांसीसी आधिपत्य की उपज थी। इतर देशों में नेपोलियन का शासन विदेशी था।

राष्ट्रवाद की भावना से प्रभावित होकर यूरोपीय देशों के लिये विदेशी शासन का विरोध करना उचित था। नेपोलियन ने न केवल दूसरे राज्यों को जीता ही तथा वह अपना वंश निर्माण भी कर रहा था। इंलैण्ड, स्पेन, इटली आदि देशों में उसके सगे सम्बन्धी शासन कर रहे थे।

नेपोलियन द्वारा की गयी यह एक गम्भीर गलती थी। पुराना पारिवारिक वंशवाद तथा आधुनिक राष्ट्रवाद एक साथ नहीं चल सकते थे। क्रान्तिकारी विचारधारा ने आत्मनिर्णय के अधिकार को जन्म दिया था। नेपोलियन इसी आकांशा का गला घोटना चाहता था।

नेपोलियन का यह विचार कि सारे यूरोप में एक समान शासन-व्यवस्था तथा एक सी विदेश नीति हो, अधीनस्थ राज्यों को मान्य न था। नेपोलियन की इस अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था का प्रतिरोध होना ही था।

नेपोलियन के साम्राज्य की स्थापना जिन तरीकों से की गयी थी, वह भी उसके विघटन का एक कारण था। प्रथम कॉन्सल के रूप में उसने अपने को सुधार और निर्माण कार्य में लगाया था। लेकिन साम्राज्य कायम होने पर एक ही सिलसिला रहा—सैनिक विजयों के उपरान्त यूरोपीय सम्राटों से उनके प्रदेश

छीनना तथा वंशानुगत हितों की उपेक्षा करना।

आखिर कब तक यूरोप के राज्य इस प्रक्रिया को स्वीकार करते रहते?

नेपोलियन की इस नीति ने यूरोप की बड़ी शक्तियों को एकजुट होकर उसे विनष्ट करने का प्रयास करने पर बाध्य किया। यह नेपोलियन का भय ही था जिसने यूरोप की विभिन्न सरकारों को इतने तगड़े गठबन्धन में बंधने पर विनाश कर दिया था।



अपने विरोध के समय नेपोलियन में खुद को युद्ध करने वाला देवता कहा

एक ओर पराजय, क्षेत्रीय क्षति तथा राजनीतिक अपमान ने यूरोप की सरकारों को एक संगठन कायम करने पर वाध्य किया था तो दूसरी ओर फ्रांसीसियों द्वारा महादेश के आर्थिक शोषण की नीति ने नेपोलियन के शासन के विरुद्ध जन साधारण में अपार आक्रोश को जन्म दिया था।

इससे भी अधिक चकित करने वाली वात यह थी कि फ्रांसीसियों ने लोक-प्रभुसत्ता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था और अत्याचारों से मुक्ति दिलाना उसका घोषित लक्ष्य था। लेकिन, नेपोलियन द्वारा जिस तरह चारों ओर तानाशाही कायम की जा रही थी वह इस बात को सिद्ध करने के लिये पर्याप्त थी कि सिद्धान्त और व्यवहार में जमीन आसमान का अन्तर है।

फ्रांस की रक्षा करने तथा सम्पूर्ण यूरोप के व्यापार को नष्ट-भ्रष्ट कर इंग्लैण्ड से लड़ाई लड़ने की नीयत से उठाई गयी उसकी आर्थिक नीति के फलस्वरूप यूरोप में चीजों की कीमतें बढ़ गयीं, घोर अभाव और भुखमरी की नौबत आ गयी। इन सबने मिलकर विजित क्षेत्रों में एक तीव्र जन-आक्रोश को जन्म दिया। फ्रांस के विरुद्ध एक शक्तिशाली मोर्चा खड़ा कर दिया। यह मोर्चा नेपोलियन को परास्त कर देने के लिये पर्याप्त था।

❑



नेपोलियन के अंतिम दिन

नेपोलियन ने सत्ता त्याग दी थी। पर उसकी इच्छा थी कि उसके पुत्र को फ्रांस का उत्तराधिकारी घोषित किया जाये।

पर मित्र-राष्ट्रों ने उसकी इच्छा को मानने से स्पष्ट रूप से इंकार कर दिया था। उसके लिये तय किया गया कि उसे फ्रांस को त्यागना होगा।

फ्रांस से नेपोलियन को इटली के एक गाँव एल्बा में भेज दिया गया। जहाँ उसकी आय के साधन के रूप 20 लाख फ्रैंक की वार्षिक पेंशन बांध दी गई। साथ ही नेपोलियन को अपनी सुरक्षा के लिये चार सौ सैनिकों को साथ रखने की अनुमति दी गई।

जब नेपोलियन के शत्रु टैलीरेण्ड को नेपोलियन का एल्बा प्रस्थान का पता चला तो वह विचलित हो उठा। उसने मित्र राष्ट्रों को चेतावनी देते हुए कहा–

"नेपोलियन एक खतरनाक शेर है। इस जख्मी शेर को फ्रांस के आसपास रखना खतरे से खाली नहीं होगा।"

टैलीरेण्ड चाहता था कि बोनापार्ट को सैन्टहैलेना जैसे स्थान पर रखा जाये। जिसे मित्र-राष्ट्रों ने मानने से इंकार कर दिया। उन्होंने कहा–

"यूरोप में शांति की स्थापना के लिये नेपोलियन बाधा स्वरूप है उसने पूरी तरह सत्यनिष्ठ होकर शपथ ली है कि वह खुद अपने व अपने वारिसों के लिये फ्रांस व इटली का सिंहासन त्याग रहा है। फ्रांस के हितों के लिये वह अपनी जान भी देने के लिए तैयार है।"

नेपोलियन नहीं चाहता था कि वह किसी इकरारनामे पर हस्ताक्षर करे; मगर परिस्थितियाँ उसके पक्ष में नहीं थीं। उस पर भयंकर दबाव था जिस कारण उसे हस्ताक्षर के लिये बाध्य होना पड़ा।

इस बीच मित्र-राष्ट्र की सरकार ने ट्विलरीज में एक गोपनीय एजेण्ट भेजकर राजकीय कोष को जब्त करने का आदेश दे दिया। खजाने में रखा तमाम सोना व अमूल्य धरोहर जिसका मूल्य डेढ़ करोड फ्रैंक से भी अधिक था; जब्त कर लिया गया। यहां यह कहना अधिक उचित होगा कि उस धन को चुरा लिया गया।

यह नेपोलियन की निजी सम्पन्ति थी। जिसे चुरा कर नेपोलियन को कंगाल बना दिया गया। कल तक जो व्यक्ति फ्रांस का ही नहीं बल्कि पूरे यूरोप का

सबसे धनी व्यक्ति था, आज वह बिल्कुल फटे हाल स्थिति में था।

फ्रांस की जनता और उसके सैनिक नेपोलियन को बहुत चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि नेपोलियन के पुत्र को फ्रांस के उत्तराधिकारी के रूप में स्वीकार कर लिया जाये। किन्तु विजेता मित्र-राष्ट्रों ने जनता या सेना की एक न चलने दी।

नेपोलियन के एल्बा कूच के समय महल के बाहर फ्रांस की जनता तथा सैनिक एकजुट हो गये थे। नेपोलियन सीढ़ियाँ उतरता हुआ भीड़ के सामने आया और उसे देखकर बोला—

"बाईस वर्ष पहले जब मैं कप्तान था, तब मैंने टाउलिन पर इन जवानों के साथ मिलकर विजय अभियान आरम्भ किया था। इन्हीं जवानों के बल पर मैंने काहिरा से लेकर मास्को तक आठ युद्ध जीते।"

भीड़ के पास जाते हुए अधिक उत्साहित हो गया और कहने लगा—

"मेरे प्रिय अंगरक्षकों तथा सैनिकों! मैं आप सब लोगों को धन्यवाद देता हूँ कि आपने मेरा साथ दिया। अब मेरा विदाई का समय आ गया है। मैंने बाईस वर्षों से सदा सम्मान व यश के मार्ग पर खुद को अविचल भाव से खड़े देखा है। पुराने उत्साह व सुविधाओं से भरे दिनों की तरह, तुमने विगत कुछ हफ्तों में दुःखद घड़ी में भी बहादुरी व निष्ठा से मेरा साथ दिया है। अब गृह युद्ध छिड़ने की नौबत आ गई थी इसी वजह से मैंने देश हित के लिये अपने सभी हितों का परित्याग कर दिया है। अब मैं फ्रांस से भी दूर जा रहा हूँ। मेरे मित्रों! पूरी निष्ठा भाव से फ्रांस की सेवा करना। क्योंकि इसकी खुशहाली के लिये ही मैंने इतना बड़ा त्याग किया है। मेरे भाग्य पर दुःख प्रकट मत करना। यदि मैंने जीवित रहने का संकल्प लिया है तो यह आपका यश बढ़ाने के लिये ही लिया है।"

इतना कहकर नेपोलियन ने कुछ क्षणों तक शांत खड़ी भीड़ को देखा फिर आगे बोला—

"मेरे विचार से अकाल मृत्यु कायरता है। साथ ही अपयश भरी जिन्दगी जीना भी कायरता है। अपने भाग्य के साथ जुआ खेलने वाले लोगों की तरह अपनी जिम्मेदारियों से बचने के लिये मृत्यु का आह्वान करना मूर्खता है। आत्महत्या मेरे सिद्धान्तों तथा विश्व में अर्जित की गई प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं है। हम लोगों ने एक साथ मिलकर जो महान कार्य किया है मैं उनकी गाथा लिखूँगा। मेरी सन्तानों अलविदा! मैं जाने से पहले तुम्हारे चरणों को चूमना चाहता हूँ। तुम्हें गले लगाना चाहता हूँ।"

उसके बाद नेपोलियन ने उनके चरणों को चूमा। उनसे गले मिला। तत्पश्चात् उसने फ्रांस के झण्डे को चूमा और गाड़ी में जा बैठा।

"सम्राट अमर रहें!"

भीड़ से एक शोर उभरा। नेपोलियन की गाड़ी चल पड़ी। उसने जाते समय गाड़ी से हाथ बाहर निकाल भीड़ का अभिवादन किया और बोला--"अलविदा साथियों!"

उसको जाता देखकर बहादुर सैनिक बच्चों के समान विलाप करने लगे। उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे उनका पिता या संरक्षण उनसे छिन रहा हो।

एल्बा की ओर कूच करते समय नेपोलियन ने गाड़ी को एक सुनसान सड़क पर रुकवाया तथा घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ा। वह एल्बा तक का सफर घोड़े की पीठ पर सवार होकर करना चाहता था। उसके सेवक उसके पीछे चल पड़े।

हितैषी और प्रशंसकों के साथ-साथ नेपोलियन की फ्रांस में विरोधियों की भी कभी नहीं थी। उनमें से कुछ ऐसे भी थे जो नेपोलियन से सख्त घृणा करते थे। वे पत्थरों से मार-मार कर उसकी हत्या कर देने के इच्छुक थे।

ऐसी स्थिति में नेपोलियन को अपना वेश बदलना पड़ा। उसके बाद ही उसने एल्बा की ओर कूच किया।

नेपोलियन को अपमान से बहुत डर लगता था। वह अपने समय का एक महान योद्धा और कुशल शासक था। अब तक वह जिस आन-बान और शान के साथ जीवन व्यतीत करता आया था। वह उसी ठाठ और सम्मान के साथ मरना चाहता था।

यह वही नेपोलियन था जिसने कभी अपनी वीरता और साहस का परिचय देते हुए पूरे यूरोप में अपने नाम का डंका बजवा दिया था। वही शूरवीर अपने विरोधियों से अपमानित नहीं होना चाहता था।

फ्रांस का यह शेर बूढ़ा हो गया था मगर उसकी वीरता और साहस पर प्रौढ़ता का आवरण नहीं चढ़ा था। नेपोलियन की हार्दिक इच्छा थी कि वह देशभक्ति और वीरता की ऐसी मिसाल कायम करे जिसके बारे में पढ़कर आने वाली पीढ़ियाँ उस पर गर्व कर सकें।

फ्रांस छोड़कर एल्बा जाते समय नेपोलियन काफी हद तक टूट चुका था। उसके भीतर एक भावना किसी शोले के समान भड़क रही थी—

"मैं एल्बा में अपना समय, फ्रांस की महानता तथा वीरता का शानदार इतिहास लिखने मे बिताऊंगा। किन्तु—यदि फ्रांस पर अपनी जीत का दावा करने वाले देशों ने स्वार्थवश फ्रांस को किसी प्रकार की हानि पहुँचाई और उसकी पवित्र परम्पराओं को कलंकित करने का दुस्साहस किया तो मैं फिर से हथियार उठा लूँगा और उन्हें उसके किये की भारी सजा दूँगा।"

फिर नेपोलियन ने जो कहा था वह कर भी दिखाया। पहले उसने एल्बा में

खुद को सुरक्षित किया। फिर उससे संतुष्ट होकर उसने फ्रांस को कब्जे में लेने का संकल्प किया।

उसने फ्रांस जाने की योजना को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करना आरम्भ किया। उसने अपने कोषाध्यक्ष को बुलाया और कहा—

"तुम्हारे पास सोने के जितने भी सिक्के हों, उन्हें दो पेटियों के तलों में बिछा दो और ऊपर से मेरी किताबें रखकर बंद कर दो। मेरा सेवक तुम्हें पेटियाँ दे जायेगा। नये सेवकों को उनका बोरिया-बिस्तर देकर तथा उनका हिसाब करके यहाँ से रवाना कर दो। सावधान! प्रत्येक काम बड़ी सतर्कता से होना चाहिये।"

उसके बाद नेपोलियन जनरल ड्राउट के पास गया। दोनों को एक दूसरे की बातें समझने और बोलने की जरूरत नहीं पड़ी। आंखों ही आंखों में बात हो गई। उसके बाद नेपोलियन अपनी माँ के पास बागीचे में गया और राज़दाराना स्वर में बोला— "माँ! मैं कल जा रहा हूँ।"

माँ ने चौंककर उसे देखा और कहा—"कहाँ?"

"माँ मैं पेरिस जा रहा हूँ।" नेपोलियन ने बताया।

"मगर इस की खबर किसी को नहीं होनी चाहिए। शायद ईश्वर की यही इच्छा थी।" उसकी माँ भरे गले से बोली—"कदाचित वह भी यही चाहता है कि तुम एक महान योद्धा के समान मृत्यु का वरण करो। मदर मैरी तुम्हारी रक्षा करें।"

कहते हुए लितिजिया ने स्नेह भरा हाथ नेपोलियन के सिर पर रख दिया।

नेपोलियन के मन में तरह-तरह के विचार आ रहे थे। उसने माँ से कहा—

"मैं नहीं जानता कि मैं जो कुछ कदम उठा रहा हूँ उसमें मेरे साथ अच्छा होगा या बुरा। मैंने हर परिस्थिति के लिये स्वयं को तैयार कर लिया है यहाँ तक कि मैं मरने के लिये भी तैयार हूँ, सोचना यह है कि क्या मैं यूरोप का सम्राट बन पाऊँगा या नहीं। यूरोप के बारे में सोचना सही नहीं है। यूरोप को जीतने के लिये मैं किसी भी तरह दस लाख फ्रांसीसी सेना का प्रबन्ध नहीं कर सकता हूँ। फिर विदेश राज्य भी मेरी योजना से सहमत नहीं होंगे। मुझे केवल फ्रांस के उद्धार के बारे में ही सोचना चाहिए। अब तानाशाही का समय भी समाप्त हो चुका है। मुझे एक नया संविधान बनाकर चैम्बर के माध्यम से फ्रांस की बागडोर सम्भालनी होगी।"

नेपोलियन उस समय पैंतालीस वर्ष को पार कर चुका था। उसके पास भविष्य से ज्यादा अतीत का अनुभव था। उसके पास पूरे यूरोप में तहलका मचा देने लायक अब फुर्ती नहीं थी और ना ही साहस था। हाँ एक महान योद्धा के गुण उसमें तब भी विद्यमान थे।

अपने वफादार जनरल ड्राउट की सहायता से एक पोत पर कब्जा कर लिया।

उस समय उसके पास सात सौ सैनिकों की एक छोटी सी फौज थी। अपनी इस सेना के साथ नेपोलियन ने एल्बा से कूच किया।

यह सब उसने इतने गुप्त तरीके से किया था कि फ्रांस के वर्तमान शासक बोर्बोन को उसकी गतिविधि की भनक भी नहीं लगी।

लगभग बीस दिन तक दिन-रात यात्रा करने के पश्चात नेपोलियन अपने सेना के साथ ग्रेनोबल पहुँचा। वहाँ लम्यूर के निकट राजकीय सेना तैनात थी। जिसे आदेश मिला हुआ था कि नेपोलियन और उसके दस्ते को देखते ही खत्म कर दिया जाए।

जैसे ही फ्रांस के सैनिकों ने पोत से उतरते छोटे से काफिले को देखा, वह सतर्क हो गये और आक्रामण रूप से उस काफिले की ओर बढ़ने लगे।

पोत के उतरते ही नेपोलियन अपने साथ लाये घोड़े पर सवार हो गया। समय की गम्भीरता को समझकर वह घोड़े से उतरा और तेज-तेज कदम बढ़ाता हुआ राजकीय सेना के पास पहुँचा। चिल्ला कर बोला–

"पांचवी सेना के सिपहियों! क्या तुम मुझे पहचानते नहीं हो? पहचानों मैं कौन हूँ? यदि तुममें से कोई अपने सम्राट की जान लेना चाहता है तो वह आगे बढ़े और मुझे मार डाले। मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ।"

यह कहते हुए नेपोलियन ने अपने शरीर से स्लेटी रंग के लबादे को उतार फेंका। राजकीय सेना विस्मित दृष्टि से उसे देखने लगी।

तभी एक सैनिक बोला–"यह हमारे जनरल हैं, ये सब हमारे भाई हैं।"

इतना सुनते ही सभी सैनिक उत्साह से भर कर नारे लगा उठे–"सम्राट की जय हो!"

अपनी सेना के बदलते तेवरों को देखकर जनरल भी नेपोलियन के स्वागत के लिये दौड़ पड़ा। इस प्रकार एक ही घंटे में नेपोलियन के पास दो हजार सैनिक हो गये।

तत्पश्चात् नेपोलियन अपनी सेना के साथ ग्रेनोबल जा पहुँचा। वहाँ उसका जोरदार स्वागत हुआ। जनता अपने पूर्व सम्राट को देखते ही जय-जयकार करने लगी। वह अब भी अपने पूर्व शासक से पहले की भान्ति बहुत प्रेम करती थी। यह देखकर नेपोलियन बहुत उत्साहित हुआ और उसने फ्रांस की जनता के सामने अपना ओजस्वी भाषण दिया। जिससे सारी जनता ही नहीं बल्कि सेना भी उसकी जय-जयकार करने लगी।

नेपोलियन ने अपने सहयोगी जनरलों से पेरिस की युद्ध परिषद की जानकारी ली और फिर योजना बनाने में जुट गया।

नेपोलियन सेना के साथ पेरिस की तरफ रवाना हुआ। वह चकित रह गया। पेरिस की तरफ उसके कदमों के बढ़ने के साथ ही सैनिकों का समूह उसके साथ

जुड़ता चला गया।

नेपोलियन ने जनसमूह का समर्थन प्राप्त करने के लिये जगह-जगह भाषण दिये। जो शान्तिपूर्ण ढंग से सुने गये।

नेपोलियन अपनी सेना के साथ पेरिस जा पहुँचा। जैसे ही उसके आगमन की सूचना बोर्बोन तक पहुँची, वह भयभीत हो उठा। नेपोलियन के पक्ष में जनसमर्थन का पता चलते ही उसके छक्के छूट गये।

नेपोलियन की सेना को देखकर शाहीरक्षक सेना का दल भाग गया। बोर्बोना भी वहाँ से भाग निकला।

राजधानी में प्रवेश करते ही जब नेपोलियन को बोर्बोन के पलायन का पता चला तो उसने उसे पकड़ने के लिये सैनिक दौड़ा दिये।

शीघ्र ही शाही खजाने के साथ ही बोर्बोन को पकड़ लिया गया। वह अपने साथ साठ गाड़ी चांदी व तोंपे ले जा रहा था। नेपोलियन ने उससे सारी धन सम्पति छीन ली और उसे बंदरगाह से बाहर भगा दिया।

तेरह महीने के निर्वासन के बाद नेपोलियन ने एक भी गोली चलाये बिना पेरिस के महल में प्रवेश किया तो उसके सैनिक पूरे पेरिस में फैल गये। इस दृश्य को देखकर नगर में रह रहे अप्रवासी नागरिक भाग खड़े हुए।

इधर नेपोलियन की वापसी को लेकर उसका श्वसुर, हैब्सबर्ग का शासक फ्रांसिस उलझन का शिकार हो गया। उसने मैरी लुई से बात की वह उसके साथ नहीं रहना चाहती थी।

दूसरी ओर, विदेशी शक्तियों ने नेपोलियन पर मुकदमा चलाने की घोषणा कर दी। मगर उनकी घोषणा से नेपोलियन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसे चिंता थी तो सिर्फ अपनी पत्नी और पुत्र की। वह आस्ट्रिया व अपने बीच खड़ी दीवार को गिरा देना चाहता था।

उसने मैरी को पत्र लिखा –

मैंने पुनः फ्रांस की सत्ता को संभाल लिया है। फ्रांस का शासक बोर्बोन इंग्लैण्ड भाग गया है। मेरी इच्छा है कि तुम मेरे पुत्र सहित अप्रैल माह में यहाँ आ जाओ।

उसने फ्रांसिस को भी पत्र लिखा– विधाता ने मुझे अपने राज्य का शासक बना कर वापस बुला लिया है। मेरी यह अभिष्ट अभिलाषा है कि मैं अपनी पत्नी व पुत्र को अपने साथ रखूँ।"

मैरी ने नेपोलियन की अन्तिम हार के बाद उसे त्याग दिया था। वह अपने पुत्र के साथ अपने पिता के घर रह रही थी। उसने उस राज्य को भी त्याग दिया था जिसकी संरक्षिका बनी रहने की उसने शपथ ली थी।

नेपोलियन का साथ छोड़कर वह एक अन्य व्यक्ति की अंकशायिनी बन गयी

थी। यह बात नेपोलियन भी जानता था किन्तु स्पष्ट सम्बन्ध विच्छेद करने वाले तथा निराशाजनक सभी पक्षों को अनदेखा कर वह नवजीवन आरम्भ करना चाहता था।

किन्तु यह सम्भव नहीं हो सका।

एक वर्ष के निर्वासन ने उसे काफी हद तक बदल दिया था। जीवन का महत्व उसकी समझ में आ गया था। इसी कारण दूसरी बार शासन सत्ता सम्भालने के दौरान वह अपना शेष जीवन प्रिय पति, प्रिय पिता और प्रिय राजा के रूप में बिताना चाहता था। लेकिन उसकी कोई भी चाहत पूरी नहीं हो सकी।

प्रिय पति और प्रिय पिता बनने का मौका उसे मैरी ने नहीं दिया और प्रिय राजा होने पर भी उसे विदेशी ताकतों ने फ्रांस के सिंहासन पर बैठने नहीं दिया।

नेपोलियनं ने कुछ विश्वास-पात्र लोगों को उनके पूर्व पदों पर बने रहने दिया वह अपने विश्वस्त एवं विरोधियों से भी परिचित था।

नेपोलियन ने जनरल रैप को बुलवाया। यह वही था जिसने उसके निर्वासन से पूर्व उसके आदेशों को मानने से स्पष्ट इंकार कर दिया था। अर्थात् वह गद्दार था।

नेपोलियन के तलब करने पर वह घबरा उठा। सकुचाते हुए उसके सामने पहुँचा तब नेपोलियन ने कहा—

"तुमने हमें बहुत इंतजार कराया। क्या तुम वास्तव में मेरे विरोधी दल के सदस्य हो?"

"श्रीमान! मैं विवश था.... मेरा पद तथा कर्तव्य मुझे आपका आदेश मानने से रोक रहा था।" उसने उत्तर दिया।

"तुम नीच ही नहीं कमीने और गद्दार भी हो! क्या तुम्हें तुम्हारे अपने जर्मन लोगों ने धिक्करा नहीं?"

"आप तो जानते ही हैं श्रीमान कि तब स्थिति कितनी खतरनाक थी। आपने गद्दी छोड़, फ्रांस त्याग दिया था तथा हमें फ्रांस के भावी शासक के प्रति वफादार बने रहने को कहा गया था।" रैप ने सफाई देनी चाही।

"क्या तब मैं शासक नहीं था? क्या मेरी आज्ञा पालन करना तुम्हारा कर्तव्य नहीं था? क्या उन्होंने तुम्हें फुसलाया था या तुम्हें दरवाजे से बाहर फेंक दिया था? मेरे ऊपर कायरता व स्वार्थपरता के आरोप लगे। क्या युद्ध क्षेत्र में मैं कायर हूँ?"

एकाएक नेपोलियन ने अपनी भाषा शैली में आश्चर्यजनक परिवर्तन किया तथा उसे अपने पक्ष में करने के लिये कहा—

"हमें एक बार फिर फ्रांस की सेना एकजुट करनी है। किसके कर्तव्य पालन

से अब हमें मृत्यु ही मुक्ति देगी।"

इतना कहकर नेपोलियन ने उसे गले से लगा लिया। उसकी मूछों को स्नेह से खींचते हुए कहा—

"मिस्र और आस्टरलित्ज के बहादुर, क्या तुम मुझे छोड़ देना चाहते थे? परशिया व रूस के साथ तुम मेरी सन्धि वार्ता के समय सदन की सेना का संचालन करोगे। आज से तुम मेरे सहायक हो।"

"जैसी अपकी आज्ञा श्रीमान!"

रैप अत्यन्त बहादुर था। ग्रैण्डआर्मी में केवल वही एक ऐसा अधिकारी था जो अनेक बार घायल हुआ था। नेपोलियन का आदेश मिलते ही उसने सेनानायक व सहायक का पद तुरन्त स्वीकार कर लिया।

इसी प्रकार नेपोलियन ने अपने तमाम जनरलों को एक-एक करके बुलाया और फटकारा, जिन्होंने बुरे समय में उसका साथ छोड़ दिया था। वे सभी नेपोलियन की कृपा से अपने पदों पर बने रहे। इन में जनरल बर्गर्दयर, जनरल मार्योण्ड और जनरल आगरू अग्रणीय थे। फाउश, बैंजामिन, कौस्टेंट तथा टेलीरेण्ड ये सभी नेपोलियन के आस्तीन के सांप थे। उन्होंने नेपोलियन को डसने का मौका कभी हाथ से नहीं जाने दिया।

फिर भी नेपोलियन ने कभी झटका देकर उन्हें दूर नहीं किया। यदि वह ऐसा कर देता तो कदाचित फ्रांस का शासन उसके हाथ से न जाता।

यद्यपि नेपोलियन उनकी वास्तविकता से अनभिज्ञ नहीं था, वह जानता था कि ये सभी उसके प्रबल विरोधियों से जुड़े हुए हैं, षडयन्त्रकारी हैं। तथापि उसने उन जहरीले सांपों के फन को कुचला नहीं; और न ही उन्हें निर्वासित किया। जो कि आगे चल कर उसके लिये खतरनाक सिद्ध हुए।

नेपोलियन ने अपनी पत्नी और पुत्र को लौटा लाने का भी हर सम्भव प्रयास किया, मगर उसकी हर चेष्टा और प्रयास बेकार गया।

मैरी के व्यवहार ने उसे बुरी तरह तोड़ दिया था। जिस उत्तराधिकारी को पाने के लिये उसने इतने वर्षों तक प्रतीक्षा की थी; उसका वही वारिस उससे बहुत दूर था।

नेपोलियन की पराजय

नेपोलियन जैसे ही पुनः सत्ता में आया; उसके शत्रु सक्रिय हो उठे। उन्होंने तुरन्त ही नेपोलियन को फ्रांस के शासन पद से उतार फेंकने का निश्चय कर लिया। अपने इस निश्चय को सफल बनाने के लिये वे इंग्लैण्ड-परशिया की ओर, उस बूढ़े शेर का शिकार करने चल पड़े।

परशिया ने निश्चित समय पर फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। नेपोलियन ने तुरन्त अपने जनरल मार्शल 'ने' को आधी सेना के साथ ब्रिटेन के मुकाबले पर उतार दिया।

'ने' ज्यादा देर तक अंग्रेजों का सामना नहीं कर सका। हालांकि उसने पूरी ईमानदारी और निष्ठा से युद्ध लड़ा था; किन्तु विरोधी पक्ष अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ था।

दूसरी ओर नेपोलियन ने बहादुरी का परिचय देते हुए लिग्नी में विजय प्राप्त कर ली।

तब परशिया और ब्रिटेन ने मिलकर एक बार फिर फ्रांस पर हमला बोल दिया। सेना सैलाब की तरह फ्रांस की ओर बढ़ी। वे उस पर भयंकर वमबारी करने लगे।

फ्रांसीसी सैनिकों में भगदड़ मच गयी। मैदान साफ देख कर विपक्षी सेना आगे बढ़ने लगी।

उसी समय मित्र-राष्ट्रों की तीसरी सेना युद्ध क्षेत्र में आ डटी एक लाख बीस हजार सैनिकों ने एक साथ नेपोलियन की बची खुची सेना पर हमला बोल दिया।

नेपोलियन के पास जो मुठ्ठी भर सैनिक बचे थे वे युद्ध की भेंट चढ़ने लगे। हारकर उसे घुड़सवार तोपचियों के साथ युद्ध के मैदान से भागना पड़ा। उसे फ्रांस का राज्य त्यागकर संयुक्त राज्य में शरण लेने पर विवश होना पड़ा।

फिर अमेरिका जाने की इच्छा से वह एक जलपोत से समुद्री यात्रा पर चल पड़ा।

अन्तिम सफर

3 जुलाई सन् 1815 ई० को नेपोलियन समुद्री यात्रा करता हुआ रॉकफोर्ट सरमेर पहुँचा वहाँ ब्रिटेन के लड़ाकू जहाजों ने उसका रास्ता रोक लिया। तब नेपोलियन को विवश होकर ब्रिटिश कप्तान मेटलेण्ड के समक्ष आत्मसमर्पण करना पड़ा।

नेपोलियन को पूरे दस दिन तक बंदरगाह में लगे जहाज पर नज़रबंद रखा गया। उसे इग्लैण्ड सरकार से ऐसी आशा नहीं थी। किन्तु वह कर भी क्या सकता था। उसने स्वयं को भाग्य और नियति के भरोसे छोड़ दिया।

दस दिन बाद इंग्लैण्ड सरकार ने नेपोलियन को सैन्ट हेलेना भेजने का निर्णय सुनाया। वह जानता था कि सैन्ट हेलेना एक वीरान स्थान है। वहां जहरीले कीट-पतंगों, जंगली जानवरों और दूषित जलवायु वाला अंधकारमय द्वीप है।

इंग्लैण्ड सरकार ने एक डॉक्टर, तीन सहाय, तथा एक सेवक, नेपोलियन के लिये नियुक्त किये।

ब्रिटिश सरकार ने उसे इतना कठोर दण्ड दिया था जिसमें वह न मर सकता था और न जी सकता था। वह पल-पल मौत के करीब पहुँचता जा रहा था।

नेपोलियन को इस बात का पश्चाताप था कि वह युद्धभूमि में क्यों नहीं मरा। बेबसी के उन दिनों में वह अपना इतिहास लिखने में जुट गया।

नेपोलियन को जिगर की बीमारी हो गयी थी, जो समय के साथ बढ़ती चली जा रही थी। ऐसे समय में उसे अपने पुत्र की बहुत याद आयी और वह उसे देखने के लिये अन्तिम समय तक तड़पता रहा।

मरने से पहले उसने अपनी माँ, भाई तथा पुत्र के नाम वसीयत लिखी थी।

उसे सन् 1815 ई० में सैन्ट हेलेना लाया गया था। सन् 1821 में जब उसने अपना जन्मदिन मनाया तो 52 वर्ष का हो चुका था।

नेपोलियन की बीमारी दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही थी। यहाँ तक कि उससे पानी भी नहीं निगला जा रहा था। वह महान् योद्धा मृत्यु की रात में अन्तिम बार बड़बड़या। उसके मुँह से निकलने वाले शब्द इस प्रकार थे...।

"फ्रांस...सेना....सेना....जोसेफिन...।"

अगली सुबह पांच बजे, यूरोप के इस महानायक और फ्रांस के तानाशाह की मृत्यु का समाचार दुनिया के सामने आया। वह पंचतत्व में विलीन हो गया।

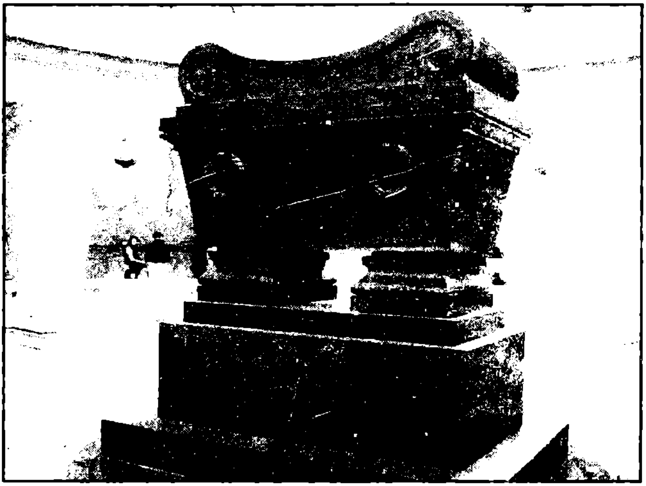
6 वर्षों तक फ्रांस की जनता से दूर रहने के बाद भी उसके मन में देश की



नेपोलियन चिरनिद्रा में

जनता के प्रति इतना गूढ़ प्यार था कि मरने से पूर्व उसने अपनी वसीयत में लिखा था—"मुझे सोम नदी के तट पर, फ्रांस की जनता के बीच दफनाया जाए, जिससे मैं बहुत अधिक प्यार करता हूं।"

उसके निधन के बारे में यह भी कहा जाता है कि उसे विष देकर मारा गया। यह इसलिए कहा जाता है क्योंकि मृत्यु के समय वह केवल 52 वर्ष का था और उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था। पूर्व में दो बार निर्वासन देने के बाद वह फ्रांस लौट-लौट आता था। फ्रांस की जनता उसे देखते ही जय-जयकार करने लगती थी। नेपोलियन फिर सत्ता सम्भाल लेता था। तीसरी बार भी कहीं ऐसा न हो जाए, इस सम्भावना को ध्यान में रखने वाले, उसे ज़हर देकर मारने की बात करते हैं।



नेपोलियन की स्मृति में मकबरा

नेपोलियन की मृत्यु की वास्तविकता कुछ भी रही हो, पर अट्ठारवीं शताब्दी में फ्रांस का नायक था। 21वीं शताब्दी में भी वह फ्रांस की जनता का नायक है।

कल जीवित नेपोलियन के सामने फ्रांस के लोग नमन करते थे आज उसकी प्रतिमा के सामने आकर अपना श्रद्धा सुमन पेश करते हुए उसकी वीरता को नमन करते हैं।

(समाप्त)



24 जून, 1892 ईसवीं को फ्रांस के तानाशाह नेपोलियन बोनापार्ट ने साढ़े तीन लाख की सेना के साथ रूस पर जबरदस्त आक्रमण किया। दोनों देशों ने इससे पांच वर्ष पूर्व अनाक्रमण संधि पर हस्ताक्षर किए थे; किंतु धीरे-धीरे दोनों देशों के संबंध बिगड़ते गये, यहां तक कि नेपोलियन बोनापार्ट ने भारी सेना द्वारा रूस पर आक्रमण कर दिया। फ्रांसीसी सेना मास्को तक पहुँच गयी थी; किंतु रूस की कड़ाके की सर्दी और समय पर रसद न पहुँचने के कारण फ्रांसीसी सेना कठिनाइयों में फंस गयी। जिसके पश्चात नेपोलियन को विवश होकर अपनी सेना को पीछे हटने का आदेश देना पड़ा। इस बीच रूस के तीन लाख सैनिकों ने फ्रांसीसी सेना पर निरंतर आक्रमण किए। जिससे भारी संख्या में फ्रांसीसी सैनिक मारे गये। अंत में नेपोलियन जीवित बच जाने वाले केवल 30 हजार सैनिकों के साथ रुस से भागा और दिसम्बर, सन् 1892 में वह पेरिस पहुँचा। रूस में नेपोलियन की पराजय, बाद की लड़ाइयों में भी फ्रांस की पराजय का कारण बनी। वास्तव में यह पराजय नेपोलियन बोनापार्ट के शासन के पतन का आरंभिक बिन्दु बन गयी थी।



AHW RAVI SERIES
Book Code: S-474
ISBN 81-7789-281-9
9788177892819
₹ 20

रवि पॉकेट बुक्स
ravi
33, हरी नगर, मेरठ शहर